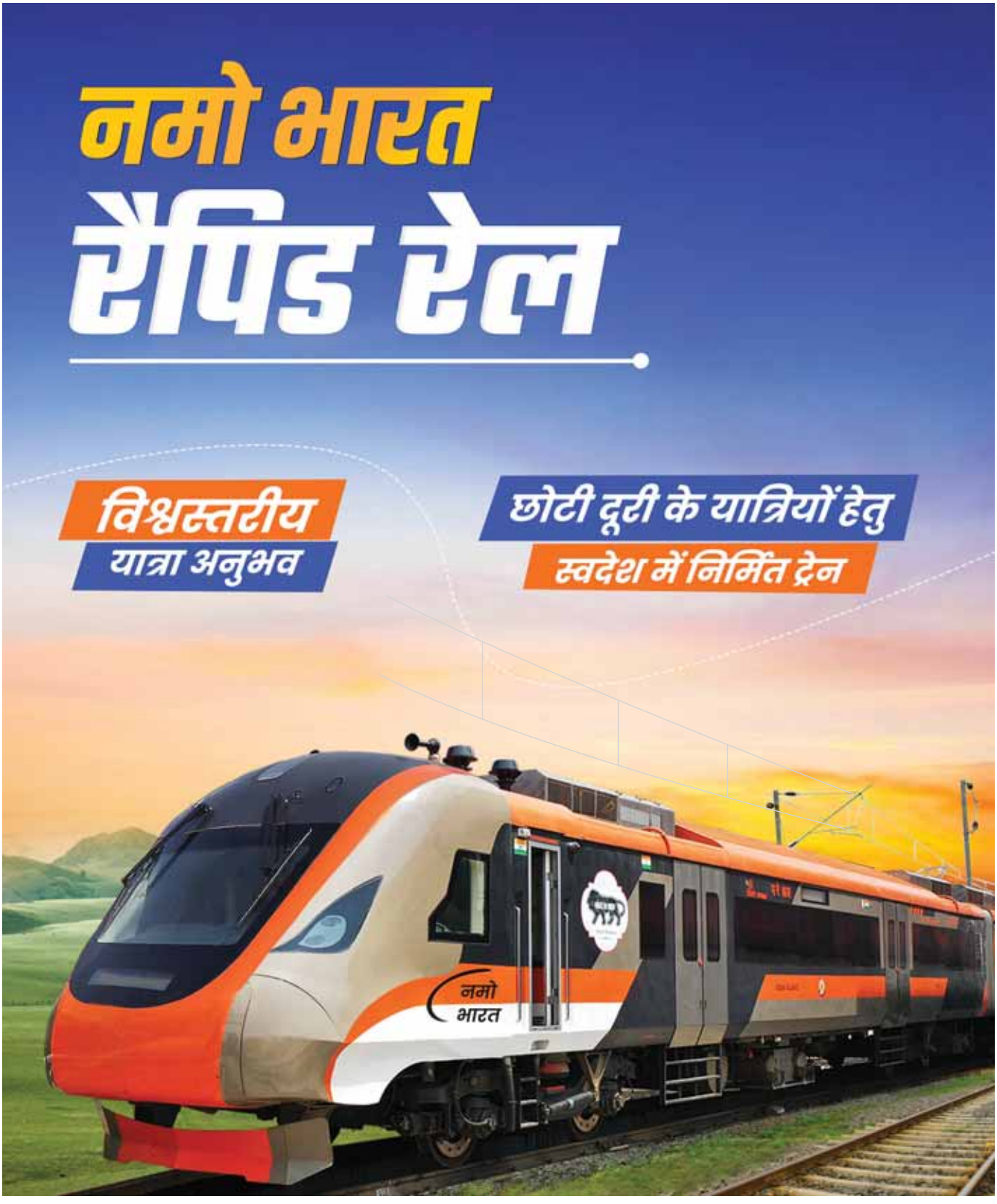
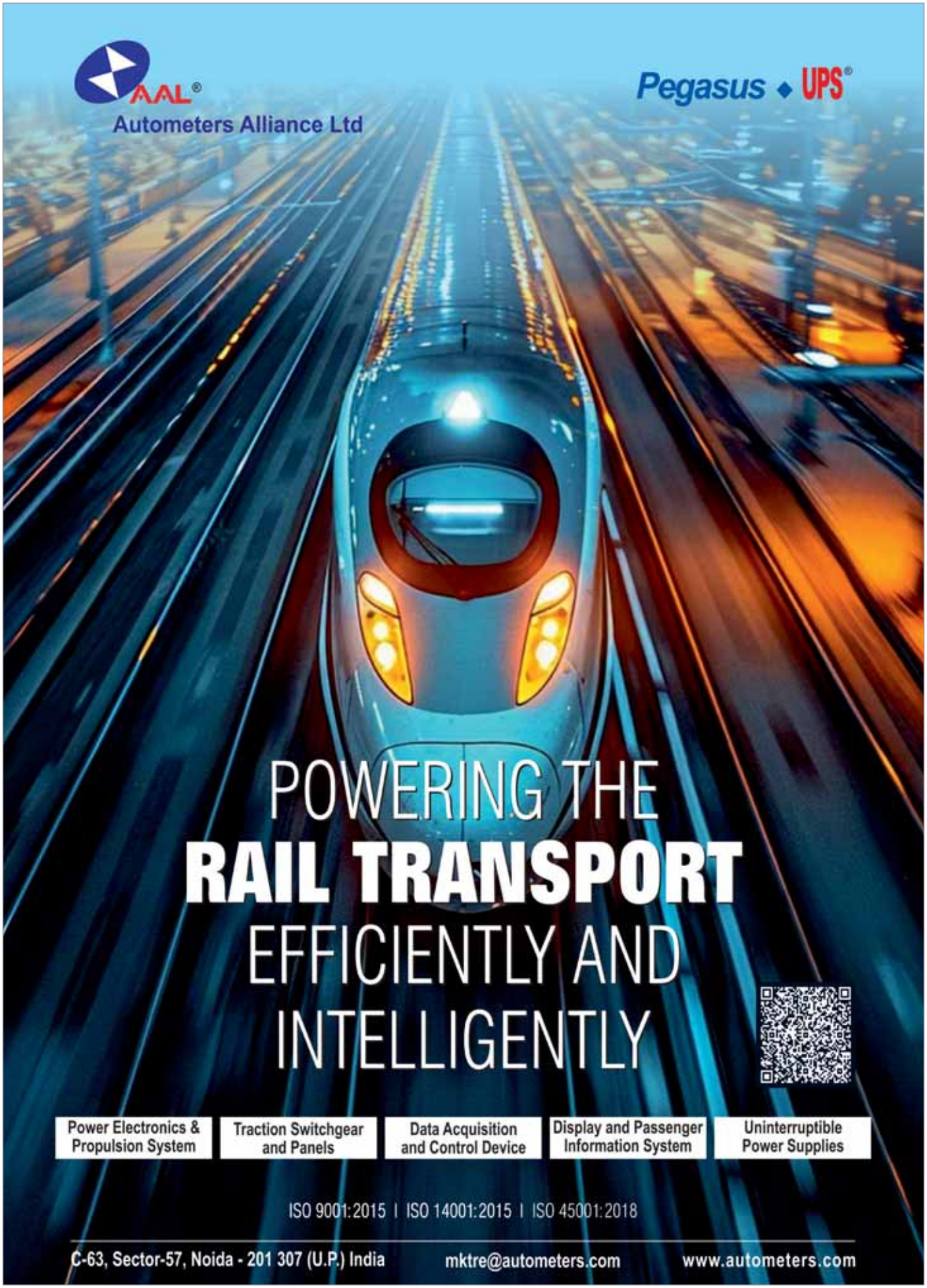
भारतीय रेल

अक्टूबर 2024

मूल्य ₹ 20




AAL®
Autometers Alliance Ltd
Pegasus ◆ UPS®
POWERING THE
RAIL TRANSPORT
EFFICIENTLY AND
INTELLIGENTLY
Power Electronics & Propulsion System
Traction Switchgear and Panels
Data Acquisition and Control Device
Display and Passenger Information System
Uninterruptible Power Supplies
ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018
C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India
mktre@autometers.com
www.autometers.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका

आरंभ: अगस्त-1960 | वर्ष: 65 | अंक: 03 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | अक्टूबर-2024 | मूल्य: ₹20

संपादक मंडल

श्री सतीश कुमार
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

सुश्री रूपा श्रीनिवासन
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

सुश्री अरुणा नायर
सचिव, रेलवे बोर्ड

दिलीप कुमार
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

शिवाजी मारुती सुतार
निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय

संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

ललित कुमार धनकड़
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

आवरण

नमो भारत रैपिड रेल

फॉलो करें

Twitter :
@bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क (ऑफलाइन)

सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200

विदेश में
सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500

एक प्रति-₹20 वार्षिक विशेषांक-₹70

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

5 माननीय प्रधानमंत्री द्वारा झारखंड में ₹660 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और राष्ट्र को समर्पण

7 माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भुज-अहमदाबाद नमो भारत रैपिड रेल और छह नई वंदे भारत ट्रेनों का शुभारंभ

9 माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ओडिशा में ₹2,800 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और राष्ट्र को समर्पण

10 गति शक्ति विश्वविद्यालय में सेना के अधिकारियों को मिलेगा प्रशिक्षण

11 मुंबई और इंदौर के बीच रेल सम्पर्क प्रदान करने वाली नई रेलवे लाइन परियोजना को मंजूरी

13 बहुत जल्द पटरियों पर दौड़ती नजर आएगी वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

14 रेल मंत्री एवं रेल राज्य मंत्री ने बेंगलुरु में रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओं संग वार्तालाप कर उत्साहवर्धन किया

15 रेल मंत्री ने आमान परिवर्तित पीलीभीत-शाहगढ़-मैलानी रेल खंड पर नई ट्रेन सेवा शुरू की

16 रेल मंत्री द्वारा गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन और जयपुर-सवाई माधोपुर रेल खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण

17 रेल मंत्री द्वारा सवाई माधोपुर से इंद्रगढ़ सुमेरगंजमंडी रेल खंड पर कवच 4.0 का निरीक्षण

21 रेल राज्य मंत्री द्वारा रेल व्हील फैक्ट्री का निरीक्षण और बेंगलुरु उपनगरीय रेल परियोजना की समीक्षा

22 जयपुर में आयोजित हुई 57वीं अंतर रेलवे निशानेबाजी प्रतियोगिता

23 ट्रेनों के नए ठहराव व अन्य सुविधाओं का उद्घाटन

24 स्वच्छता ही सेवा - 2024

27 रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा अहमदाबाद व गांधीनगर कैपिटल स्टेशन का निरीक्षण

27 रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 152वीं बैठक सम्पन्न

29 महानिदेशक आरपीएफ द्वारा हॉट स्प्रिंग्स मेमोरियल, लद्दाख में पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि

34 मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना : रेल पटरियों की फ्लैश बट वेल्डिंग कार्य गुजरात में शुरू

36 क्षेत्रीय रेलों एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार

42 खेलों में भारतीय रेल

45 प्रगति रिपोर्ट

54 भारतीय रेल से लें अविस्मरणीय यात्रा अनुभव

57 साइबर सुरक्षा - भारतीय रेल में ट्रैक्शन एससीएडीए सिस्टम का कार्यान्वयन

61 भारतीय रेल में डिजिटल पहचान की आवश्यकता — मनोज कुमार

63 कश्मीर घाटी रेलवे की रोचक जानकारी — विमलेश चंद्र

68 लोक जीवन और शिक्षा — प्रेमपाल शर्मा



संपादकीय

भारतीय रेल का लक्ष्य रेल यात्रियों को अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ सुरक्षित एवं सुखद यात्रा करवाना है। एक तरफ जहाँ सेमी हाई स्पीड वंदे भारत एक्सप्रेस, नमो भारत रैपिड रेल ट्रेन देशवासियों का दिल जीत रही हैं, वहीं दूसरी ओर देश के कई इलाकों में शरारती तत्त्वों द्वारा रेलवे ट्रैक पर सिलेंडर, पत्थर, लोहे के खंभे, सरिया जैसी चीजें रखकर दुर्घटना को अंजाम देने का प्रयास किया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि इन असामाजिक तत्वों का उद्देश्य केवल और केवल जान माल का नुकसान करना है। इन साजिशों को हमारे रेलकर्मी अपनी सतर्कता से नाकाम बना रहे हैं। संबंधित एजेंसियाँ भी ट्रेनों को पलटने के षड्यंत्र की जाँच कर रही हैं।

भारतीय रेल में रोज की लगभग 20 हजार से अधिक ट्रेनों में करीबन 2.3 करोड़ लोग यात्रा करते हैं। पिछले कुछ वर्षों से भारतीय रेल विश्व स्तरीय रेलवे के मानकों से आगे बढ़ रही है। एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं वाले रेलवे स्टेशन बनाए जा रहे हैं। सेमी हाई स्पीड वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन देश के लगभग हर महत्त्वपूर्ण शहरों को जोड़ रही हैं। दिनांक 15 तथा 16 सितम्बर, 2024 को माननीय प्रधानमंत्री ने 11 वंदे भारत ट्रेनें, एक नमो भारत रैपिड रेल तथा 20 कोच की नई दिल्ली-बनारस वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अब तक 130 वंदे भारत ट्रेनें ट्रैक पर दौड़ रही हैं।

सुखद यात्रा के साथ-साथ रेल यात्रियों की सुरक्षा भारतीय रेल की प्राथमिकता रही है। पिछले कुछ वर्षों से अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में उठाए गए विभिन्न संरक्षा उपायों के परिणामस्वरूप दुर्घटनाओं की संख्या में भारी गिरावट आई है। रेल दुर्घटनाएँ वित्त वर्ष 2000-01 में 473 से घटकर वित्त वर्ष 2023-24 में 40 रह गई हैं। ध्यान देने योग्य बात है कि वर्ष 2004-14 की अवधि के दौरान परिणामी ट्रेन दुर्घटनाओं की संख्या 1711 (औसत 171 प्रतिवर्ष) थी, जो वर्ष 2014-24 की अवधि के दौरान घट कर 678 (औसत 68 प्रतिवर्ष) रह गई है।

ट्रेन परिचालन में बेहतर संरक्षा दर्शाने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण सूचकांक दुर्घटना प्रति मिलियन रेलगाड़ी कि.मी. (एपीएमटीकेएम) है, जो वित्त वर्ष 2000-01 में 0.65 से घटकर वित्त वर्ष 2023-24 में 0.03 रह गया है, जो उक्त अवधि के दौरान 95 प्रतिशत से अधिक का सुधार दर्शाता है।

दुर्घटनाओं को रोकने के लिए अत्याधुनिक रेल सुरक्षा प्रणाली 'कवच' सिस्टम काफी कारगर साबित होगा। अब तक, कवच को दक्षिण मध्य रेल के 1455 मार्ग कि.मी. पर और 144 रेल इंजनों में लगाया जा चुका है। लेटेस्ट वर्जन कवच 4.0 को सवाई माधोपुर से कोटा के बीच रेलवे ट्रैक पर लगाया गया है। रेल मंत्री ने स्वयं सवाई माधोपुर से सुमेरगंज मंडी तक ट्रेन के लोको में सफर कर इसका निरीक्षण किया। भारतीय रेल अपने पूरे नेटवर्क में कवच स्थापित करने के लक्ष्य पर कार्य कर रही है।

असामाजिक तत्वों की हरकतें निश्चित तौर पर भारतीय रेल तथा सुरक्षा एजेंसियों के लिए चिंता का विषय हैं। रेल मंत्री ने संकल्प व्यक्त करते हुए कहा है कि रेल परिचालन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरा रेल प्रशासन सतर्क है और तोड़फोड़ की किसी भी संभावित कोशिश को रोकने के लिए राज्यों के साथ मिलकर काम कर रहा है। रेल दुर्घटना कराने की साजिश रचने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। सरकार सुरक्षा खतरों को अत्यंत गंभीरता से ले रही है। जो भी कोई ऐसी दुर्घटना कराने की कोशिश करेगा, उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। यह हमारा संकल्प है।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएं।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा झारखंड में ₹660 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और राष्ट्र को समर्पण

'पूर्वी भारत में रेल संपर्क के विस्तार से पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा' - प्रधानमंत्री



दिनांक 15 सितम्बर, 2024 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से छह वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस मौके पर झारखंड के राज्यपाल श्री संतोष गंगवार और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान टाटानगर में आयोजित समारोह में उपस्थित थे

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 15 सितम्बर, 2024 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए झारखंड के टाटानगर में ₹660 करोड़ से अधिक की विभिन्न रेल परियोजनाओं का शिलान्यास किया और तैयार हो चुकी रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं। इन परियोजनाओं में देवघर जिले में मधुपुर बाईपास लाइन और हजारीबाग जिले में हजारीबाग टाउन कोचिंग डिपो की आधारशिला रखना शामिल है। कार्य पूरा होने के बाद, मधुपुर बाईपास लाइन, हावड़ा-दिल्ली मुख्य लाइन पर ट्रेनों की

माननीय प्रधानमंत्री ने 6 वंदे भारत ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी

टाटानगर – पटना
वंदे भारत एक्सप्रेस

ब्रह्मपुर – टाटानगर
वंदे भारत एक्सप्रेस

भागलपुर – हावड़ा
वंदे भारत एक्सप्रेस

गया – हावड़ा
वंदे भारत एक्सप्रेस

देवघर – वाराणसी
वंदे भारत एक्सप्रेस

राउरकेला – हावड़ा
वंदे भारत एक्सप्रेस

देरी से बचने में मदद करेगी और गिरिडीह और जसीडीह के बीच यात्रा के समय को कम करने में भी सहायक होगी। इसके साथ ही हजारीबाग टाउन कोचिंग डिपो, इस स्टेशन पर कोचिंग स्टॉक के रखरखाव की सुविधा में मदद करेगा।

प्रधानमंत्री ने कुरकुरा–कानारोन दोहरीकरण को भी राष्ट्र को समर्पित किया, जो बंडामुंडा–रांची सिंगल लाइन खंड का और रांची, मुरी और चंद्रपुरा स्टेशनों से होते हुए राउरकेला–गोमो मार्ग का हिस्सा है। यह परियोजना माल और यात्री यातायात की गतिशीलता बढ़ाने में काफी मददगार साबित होगी। इसके अलावा, आम लोगों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए, चार रोड अंडर ब्रिज (आरयूबी) भी राष्ट्र को समर्पित किए गए।

इस अवसर पर 6 नई वंदे भारत ट्रेनों के माध्यम से कनेक्टिविटी पाने वाले अन्य राज्यों को भी बधाई देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हर राज्य और हर शहर, संपर्क व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए वंदे भारत ट्रेन चाहता है। उन्होंने कुछ दिन पहले उत्तर और दक्षिण भारत के राज्यों के लिए तीन नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने के अवसर को याद किया और छह नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने का उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि पूर्वी भारत में रेल कनेक्टिविटी के विस्तार से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और व्यवसायों, पेशेवरों और छात्रों को काफी लाभ होगा। छह नई वंदे भारत ट्रेनों के चलने से सांस्कृतिक गतिविधियों में होने वाली बढ़ोतरी का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और दुनिया से बड़ी संख्या में काशी आने वाले तीर्थयात्रियों को अब वाराणसी–देवघर वंदे भारत ट्रेन के शुरू होने से, देवघर में बाबा बैद्यनाथ के दर्शन करने का भी मौका मिलेगा। इससे क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा



टाटा नगर के आयोजित कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के साथ रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, टाटानगर–पटना वंदे भारत एक्सप्रेस में बच्चों से वार्तालाप करते हुए



मिलेगा और टाटानगर के औद्योगिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

श्री मोदी ने कहा कि, 'तेज गति से विकास के लिए, आधुनिक रेलवे का बुनियादी ढाँचा बेहद जरूरी है।' उन्होंने देवघर जिले में मधुपुर बाईपास लाइन की आधारशिला रखने का उल्लेख किया, जिससे हावड़ा–दिल्ली मेनलाइन पर ट्रेनों की रुकावट से बचने में मदद मिलेगी और गिरिडीह और जसीडीह के बीच यात्रा समय को कम करने में भी सहायता मिलेगी। उन्होंने हजारीबाग जिले में हजारीबाग टाउन कोचिंग डिपो का भी जिक्र किया, जो इस स्टेशन पर कोचिंग स्टॉक के रखरखाव की सुविधा में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि कुरकुरा–कानारोन लाइन के दोहरीकरण से झारखंड में रेल संपर्क को बढ़ावा मिलेगा और इस्पात उद्योगों की कनेक्टिविटी मजबूत होगी।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि केंद्र झारखंड की समग्र प्रगति और विकास सुनिश्चित करने के लिए निवेश बढ़ाने के साथ–साथ विकास कार्यों की गति भी बढ़ा रहा है। इस साल के बजट में, राज्य के रेलवे बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने के लिए झारखंड को ₹7,000 करोड़ से अधिक की मंजूरी दी गई, जो 10 साल पहले आवंटित बजट की तुलना में 16 गुना अधिक है।

उन्होंने लोगों को रेलवे बजट बढ़ाने के फायदों के बारे में भी बताया– चाहे वह नई लाइनों का विकास हो या लाइनों का विद्युतीकरण या लाइनों का दोहरीकरण या स्टेशनों में नए बुनियादी ढाँचे का विकास हो, हर क्षेत्र में काम तेजी से चल रहा है। श्री मोदी ने झारखंड की, उन राज्यों में से एक होने के लिए सराहना की, जहाँ रेलवे लाइनें 100% विद्युतीकृत हैं। 'अमृत भारत रेलवे स्टेशन योजना' के तहत झारखंड में 50 से अधिक रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प किया जा रहा है।■

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भुज-अहमदाबाद नमो भारत रैपिड रेल और छह नई वंदे भारत ट्रेनों का शुभारंभ

गांधीधाम-आदीपुर एवं सामाख्याली-गांधीधाम रेल लाइनों के चौहरीकरण का शिलान्यास

प्रधानमंत्री ने वाराणसी एवं नई दिल्ली के बीच देश की पहली 20 कोच वाली वंदे भारत ट्रेन को दिखाई हरी झंडी



दिनांक 16 सितम्बर, 2024 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से छह वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस अवसर पर राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 16 सितंबर, 2024 को अहमदाबाद से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भुज एवं अहमदाबाद के बीच नमो भारत रैपिड रेल को हरी झंडी दिखाई और गांधीधाम-आदीपुर तथा सामाख्याली-गांधीधाम रेल लाइनों के चौहरीकरण की आधारशिला रखी।

माननीय प्रधानमंत्री ने 6 नई वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया -

1. नागपुर-सिकंदराबाद वंदे भारत एक्सप्रेस (577 कि.मी.)
2. आगरा कैंट-बनारस वंदे भारत एक्सप्रेस (573 कि.मी.)
3. दुर्ग-विशाखापट्टनम वंदे भारत एक्सप्रेस (565 कि.मी.)
4. पुणे-हुब्बल्लि वंदे भारत एक्सप्रेस (557 कि.मी.)
5. कोल्हापुर-पुणे वंदे भारत एक्सप्रेस (326 कि.मी.)

- **वाराणसी एवं नई दिल्ली के बीच देश की पहली 20 कोच वाली वंदे भारत ट्रेन (755 कि.मी.)**

इस अवसर पर आज का दिन गुजरात के लिए खास बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि नमो भारत रैपिड रेल ने अहमदाबाद और भुज के बीच अपना परिचालन शुरू कर दिया है। नमो भारत रैपिड रेल उन मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए बहुत सुविधाजनक होगी, जो हर दिन देश के एक शहर से दूसरे शहर की यात्रा करते हैं और इससे नौकरी, व्यवसाय और शिक्षा से जुड़े लोगों को भी बहुत फायदा होगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले दिनों में नमो भारत रैपिड रेल देश के कई शहरों को जोड़ते हुए कई लोगों को फायदा पहुँचाएगी।

15 से अधिक नई वंदे भारत ट्रेन मार्गों के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, 'इन 100 दिनों में वंदे भारत नेटवर्क का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।' उन्होंने झारखंड से कई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाने का उल्लेख करते हुए कहा कि नागपुर-सिकंदराबाद, कोल्हापुर-पुणे, आगरा कैंट-बनारस, दुर्ग-विशाखापत्तनम और पुणे-हुबली वंदे भारत को हरी झंडी दिखाई जा रही है। उन्होंने दिल्ली-वाराणसी वंदे भारत ट्रेन के बारे में भी बात की, जिसमें अब 20 डिब्बे हैं। उन्होंने बताया कि देश में 125 से अधिक वंदे भारत ट्रेनें हर दिन हजारों लोगों की यात्रा को बेहतर बना रही हैं

नमो भारत रैपिड रेल के उद्घाटन के स्वागत के लिए मार्ग के स्टेशनों यानी भुज, अंजार, गांधीधाम, भचाऊ, सामाख्याली, हलवद, ध्रांगध्रा, विरमगाम, चांदलोडिया, साबरमती और अहमदाबाद स्टेशनों पर स्थानीय समारोह आयोजित किए गए।

गांधीधाम-आदीपुर चौहरीकरण परियोजना (10.69 कि.मी.)

गांधीधाम-आदीपुर चौहरीकरण परियोजना को फरवरी 2023 में मंजूरी दी गई थी और इस पर ₹152 करोड़ की लागत आने का अनुमान है। यह सेक्शन कच्छ जिले को कवर करता है और इसमें 12 बड़े और छोटे पुल होंगे, साथ ही एक आरओबी भी होगा। इस परियोजना के पूरा होने से इस अति व्यस्त सेक्शन की लाइन क्षमता में बढ़ोतरी होगी। इस सेक्शन पर और अधिक ट्रेनें चलाई जा सकेंगी, जिससे कच्छ के लिए कनेक्टिविटी बेहतर होगी। यह परियोजना बंदरगाहों से भी कनेक्टिविटी तथा कच्छ जिले के बंदरगाहों से आयात/निर्यात को बढ़ाएगी। इस क्षेत्र से नमक परिवहन क्षमता भी बढ़ेगी और कच्छ के रण पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा तथा रोजगार के अधिक अवसर सृजित होंगे।

सामाख्याली-गांधीधाम चौहरीकरण परियोजना (53 कि.मी.)

सामाख्याली-गांधीधाम चौहरीकरण परियोजना को अगस्त 2023 में मंजूरी दी गई थी और इसे ₹1,430 करोड़ की लागत से पूरा किए जाने का अनुमान है। इस सेक्शन में 75 बड़े और छोटे पुल और 3 रोड ओवर ब्रिज होंगे।

परियोजना के पूरा होने से अहमदाबाद और पालनपुर के साथ कनेक्टिविटी में सुधार होगा, साथ ही इस अति व्यस्त सेक्शन पर कंजेशन को कम करने में भी मदद मिलेगी। लाइन क्षमता में वृद्धि के साथ, कच्छ के लोगों के लिए ट्रेन कनेक्टिविटी में सुधार होगा। यह परियोजना बंदरगाह कनेक्टिविटी को भी बढ़ाएगी तथा कच्छ क्षेत्र में रोजगार के अवसर और पर्यटन को भी बढ़ावा देगी।

नमो भारत रैपिड रेल

नमो भारत रैपिड रेल आधुनिक यात्रा का अनुभव प्रदान कराती है। स्वदेशी तकनीक से विकसित यह ट्रेन 12 वातानुकूलित कोचों से सुसज्जित है, जिसमें केंद्रीय रूप से नियंत्रित स्वचालित स्लाइडिंग दरवाजे, मॉड्यूलर इंटीरियर, कंटिनुअस एलईडी लाइटिंग, वैक्यूम निकासी के साथ शौचालय, रूट मैप इंडिकेटर, पैनोरमिक विंडो, सीसीटीवी, फोन चार्जिंग सुविधाओं के साथ-साथ और भी अन्य सुविधाएं हैं।

यह ट्रेन उन्नत और बेहतर सुविधाओं से सुसज्जित है, जो इसे 110 KMPH की गति तक चलाने में सक्षम बनाती है। इस ट्रेन में पूरी तरह से सीलबंद फ्लेक्सिबल गैंगवे है जो यात्रियों को गैंगवे के अंदर धूल और पानी के प्रवेश से बचाती है तथा सुरक्षित वातावरण प्रदान करती है। इस ट्रेन में सीटिंग और फ्लोरिंग अग्निरोधी हैं। यह ट्रेन अलार्म सिस्टम के साथ ऑटोमेटिक स्मोक/फायर डिटेक्शन और एरोसोल आधारित अग्निशमन प्रणाली से भी सुसज्जित है।■







माननीय प्रधानमंत्री द्वारा ओडिशा में ₹2,800 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और राष्ट्र को समर्पण



ओडिशा के भुवनेश्वर में विभिन्न रेल परियोजनाओं की आधारशिला एवं राष्ट्र को समर्पित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं ओडिशा के राज्यपाल श्री रघुबर दास और मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण मांझी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 17 सितम्बर, 2024 को ओडिशा के भुवनेश्वर में ₹2,800 करोड़ से अधिक की लागत वाली विभिन्न रेल परियोजनाओं की आधारशिला रखी और उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया।

इस अवसर पर खनिज और प्राकृतिक संपदा से भरपूर ओडिशा के लंबे समुद्र तट का उल्लेख करते हुए श्री मोदी ने कहा कि इन संसाधनों को ओडिशा की ताकत बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, अगले 5 वर्षों में हमें ओडिशा की सड़क और रेल कनेक्टिविटी को नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। उद्घाटन की गई रेल और सड़क से जुड़ी नई परियोजनाओं के बारे में बोलते हुए श्री मोदी ने कहा कि उन्हें लांजीगढ़ रोड–अंबोदला–डोइकालू रेलवे लाइन, लक्ष्मीपुर रोड–सिंगाराम–टिकरी रेलवे लाइन, ढेंकनाल–सदाशिवपुर–हिंडोल रोड रेलवे लाइन को देश को समर्पित करने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने कहा कि जयपुर–नवरंगपुर नई रेलवे लाइन की आधारशिला रखने के साथ ही पारादीप बंदरगाह से संपर्क बढ़ाने के लिए भी काम शुरू किया गया है।

माननीय श्री मोदी ने कहा कि नई बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ ओडिशा के युवाओं के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगी। उन्होंने कहा कि पुरी से कोणार्क रेलवे लाइन और हाई-टेक 'नमो भारत रैपिड रेल' पर भी जल्द ही काम शुरू किया जाएगा और आधुनिक बुनियादी ढाँचा ओडिशा के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलेगा।■

इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को मिला 'चेंज मेकर अवार्ड 2024'



इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ), चेन्नई को हिंदू बिजनेस लाइन द्वारा 'चेंज मेकर अवार्ड 2024' से सम्मानित किया गया है। 13 सितंबर, 2024 को वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने नई दिल्ली में आईसीएफ के महाप्रबंधक श्री यू. सुब्बा राव को पुरस्कार प्रदान किया।

आईसीएफ को वंदे भारत ट्रेनों के निर्माण के लिए पुरस्कार के लिए चुना गया है। वर्ष 1955 में अपना पहला कोच शुरू करने से लेकर वर्ष 2024 में 75000वें कोच को बनाने तक, आईसीएफ ने एक लंबा सफर तय किया है, लगातार नवाचार कर रहा है, हर गुजरते साल में प्रौद्योगिकी का लाभ उठा रहा है और न केवल भारतीय रेल बल्कि निजी क्षेत्रों के लिए अवसर बना रहा है। वर्ष 2018 और 2019 में ट्रेनसेट के पहले 2 रेक बनाने के बाद भी, आईसीएफ ने प्रौद्योगिकी को उन्नत करना जारी रखा और अब वंदे भारत ट्रेनों के कई वेरिएंट ला रहा है जैसे वंदे स्लीपर (पूरी तरह से वातानुकूलित स्लीपर वर्जन रेक), वंदे मेट्रो (छोटी दूरी की अंतर–शहर यात्रा के लिए) आदि।■

गति शक्ति विश्वविद्यालय में सेना के अधिकारियों को मिलेगा प्रशिक्षण

गति शक्ति विश्वविद्यालय और भारतीय सेना व वायु सेना के बीच समझौता



गति शक्ति विश्वविद्यालय के साथ भारतीय सेना और भारतीय वायु सेना के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह में केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और जनरल अनिल चौहान चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी उपस्थित थे

सैन्य कर्मियों को लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन में प्रशिक्षित करने और उनकी क्षमता बढ़ाने के मकसद से दिनांक 9 सितम्बर, 2024 को भारतीय सेना, वायु सेना और रेल मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले गति शक्ति विश्वविद्यालय के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

इस दौरान केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह एवं केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव भी मौजूद रहे। गौरतलब है कि इस समझौते से जहाँ आर्मी और एयर फोर्स को लॉजिस्टिक्स के मामले में विशेषज्ञता हासिल करने में मदद मिलेगी, वहीं लॉजिस्टिक्स ऑपरेशन यानी रसद संचालन के विभिन्न पहलुओं में क्षमता निर्माण करने और प्रभावशाली रसद प्रणाली विकसित करने में भी सहायता मिलेगी। यह समझौता पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान 2021 और राष्ट्रीय रसद नीति 2022 को भी मजबूती देने वाला साबित होगा। इसके अलावा यह समझौता भारत को रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर' बनाने के लक्ष्य को भी पूरा करेगा।

इस अवसर पर रेल मंत्री श्री वैष्णव ने विश्वास व्यक्त किया कि गति शक्ति विश्वविद्यालय अत्याधुनिक लॉजिस्टिक संबंधी शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार के साथ सशस्त्र बलों को सशक्त बनाने की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में काम करेगा। रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा, इस समझौते से रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' के दृष्टिकोण के अनुरूप सशस्त्र बलों की लॉजिस्टिक्स संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर सीडीएस, वायुसेना प्रमुख, सेना प्रमुख, रक्षा सचिव, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और गतिशक्ति विश्वविद्यालय के कुलपति सहित रक्षा मंत्रालय और रेल मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।■

गति शक्ति विश्वविद्यालय और मोनाश विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



गति शक्ति विश्वविद्यालय (जीएसवी) ने दिनांक 17 सितम्बर, 2024 को नई दिल्ली में ऑस्ट्रेलिया के मोनाश विश्वविद्यालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते का उद्देश्य मोनाश रेलवे प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआरटी) के माध्यम से रेलवे इंजीनियरिंग में संयुक्त अनुसंधान, शिक्षा और कार्यकारी प्रशिक्षण में सहयोग की सुविधा प्रदान करना है। समझौता ज्ञापन पर मोनाश विश्वविद्यालय के उप-कुलपति- अंतरराष्ट्रीय और वरिष्ठ उपाध्यक्ष, प्रोफेसर क्रेग जेफरी और गति शक्ति विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मनोज चौधरी के बीच हस्ताक्षर किए गए। वाणिज्यिक मंत्री और ऑस्ट्रेड दक्षिण एशिया की प्रमुख डॉ. मोनिका कैनेडी ने नई दिल्ली में ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग में कार्यक्रम की मेजबानी की।■

मुंबई और इंदौर के बीच रेल सम्पर्क प्रदान करने वाली नई रेलवे लाइन परियोजना को मंजूरी

- **स्वीकृत परियोजना व्यावसायिक केन्द्रों मुम्बई और इंदौर को सबसे छोटे रेल मार्ग से जोड़ने के अलावा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के उन जिलों को जोड़ेगी जो अब तक रेल मार्ग से नहीं जुड़े थे, इनमें महाराष्ट्र के 2 और मध्य प्रदेश के 4 जिले शामिल हैं**
- **परियोजना की कुल लागत ₹18,036 करोड़ है और यह वर्ष 2028-29 तक पूरी हो जाएगी**
- **निर्माण के दौरान परियोजना लगभग 102 लाख मानव-दिवसों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार भी पैदा करेगी**



रेल भवन में मुंबई-इंदौर नई लाइन परियोजना की विस्तृत जानकारी मीडिया से साझा करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने रेल मंत्रालय के तहत लगभग ₹18,036 करोड़ की कुल लागत वाली नई रेलवे लाइन परियोजना को मंजूरी दे दी है। इंदौर और मनमाड के बीच प्रस्तावित नई लाइन सीधा सम्पर्क प्रदान करेगी और गतिशीलता में सुधार करेगी, जिससे भारतीय रेल के लिए बेहतर दक्षता और सेवा विश्वसनीयता सुनिश्चित होगी। यह परियोजना प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की नए भारत की कल्पना के अनुरूप है, जो क्षेत्र में व्यापक विकास के माध्यम से लोगों को 'आत्मनिर्भर' बनाएगी, जिससे उनके लिए रोजगार, स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

यह परियोजना मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के लिए पीएम-गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान का परिणाम है, जो एकीकृत योजना के माध्यम से संभव हुआ है और लोगों, वस्तुओं और सेवाओं की आवाजाही के लिए निर्बाध सम्पर्क प्रदान करेगा।

यह परियोजना 2 राज्यों, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के 6 जिलों को कवर करेगी, जिससे भारतीय रेल के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 309 कि.मी. की वृद्धि होगी।

इस परियोजना के साथ 30 नए स्टेशन बनाए जाएंगे, जिससे आकांक्षी जिले बड़वानी को बेहतर सम्पर्क मिलेगा। नई रेलवे लाइन परियोजना से लगभग 1,000 गाँवों और लगभग 30 लाख आबादी को सम्पर्क मिलेगा। परियोजना देश के पश्चिमी, दक्षिण-पश्चिमी हिस्से को मध्य भारत से जोड़ने वाला छोटा रास्ता उपलब्ध कराकर क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देगी। इससे श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर सहित उज्जैन-इंदौर क्षेत्र के विभिन्न पर्यटन, धार्मिक स्थलों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी।

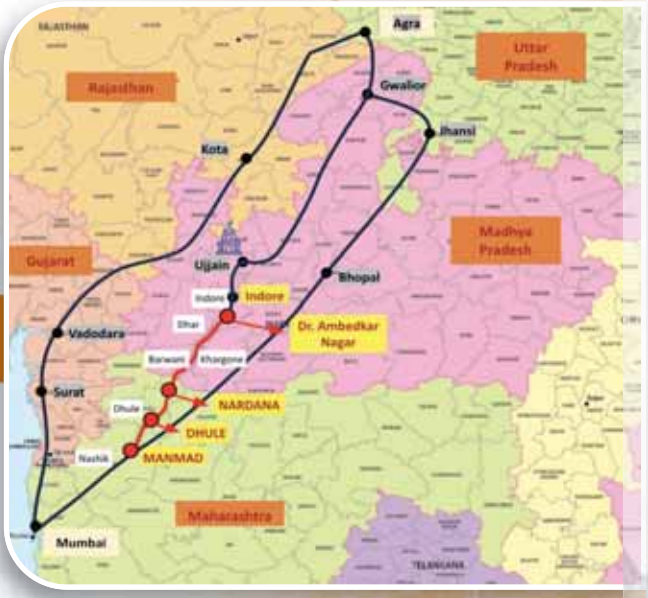
परियोजना से पीथमपुर ऑटो क्लस्टर (90 बड़ी इकाइयां और 700 छोटे और मध्यम उद्योग) को जेएनपीए के गेटवे पोर्ट और अन्य राज्य बंदरगाहों से सीधा सम्पर्क मिलेगा। परियोजना मध्य प्रदेश के बाजरा उत्पादक जिलों और महाराष्ट्र के प्याज उत्पादक जिलों को भी सीधा सम्पर्क प्रदान करेगी, जिससे देश के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में इसके वितरण में सुविधा होगी।

कृषि उत्पादों, उर्वरक, कंटेनर, लौह अयस्क, इस्पात, सीमेंट, पीओएल आदि जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए यह एक आवश्यक मार्ग है। क्षमता वृद्धि कार्य के परिणामस्वरूप लगभग 26 एमटीपीए (मिलियन टन प्रति वर्ष) की अतिरिक्त माल ढुलाई होगी। रेलवे पर्यावरण अनुकूल और ऊर्जा कुशल परिवहन का साधन है, जो जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने और देश की रसद लागत को कम करने, तेल आयात (18 करोड़ लीटर) को कम करने और कार्बनडाइक्साइड उत्सर्जन (138 करोड़ किलोग्राम) को कम करने में मदद करेगा जो 5.5 करोड़ पेड़ लगाने के बराबर है।■

नई लाइन

मनमाड-इंदौर

• 309 किमी • ₹18,036 करोड़



- श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर और उज्जैन के धार्मिक स्थल – इंदौर
- उत्तरी महाराष्ट्र के प्याज उत्पादक केंद्र: नासिक, धुले और नंदुरबार
- बाजरा (ज्वार, मकई) उत्पादक क्षेत्र
- मुंबई-इंदौर/उज्जैन 4 घंटे 30 मिनट, 200 कि.मी. की कमी
- पहली बार करीब 30 लाख लोगों को मिलेगा रेल संपर्क

जनजातीय सशक्तिकरण - नई और बेहतर रेल संपर्क

- नासिक और धुले (महाराष्ट्र)
- बरवानी, खरगोन, धार (मध्य प्रदेश)

पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र से कनेक्टिविटी

- महिंद्रा, वीई कमर्शियल व्हीकल लिमिटेड (जेवी वोल्वो और आयशर)
- फोर्स मोटर्स, जेएनपीए और हजीरा पोर्ट के साथ राठी स्टील इंडस्ट्रीज
- परियोजना लागत : ₹ 18,036 करोड़
- रोजगार : 102 लाख मानव दिवस
- CO_2 उत्सर्जन की बचत : 138 करोड़ किलोग्राम CO_2 5.5 करोड़ पेड़ों के बराबर

रोजगार सृजन करने वाली इंफ्रा परियोजनाओं को 85 दिनों में मंजूरी

क्र.सं.	कैबिनेट का फैसला	लागत (₹करोड़ में)	प्रयोग
1	लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, वाराणसी का विकास	2,870	34 लाख मानव दिवस
2	अपतटीय पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए गैप फंडिंग	7,453	
3	महाराष्ट्र में दहानु के निकट वधावन में प्रमुख बंदरगाह	76,220	12 लाख नौकरियां
4	8 राष्ट्रीय उच्च गति सड़क परियोजनाएँ (936 कि.मी.)	50,655	4.4 करोड़ मानव दिवस
5	11 रेलवे परियोजनाएँ (967 कि.मी. नई लाइन + 121 कि.मी. मल्टी ट्रैक)	31,113	4.1 करोड़ मानव दिवस
6	बेंगलुरु मेट्रो रेल परियोजनाओं के 2 कॉरिडोर (44.65 कि.मी.), ठाणे रिंग मेट्रो रेल प्रोजेक्ट (29 कि.मी.) और पुणे मेट्रो फेज-I (5.46 कि.मी.)	30,766	1.5 करोड़ मानव दिवस
7	बागडोगरा और बिहटा हवाई अड्डे पर सिविल एन्क्लेव का विकास	2,962	35 लाख मानव दिवस
8	12 औद्योगिक स्मार्ट शहर	28,602	40 लाख नौकरियां
9	मनमाड-इंदौर नई लाइन	18,036	102 लाख मानव दिवस
	कुल	**2,48,677**	

बहुत जल्द पटरियों पर दौड़ती नजर आएगी वंदे भारत स्लीपर ट्रेन



दिनांक 1 सितम्बर, 2024 को रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने बीईएमएल बेंगलूरु में नई वंदे भारत स्लीपर ट्रेन सेट का अनावरण किया। इस कार्यक्रम में रेल राज्य मंत्री श्री वी सोमन्ना, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, बीईएमएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री शांतनु रॉय, भारतीय रेल और इंटीग्रल कोच फैक्ट्री के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे

भारतीय रेल द्वारा बहुत जल्द वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का संचालन शुरू किया जाएगा। वंदे भारत ट्रेन की तरह वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का निर्माण भी स्वदेशी तकनीक से किया जा रहा है। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन में पैसेंजर संरक्षा के साथ-साथ लोको पायलट और अटेंडेंट्स की सुविधाओं का भी पूरा ध्यान रखा गया है। लोको कैब को बेहतर बनाया गया है, साथ ही यह ट्रेन टक्कर रोधी कवच प्रणाली से लैस है। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का ट्रायल जल्द शुरू होने वाला है और उसके पश्चात इस ट्रेन को देश के विभिन्न रेल मार्गों पर संचालित किया जाएगा। वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों को लंबे रेल रूट्स पर संचालित किया जाएगा और इस ट्रेन से भारत में लंबी दूरी की रेल यात्रा में क्रांति आने की उम्मीद है। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन आराम, सुरक्षा और दक्षता के मामले में नए मानक स्थापित करेगी।■

ट्रेन का प्रदर्शन	
सेवा के दौरान अधिकतम परिचालन गति	160 कि.मी. प्रति घंटे
परीक्षण के दौरान अधिकतम परिचालन गति	180 कि.मी. प्रति घंटे

यात्री क्षमता : बर्थ का प्रकार	प्रति ट्रेन कोच की संख्या	बर्थ की संख्या
एसी 3 टियर बर्थ	11	611
एसी 2 टियर बर्थ	4	188
प्रथम श्रेणी एसी बर्थ	1	24
कुल	**16**	**823**

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की मुख्य विशेषताएँ

- ऑस्टेनिटिक स्टेनलेस स्टील ट्रेनसेट
- यात्रियों की सुरक्षा के लिए ट्रेनसेट में दुर्घटना-रोधी विशेषताएँ
- जीएफआरपी पैनलों के साथ श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ इंटीरियर
- एरोडायनामिक बाहरी लुक
- मॉड्यूलर पेंट्री
- EN 45545 के अनुसार फायर संरक्षा जोखिम स्तर : 03
- दिव्यांगों के लिए विशेष बर्थ और शौचालय
- स्वचालित बाहरी यात्री दरवाजे
- सेंसर आधारित इंटर कम्युनिकेशन डोर
- अंतिम दीवार पर दूर से संचालित अग्नि अवरोधक दरवाजे
- एर्गोनॉमिक रूप से डिज़ाइन की गई गंध रहित शौचालय प्रणाली
- लोको पायलट के लिए शौचालय की सुविधा
- प्रथम एसी कार में गर्म पानी से स्नान की सुविधा
- यूएसबी चार्जिंग प्रावधान के साथ एकीकृत रीडिंग लाइट
- सार्वजनिक घोषणा और दृश्य सूचना प्रणाली
- सामान रखने के लिए बड़ा लगेज रूम





रेल मंत्री एवं रेल राज्य मंत्री ने बेंगलुरु में रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओं संग वार्तालाप कर उत्साहवर्धन किया



रेलवे प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षु के साथ ग्रुप फोटो कर उनका उत्साहवर्धन करते हुए रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव, साथ में हैं श्री वी. सोमन्ना, रेल राज्य मंत्री और श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अन्य उच्च अधिकारीगण

रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 1 सितंबर, 2024 को बेंगलुरु में रेलवे प्रशिक्षण संस्थान का दौरा किया। रेल राज्य मंत्री श्री वी सोमन्ना और अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार भी इस अवसर पर उपस्थित थे। रेल मंत्री ने ड्राइवरों, सहायक चालकों और तकनीकी कर्मचारियों सहित 150 से अधिक प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत कर उनका उत्साह बढ़ाया।

श्री वैष्णव ने प्रशिक्षुओं की लंबे समय से चली आ रही मांग को संबोधित किया। प्रशिक्षुओं ने अधिक आरामदायक और आधुनिक वर्दी की वकालत की, जिस पर मंत्री ने व्यावहारिकता और आधुनिकीकरण के महत्त्व को पहचानते हुए सहमति व्यक्त की।

इस यात्रा में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, बुनियादी ढाँचे में सुधार और कैरियर विकास जैसे व्यापक विषयों को भी शामिल किया गया। श्री वैष्णव का दृष्टिकोण सहयोगात्मक था, सुझाव मांगना और समावेशी निर्णय लेने की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करना। श्री वी. सोमन्ना, रेल राज्य मंत्री और श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने इन चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया, आगे प्रशिक्षुओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए नेतृत्व के समर्पण पर जोर दिया।

रेल मंत्री ने अपने सहयोगियों के साथ, प्रशिक्षुओं के साथ दोपहर का भोजन किया, जिससे सौहार्द और एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिला।



रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और रेल राज्य मंत्री श्री वी सोमन्ना ने दिनांक 1 सितम्बर, 2024 को बीईएमएल, बेंगलूरु में मानक और ब्रॉड गेज रोलिंग स्टॉक विनिर्माण सुविधा के लिए नए हैंगर की आधारशिला रखी। इस कार्यक्रम में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, बीईएमएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री शांतनु रॉय के साथ-साथ भारतीय रेल और इंटीग्रल कोच फैक्ट्री के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे

रेल मंत्री ने आमान परिवर्तित पीलीभीत-शाहगढ़-मैलानी रेल खंड पर नई ट्रेन सेवा शुरू की





पीलीभीत-शाहगढ़-मैलानी आमान परिवर्तित खंड पर नई ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, साथ में हैं रेल राज्य मंत्री श्री वी सोमन्ना और रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार

रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिनांक 1 सितम्बर, 2024 को पीलीभीत-शाहगढ़-मैलानी आमान परिवर्तित खंड को राष्ट्र को समर्पित किया तथा इस खंड पर नई ट्रेन सेवा का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया।

इस अवसर पर श्री वैष्णव ने पीलीभीत के विकास के लिए केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री तथा सांसद, पीलीभीत श्री जितिन प्रसाद के प्रयासों की सराहना की। श्री वैष्णव ने कहा कि 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत आँवला, बदायूँ, बहेड़ी, बरेली, बरेली सिटी, धामपुर, इज्जतनगर, मुरादाबाद, पीलीभीत, रामपुर, नगीना, सहारनपुर आदि स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। इस योजना के तहत उत्तर प्रदेश में कुल 157 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री ने रेलवे के लिए बजट आवंटन में लगातार वृद्धि की है तथा वर्तमान बजट में उत्तर प्रदेश में रेल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास एवं विस्तार के लिए ₹19,848 करोड़ आवंटित किये गये हैं, जो वित्त वर्ष 2009-14 के दौरान उत्तर प्रदेश में रेलवे के लिए औसत वार्षिक बजट आवंटन से 18 गुना अधिक है। पिछले 10 वर्षों में उत्तर प्रदेश में 4,900 कि.मी. नई रेल लाइनें बिछाई गई हैं, जो स्विट्जरलैंड के कुल रेल नेटवर्क के बराबर है। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारतीय रेल पर किया गया कार्य विकास की एक मिशाल है।

इस अवसर पर पीलीभीत में आयोजित केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद, गन्ना विकास एवं चीनी मिलें राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री संजय सिह गंगवार, कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री बलदेव सिंह औलख तथा विधायक श्री बाबूराम एवं महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे सुश्री सौम्या माथुर उपस्थित थी।■

लंबाई - 67.92 कि.मी.

लागत - ₹672 करोड़ (लगभग)

लाभ

- पीलीभीत टाइगर रिजर्व एवं जिम कार्बेट नेशनल पार्क पहुंचने में सुगमता
- टनकपुर के निकट पूर्णागिरि मंदिर तक श्रद्धालुओं की आसान पहुंच
- दैनिक यात्रियों, छात्रों, किसानों और व्यापारियों को आवागमन में आसानी
- क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को गति मिलेगी
- लखनऊ एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश से नई दिल्ली के लिए वैकल्पिक रेल मार्ग
- लंबी दूरी की रेलगाड़ियों का परिचालन हो सकेगा
- क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक प्रगति होगी, पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा



रेल मंत्री द्वारा गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन और जयपुर-सवाई माधोपुर रेल खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण

रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 24 सितम्बर, 2024 को गांधीनगर जयपुर के पुनर्विकास कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया। श्री वैष्णव ने निरीक्षण के दौरान गांधीनगर जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास कार्यों की प्रगति को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही रेल दुर्घटना के समय त्वरित कार्यवाही हेतु भारतीय रेल में पहली बार गठित 'रेल रक्षक दल' का भी अवलोकन किया। रेल रक्षक दल में एनडीआरएफ, वडोदरा से प्रशिक्षित आरपीएफ एवं यांत्रिक (कैरिज एवं वैगन) विभाग के कर्मचारी रहेंगे, जिन्हें आपदा प्रबंधन के लिए उपकरण एवं यात्रा के लिए वाहन उपलब्ध कराये गये हैं।

गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन पर निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री ने महिला कर्मचारियों से संवाद किया तथा उनके साथ सेल्फी ली एवं अन्य कर्मचारियों से भी वार्तालाप कर दिन प्रतिदिन के कार्यों की जानकारी प्राप्त की।

इस अवसर पर रेल मंत्री ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन पर भारतीय रेल पर प्रथम बार 72 X 48 मीटर के एयर कॉनकोर्स हेतु गर्डर लॉन्चिंग को भारतीय रेल पर सिविल इंजीनियरिंग का एक उत्कृष्ट उदाहरण बताया। रेल मंत्री ने गांधीनगर जयपुर स्टेशन पर विभिन्न कार्यों का गहनता से अवलोकन किया और अधिकारियों को कार्य को गुणवत्ता के साथ लक्ष्यानुसार करने के लिए दिशा निर्देश प्रदान किए। रेल मंत्री ने बताया कि वर्तमान में माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पूरे भारतीय रेल पर 1,100 से अधिक स्टेशनों पर पुनर्विकास का कार्य तीव्र



गांधीनगर जयपुर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास कार्य की प्रगति का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

गति से किया जा रहा है, जिससे आने वाले दिनों में भारतीय रेल में बड़ा परिवर्तन देखने को मिलेगा।

गांधीनगर जयपुर स्टेशन के निरीक्षण के पश्चात रेल मंत्री श्री वैष्णव ने जयपुर-सवाई माधोपुर रेलखण्ड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया और अधिकारियों को रेल संचालन में संरक्षा और यात्री सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जयपुर लोकसभा सांसद, श्रीमती मंजू शर्मा, उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अमिताभ, जयपुर मंडल रेल प्रबंधक श्री विकास पुरवार एवं सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।■

'भारत नेपाल मैत्री यात्रा'-भारत गौरव डीलक्स एसी पर्यटक ट्रेन का शुभारंभ





दिनांक 20 सितंबर, 2024 को हज़रत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से 'भारत नेपाल मैत्री यात्रा'-भारत गौरव डीलक्स एसी पर्यटक ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, इस अवसर पर श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा श्री शोभन चौधरी, महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे उपस्थित थे

रेल मंत्री द्वारा सवाई माधोपुर से इंद्रगढ़ सुमेरगंजमंडी रेल खंड पर कवच 4.0 का निरीक्षण



सवाई माधोपुर से इंद्रगढ़ सुमेरगंजमंडी स्टेशन तक कवच के निरीक्षण के दौरान लोको पायलट से बात कर स्टाफ का उत्साह वर्धन करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

दिनांक 24 सितंबर, 2024 को भारतीय रेल में मिशन रफ्तार के अंतर्गत नई तकनीक कवच प्रणाली की उपयोगिता से संरक्षा एवं सुरक्षा प्रणाली और ट्रेनों को स्पीड मिल रही है। इसी क्रम में केन्द्रीय मंत्री रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा दिनांक 24 सितम्बर, 2024 को कोटा मंडल के सवाई माधोपुर से इंद्रगढ़ सुमेरगंजमंडी स्टेशन तक कवच सिस्टम का लोको से ट्रायल रन कर निरीक्षण किया। इस दौरान रेल मंत्री ने लोको पायलटों के साथ संवाद किया एवं कवच 4.0 के बारे में सभी जानकारियां लीं। इस ट्रायल रन के दौरान पश्चिम मध्य रेल की महाप्रबंधक श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, उत्तर पश्चिम रेल के महाप्रबंधक श्री अमिताभ सहित उच्च अधिकारी उपस्थित थे।

मिशन रफ्तार 160 कि.मी. प्रति घंटा परियोजना के तहत नागदा–मथुरा खण्ड के मध्य कुल 545 कि.मी. की दूरी पर ₹2,665.14 करोड़ की लागत से कार्य तीव्र गति से किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट में कवच की संरक्षा एवं सुरक्षा दृष्टिकोण से सबसे अहम भूमिका है। कवच वर्तमान रेल संचालन प्रणाली के ऊपर एक महत्त्वपूर्ण विश्वसनीय सुरक्षात्मक परत प्रदान करती है। इसके लागू होने के बाद हमें ट्रेन चालकों के द्वारा मानवीय भूल से सिग्नल को अनदेखा कर होने वाली सुरक्षा चूक की दुर्घटनाओं से हमेशा के लिए निजात मिल जाएगी। भारतीय रेल पर सर्वप्रथम पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा मंडल द्वारा दिनांक 16 सितंबर, 2024 को कोटा–सवाई माधोपुर 108 कि.मी. के खण्ड पर भारत की स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली कवच संस्करण 4.0 को स्थापित किया गया है।

भारतीय रेल ने अब एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कम से कम समय में कवच संस्करण 4.0 को 108 कि.मी. रेल ट्रैक पर स्थापित कर दिया है, तथा रेलवे सुरक्षा और परिचालन दक्षता के लिए नई जमीन तैयार की है। भारतीय रेल में बड़े गर्व की बात है कि कवच प्रणाली का लोको ट्रायल केन्द्रीय मंत्री रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा किया गया। इस कवच प्रणाली के निरीक्षण के दौरान सवाई माधोपुर–इंदरगढ़ सुमेरगंज मंडी सेक्शन (36 कि.मी.) में कवच का निरीक्षण और लोको परीक्षण किया गया, जिसके अंतर्गत समपार फाटक क्रमांक 148 पर ऑटो व्हिसलिंग, सवाई माधोपुर–कुशतला ब्लॉक सेक्शन में लोको ओवर स्पीड पर कवच कार्यप्रणाली की जाँच, रवांजना डूंगर स्टेशन के समीप रेड सिग्नल की स्थिति में सिग्नल पासिंग एट डेंजर रोकथाम परीक्षण, अमली स्टेशन के समीप 120 कि.मी. प्रतिघंटा के स्थाई गति प्रतिबन्ध की निगरानी एवं इंदरगढ़ स्टेशन के एप्रोच पर लूप लाइन स्पीड कंट्रोल टेस्ट एवं उक्त रेल खण्ड के सभी सिग्नलों को लोको कवच स्क्रीन पर निरंतर अवलोकन करने का परीक्षण शामिल है।

इस प्रणाली की विशेषताएं : कवच स्वचालित ट्रेन सुरक्षा एवं ट्रेनों के टकराव रोकने की क्षमता प्रदान करता है। सिग्नल पासिंग एट डेंजर स्थिति को रोकता है और आवश्यकतानुसार स्वचालित गति प्रतिबंध लागू करता है। आमने–सामने, पीछे से और साइड से टकराव की स्थिति में ट्रेनों का स्वचालित रूप से पता लगाता है और रोकता है। लोको पायलट को इन–कैब सिग्नलिंग प्रदान करता है, जिससे कोहरे में ट्रेन संचालन संभव होता है।

कवच द्वारा स्पीड नियंत्रण : यदि ट्रेन की गति अनुमत सीमा से 2 कि.मी./घंटा से अधिक है, तो कवच सिस्टम द्वारा ओवर स्पीड अलार्म जारी होगा। अगर ट्रेन की गति अनुमत सीमा से 5 कि.मी./घंटा अधिक है, तो सामान्य ब्रेकिंग होगा। यदि ट्रेन की गति अनुमत सीमा से 7 कि.मी./घंटा अधिक है, तो पूर्ण ब्रेक लागू होगा। अगर ट्रेन की गति अनुमत सीमा से 9 कि.मी./घंटा अधिक है, तो आपातकालीन ब्रेक लागू होगा।

लोको कवच यूनिट : लोको में कवच सिस्टम का दिल ड्राईवर मशीन इंटरफेस है। ड्राइवर मशीन इंटरफेस के मुख्य कार्य सिग्नलिंग



जानकारी प्रदर्शित करना, स्पीड और ब्रेकिंग स्थिति दिखाना, सिग्नल पासिंग एट डेंजर की रोकथाम आपातकालीन संदेश भेजने की सुविधा है।

कवच के लाभ

सुरक्षा में वृद्धि : ट्रेनों की गति को नियंत्रित करके दुर्घटनाओं की संभावना को कम करना।

सटीकता : ट्रेन संचालन में सटीकता और समयपालन सुनिश्चित करना।

कवच के कार्यान्वयन में कई कार्य करने होते हैं, जैसे :

- प्रत्येक स्टेशन पर स्टेशन कवच की संस्थापना।
- पूरे रेलपथ की लंबाई में आरएफआईडी टैग का संस्थापन।
- समग्र खंड पर दूरसंचार टावरों का संस्थापन।
- रेलपथ के साथ ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना।
- भारतीय रेल में चलने वाले प्रत्येक रेल इंजन पर लोको कवच का प्रावधान।

अब तक, कवच को दक्षिण मध्य रेल के 1,465 मार्ग कि.मी. पर और 144 रेलइंजनों में लगाया जा चुका है।

वर्तमान में, दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा गलियारे (लगभग 3,000 मार्ग कि.मी.) पर कवच से संबंधित प्रमुख मदों की प्रगति निम्नानुसार है :

- ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना : 4,275 कि.मी.
- दूरसंचार टावरों का संस्थापन : 364 अदद
- स्टेशनों पर कवच उपस्कर का प्रावधान : 285 अदद
- रेलइंजनों में कवच उपस्कर का प्रावधान : 319 रेलइंजन
- ट्रैक साइड उपस्कर का संस्थापन : 1,384 मार्ग कि.मी.

भारतीय रेल ने अन्य 6,000 मार्ग कि.मी. के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट और विस्तृत अनुमान तैयार किए हैं।

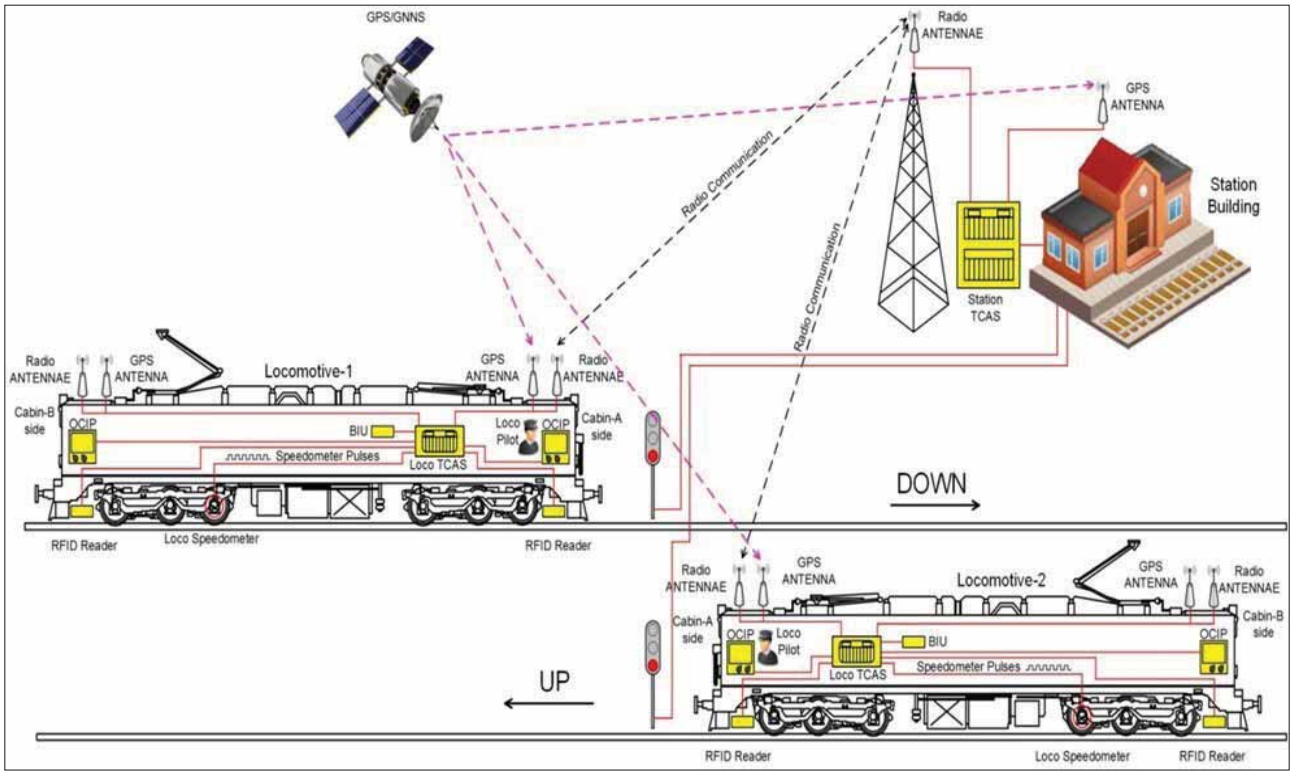
कवच 4.0

दिनांक 16 जुलाई, 2024 को कवच 4.0 विशिष्टि को आरडीएसओ द्वारा अनुमोदित किया गया है। इस संस्करण में विविध रेलवे नेटवर्क के लिए आवश्यक सभी प्रमुख विशेषताएं शामिल हैं। यह भारतीय रेल की संरक्षा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अल्प अवधि के भीतर, भारतीय रेल ने स्वचालित रेलगाड़ी संरक्षण प्रणाली का निर्माण, परीक्षण और संस्थापन शुरू कर दिया है।

कवच की व्यवस्था चरणबद्ध रूप से उत्तरोत्तर कराई जा रही है।

क्षमता वृद्धि और कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए, कई ओईएम के परीक्षण और अनुमोदन विभिन्न चरणों में हैं।

कवच निर्माण कार्यों पर अब तक उपयोग की गई राशि ₹1,216.77 करोड़ है। वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान ₹1112.57 करोड़ की राशि का आवंटन किया गया है।■







दिनांक 1 सितंबर, 2024 को अपने मुंबई दौरे के दौरान रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने लोकल ट्रेन में यात्रा कर यात्रियों से सुझाव जाने। दूसरी तस्वीर में रेल मंत्री रेल स्टाफ के साथ सेल्फी लेते नजर आ रहे हैं

दक्षिण मध्य रेलवे और इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को CII का ऊर्जा दक्षता इकाई पुरस्कार





दक्षिण मध्य रेलवे तथा इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को ऊर्जा प्रबंधन में उत्कृष्टता के लिए 25वें राष्ट्रीय पुरस्कार–2024 में भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) से 5 ऊर्जा कुशल इकाई पुरस्कार मिले हैं। पुरस्कार श्री लोकेश विश्नोई, डीआरएम, हैदराबाद मंडल ने अपनी टीम और कैरिज वर्कशॉप, लल्लागुडा के अधिकारियों के साथ दिनांक 12 सितंबर, 2024 को हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, हैदराबाद में आयोजित ऊर्जा दक्षता पुरस्कार समारोह के दौरान प्राप्त किए।

प्राप्त पुरस्कारों का विवरण : रेल निलयम (एससीआर मुख्यालय भवन), सिकंदराबाद, हैदराबाद भवन (हैदराबाद मंडल मुख्यालय) सिकंदराबाद, लेखा भवन (एससीआर लेखा भवन), सिकंदराबाद, मौलाली में क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान (जेडआरटीआई) और कैरिज वर्कशॉप, लल्लागुडा। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण कुमार जैन ने दक्षिण मध्य रेलवे के कर्मचारियों और अधिकारियों को बधाई दी।

इंटीग्रल कोच फैक्ट्री को ऑटोमोबाइल, इंजीनियरिंग और रेलवे क्षेत्र के तहत ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से मान्यता दी गई है। आईसीएफ की ओर से श्री अनिल सिद्धार्थ, मुख्य विद्युत महाअभियंता और श्री वीएम गोविंदराजन, उप मुख्य विद्युत अभियंता ने पुरस्कार प्राप्त किया। आईसीएफ के महाप्रबंधक श्री यू सुब्बा राव ने इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए आईसीएफ के कर्मचारियों और अधिकारियों को बधाई दी।■

रेल राज्य मंत्री द्वारा रेल व्हील फैक्ट्री का निरीक्षण और बेंगलुरु उपनगरीय रेल परियोजना की समीक्षा



केंद्रीय रेल और जल शक्ति राज्य मंत्री श्री वी. सोमन्ना ने दिनांक 9 सितम्बर, 2024 को येलहंका में रेल व्हील फैक्ट्री (आरडब्ल्यूएफ) का निरीक्षण किया और बेंगलूरु उपनगरीय रेल परियोजना के संबंध में समीक्षा बैठक की। यह समीक्षा बैठक कर्नाटक सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग और अवसंरचना मंत्री श्री एम.बी. पाटिल के साथ बेंगलूरु में हुई। इस निरीक्षण और समीक्षा के दौरान आरडब्ल्यूएफ के महाप्रबंधक श्री राजगोपाल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

आरडब्ल्यूएफ के दौरे के समय श्री सोमन्ना को संयंत्र की क्षमता बढ़ाने की दिशा में उठाए गए विभिन्न कदमों की जानकारी दी गई। श्री सोमन्ना ने कर्मचारियों से बातचीत की, उनके सुझावों और शिकायतों का समाधान किया और रेल व्हील फैक्ट्री के समग्र प्रदर्शन की समीक्षा की। उन्होंने तीसरी एक्सल मशीनिंग लाइन के चालू होने का उल्लेख करते हुए उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया, जिससे सालाना एक्सल उत्पादन 40,000 यूनिट तक बढ़ने की उम्मीद है।

श्री सोमन्ना ने प्रेस को संबोधित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन में आरडब्ल्यूएफ के महत्त्वपूर्ण योगदान पर बल दिया। आरडब्ल्यूएफ ने 'मेक इन इंडिया-मेक फॉर द वर्ल्ड' पहल के तहत मोजाम्बिक, सूडान और मलेशिया जैसे देशों को सफलतापूर्वक पहिए और एक्सल निर्यात किए हैं। मंत्री ने 'जीरो डिफैक्ट' विनिर्माण प्रक्रिया तथा वित्त वर्ष 2023-24 के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित उत्पादन लक्ष्यों से आगे बढ़ जाने के लिए आरडब्ल्यूएफ की सराहना भी की।

श्री सोमन्ना ने बेंगलूरु उपनगरीय रेल परियोजना की भी समीक्षा की, जिसमें बेंगलूरु के आसपास डबल लाइन रेल कनेक्टिविटी प्रदान करने के प्रति लक्षित सर्कुलर रेल परियोजना पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। इस परियोजना से डोड्डाबल्लापुर, देवनहल्ली, मालूर, अनेकल, हेज्जला, सोलूर और निदावंदा जैसे क्षेत्रों को जोड़े जाने की संभावना है।

विधान सौध में आयोजित एक अलग समीक्षा बैठक में श्री सोमन्ना ने श्री एम.बी. पाटिल के साथ मिलकर घोषणा की कि बेंगलूरु उपनगरीय रेल परियोजना के चिक्काबनवारा-बैयप्पनहल्ली (कॉरिडोर-2, 25 कि.मी.) और हीलालिगे-राजनुकुंटे (कॉरिडोर-4, 46.88 कि.मी.) खंडों को दिसंबर 2026 तक पूरा करके राष्ट्र को समर्पित कर दिया जाएगा।

श्री सोमन्ना ने बेंगलुरू मेट्रो, उपनगरीय रेल परियोजना और अन्य संबंधित प्राधिकरणों के बीच तालमेल के महत्त्व पर जोर दिया। उन्होंने निर्बाध एकीकरण सुनिश्चित करने और देरी से बचने के लिए नियमित समन्वय बैठकों की सिफारिश की। बैठक में उपनगरीय रेल को बेंगलुरू के आसपास प्रस्तावित सर्कुलर रेल के साथ एकीकृत करने की संभावना पर भी चर्चा की गई। जिसे रेलवे बोर्ड ने ₹21,000 करोड़ की अनुमानित लागत से मंजूरी दी है।

इस समीक्षा बैठक में दक्षिण पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरविंद श्रीवास्तव; बेंगलुरू के मंडलीय रेल प्रबंधक श्री योगेश मोहन, बेंगलुरू मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीएमआरसीएल) के प्रबंध निदेशक श्री महेश्वर राव, के-राइड की प्रबंध निदेशक श्रीमती मंजुला, बीबीएमपी के मुख्य आयुक्त श्री तुषार गिरिनाथ और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।■



जयपुर में आयोजित हुई 57वीं अंतर रेलवे निशानेबाजी प्रतियोगिता

रेल राज्य मंत्री ने किया प्रतियोगिता का शुभारंभ

उत्तर पश्चिम रेलवे खेलकूद संघ के तत्वावधान में जगतपुरा शूटिंग रेंज, जयपुर में दिनांक 23 से 27 सितम्बर, 2024 तक 57वीं अंतर रेलवे निशानेबाजी प्रतियोगिता का शुभारम्भ दिनांक 23 सितम्बर, 2024 को रेल और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंत्री ने गणपति नगर रेलवे कॉलोनी में ₹40.50 करोड़ की लागत से एक इंडोर स्टेडियम बनाने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि रेलवे द्वारा खिलाड़ियों के लिए हर तरह की सुविधा प्रदान की जाएगी। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री के 2038 में भारत में ओलंपिक खेलों के आयोजन के सपने को सार्थक करने तथा इनमें भारत के खेल पदकों की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा सभी प्रयास किए जाने की बात कही।

उन्होंने ने बताया कि गणपति नगर रेलवे कॉलोनी में एक इंडोर स्टेडियम बनाया जायेगा, जिसमें बास्केटबाल, वालीबाल, कबड्डी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कुश्ती आदि खेलों के लिए सभी सुविधा उपलब्ध रहेगी। यह स्टेडियम लगभग 2 वर्ष में बनकर तैयार हो जाएगा।



उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अमिताभ ने रेलवे के खिलाड़ियों द्वारा हाल ही में पेरिस में आयोजित ओलंपिक में प्राप्त की गई उपलब्धियां विशेष कर शूटिंग प्रतियोगिता में किए गए उत्कृष्ट प्रदर्शन के बारे में बताया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक श्री अशोक माहेश्वरी, रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के सचिव श्री प्रेम लोचब, मंडल रेल प्रबंधक जयपुर श्री विकास पुरवार तथा उत्तर पश्चिम रेलवे के अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं प्रतियोगिता में भाग लेने विभिन्न रेलवे से आए खिलाड़ी उपस्थित रहे।■



रेल राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह ने दिनांक 24 अगस्त, 2024 को 'अमृत भारत योजना' के तहत सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्य की समीक्षा की।■

भारतीय रेल
Indian Railways

पत्रिका की सदस्यता तथा पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु

संपर्क करें

011-47845089

सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 1 एवं दोपहर 2 से 5 बजे तक)

bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com

ट्रेनों के नए ठहराव व अन्य सुविधाओं का उद्घाटन

नई दिल्ली-लखनऊ तेजस एक्सप्रेस को मिला टूंडला जंक्शन रेलवे स्टेशन पर ठहराव



दिनांक 18 अगस्त, 2024 को केंद्रीय राज्य मंत्री प्रो. एस. पी. सिंह बघेल ने ट्रेन संख्या 82502 नई दिल्ली–लखनऊ तेजस एक्सप्रेस को टूंडला जंक्शन रेलवे स्टेशन पर प्रायोगिक ठहराव को हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम में विधायक, टूंडला, श्री प्रेमपाल धनगर, नगरपालिका चेयरमैन, टूंडला, श्री भंवर सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह, एनआरयूसीसी सदस्य श्री एस. के. गौतम, उपस्थित थे।■

अब आनंद विहार-अयोध्या कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस अलीगढ़ जंक्शन पर भी रुकेगी



दिनांक 16 अगस्त, 2024 को अलीगढ़ के सांसद श्री सतीश गौतम ने ट्रेन संख्या 22426, आनंद विहार–अयोध्या कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस को अलीगढ़ जंक्शन रेलवे स्टेशन पर प्रायोगिक ठहराव को हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम में सांसद, हाथरस, श्री अनूप प्रधान वाल्मीकि, महापौर, अलीगढ़, श्री प्रशान्त सिंघल, विधायक, कोल, श्री अनिल पाराशर, सदस्य विधान परिषद श्री मानवेन्द्र प्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष श्री कृष्ण पाल सिंह उपस्थित थे।■

न्यू सफिलगुडा रेलवे स्टेशन भवन राष्ट्र को समर्पित



मलकाजगिरी के सांसद श्री एटाला राजेंद्र ने दिनांक 18 सितंबर, 2024 को न्यू सफिलगुडा रेलवे स्टेशन भवन को राष्ट्र को समर्पित किया। इस अवसर पर मलकाजगिरी के विधायक श्री मर्री राजशेखर रेड्डी और रेलवे के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री एटाला राजेंदर ने कहा कि सफिलगुडा रेलवे स्टेशन जुड़वां शहरों में महत्त्वपूर्ण स्टेशनों में से एक है, जो बड़ी संख्या में लोगों की सेवा करता है। उन्होंने कहा कि नए स्टेशन भवन से क्षेत्र में यात्रियों को सुविधा होगी।■

श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-दिल्ली जंक्शन एक्सप्रेस को मिला सूबेदारगंज तक विस्तार



दिनांक 5 सितम्बर, 2024 को महापौर, नगर निगम प्रयागराज, श्री गणेश केसरवानी एवं विधायक, प्रयागराज पश्चिम, श्री सिद्धार्थ नाथ सिंह की उपस्थिति में लोकसभा सदस्य, फूलपुर, श्री प्रवीण पटेल ने ट्रेन संख्या 14033, श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा–दिल्ली जंक्शन एक्सप्रेस के सूबेदारगंज तक विस्तार को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया।■

स्वच्छता ही सेवा - 2024

भारतीय रेल में स्वच्छता के स्तर में हो रहा है उल्लेखनीय सुधार- अध्यक्ष



रेल भवन में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का शुभारंभ करते एवं शपथ दिलाते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, इस अवसर पर सदस्य वित्त, सुश्री रूपा श्रीनिवासन, महानिदेशक, मानव संसाधन, श्री नवीन गुलाटी, महानिदेशक संरक्षा, श्री बृजमोहन अग्रवाल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने सभी मंडल, रेलवे उत्पादन इकाइयों और रेलवे के सार्वजनिक उपक्रमों को निर्देश दिया है कि वे स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दें और न केवल रेलवे स्टेशनों पर बल्कि ट्रेनों, रेलवे कॉलोनियों और उत्पादन इकाइयों में भी स्वच्छता के स्तर में उल्लेखनीय सुधार पर ध्यान केन्द्रित करें। रेलवे और नोडल कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक में उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए स्वच्छ भारत दिवस के रूप में मनाई जाती है। 2017 से 'स्वच्छता ही सेवा' का एक पखवाड़ा अभियान मनाया जा रहा है। हमें स्वच्छता के लिए स्वैच्छिकता और सामूहिक कार्य को मजबूत करने के लिए काम करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि पिछले वर्ष 'स्वच्छता ही सेवा'-2023 अभियान के दौरान, भारतीय रेल के लगभग 6,823 रेलवे स्टेशनों पर करीब 2.5 लाख लोगों ने शामिल होकर 70,0000 से अधिक मानव-घंटों का श्रमदान किया। भारतीय रेल ने विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया, जैसे बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान, कचरे वाले स्थानों को सेल्फी पॉइंट में बदलना, रेलवे की वेबसाइट पर 'स्वच्छता ही सेवा' लोगो/बैनर पोस्ट करना, ट्रेनों/स्टेशनों में कचरे के उचित निपटान के बारे में यात्रियों को जागरूक करने के लिए नियमित घोषणा करना, जागरूकता बढ़ाने के लिए 'स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत' के नारे के साथ प्रभात फेरी निकालना, यात्रियों की जागरूकता के लिए रेलवे स्टेशनों पर गैर सरकारी संगठनों, धार्मिक निकायों और स्कूली बच्चों की मदद से नुक्कड़ नाटक आयोजित करना आदि।

इस वर्ष, स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 'स्वच्छता ही सेवा' 2024 अभियान 14 सितम्बर (पूर्वावलोकन), 17 सितम्बर (अभियान का उद्घाटन) से 1 अक्टूबर तक 'स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता' की विषय वस्तु के साथ मनाया जा रहा है तथा 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत दिवस मनाया गया।

'स्वच्छता ही सेवा' 2024 की विषय वस्तु, 'स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता' का उद्देश्य पूरे भारत में स्वच्छता प्रयासों में सामूहिक कार्य करने और नागरिक भागीदारी की भारतीय रेल की



'स्वच्छता ही सेवा' 2024 अभियान के दौरान नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर एक पौधा लगाकर 'एक पेड़ माँ के नाम अभियान' शुभारंभ करते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार

भावना को फिर से जगाना है। 'स्वच्छता ही सेवा' के स्तंभों की पहचान की गई, जो इस प्रकार हैं –

स्वच्छता की भागीदारी : व्यवहार परिवर्तन और सार्वजनिक भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करना और रेलवे प्लेटफॉर्म, ट्रैक आदि जैसी सामुदायिक संपत्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए लोगों के साथ जबरदस्त सफाई अभियान चलाना।

संपूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता लक्षित इकाई (सीटीयू-स्वच्छता लक्ष्य इकाइयाँ) : स्वच्छता लक्षित इकाई/सीटीयू ऐसे क्षेत्र हैं जो आम तौर पर कचरे के उपेक्षित बिंदु होते हैं, जिन्हें नियमित सफाई कार्यों के हिस्से के रूप में साफ करना मुश्किल होता है और जो पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए जोखिम पैदा करते हैं। ऐसे सीटीयू की पहचान करना और उन्हें स्वच्छ स्थल में बदलना।

सफाई मित्र सुरक्षा शिविर : सफाई मित्रों के लिए स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, सफाई मित्रों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए जागरूकता कार्यशालाएँ।

स्वच्छता ही सेवा 2024 अभियान 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चला, जिसका समापन स्वच्छ भारत दिवस पर हुआ, यह सभी नागरिकों, भागीदारों और हितधारकों के लिए सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्रस्तुत करता है। आइए, हम सामूहिक रूप से स्वच्छता बनाए रखने, महात्मा गांधी की विरासत का सम्मान करने और स्वच्छता को जीवन का एक तरीका बनाने की अपनी प्रतिज्ञा दोहराएं। इस वर्ष भी भारतीय रेल स्वच्छता ही सेवा अभियान के लिए तैयार है। 3,857 स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों (सीटीयू) की पहचान की गई थी और अब तक 'स्वच्छता ही सेवा' पोर्टल पर 4,666 कार्यक्रम बनाए गए थे।

मिशन एक पेड़ माँ के नाम के तहत बड़े पैमाने पर पौधारोपण अभियान चलाने का लक्ष्य दिया गया था। सभी रेलवे फील्ड इकाइयों को 'स्वच्छता ही सेवा'-2024 मनाने के लिए एक दैनिक गतिविधि कार्यक्रम भी दिया गया था। स्टेशन के आस-पास की रेलवे पटरियों और शहरी, अर्ध शहरी क्षेत्रों में आने वाली पटरियों के आसपास के इलाकों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया।



प्रतीक्षा कक्षों और अन्य स्टेशन परिसरों, कॉलोनियों, रेलवे भवनों/प्रतिष्ठानों आदि में पे एंड यूज शौचालयों सहित नालियों और शौचालयों की सफाई की गई।

भारतीय रेल इस अभियान को 'समग्र समाज के दृष्टिकोण' के साथ चलाने का सफल प्रयास किया, जिसमें लोगों की भागीदारी पर जोर दिया गया ताकि 'स्वच्छता सभी का काम' बन सके। 'स्वच्छता ही सेवा' पोर्टल पर दैनिक आधार पर और भी बहुत कुछ अपलोड किया गया।

'स्वच्छता ही सेवा' स्वच्छ भारत मिशन के तहत आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय और पेयजल एवं स्वच्छता विभाग (जल शक्ति मंत्रालय) की एक संयुक्त पहल है। भारतीय रेल इस वर्ष भी 'स्वच्छता ही सेवा' समारोह आयोजित किया गया।■


रेल परिसर में सफाई करते कर्मी


पेंट्रीकार में सफाई करते कर्मी


रेल परिसर को स्वच्छ करते कर्मी


सफाई कर्मी अपना काम करते हुए


ट्रैक पर सफाई करते कर्मी


स्वच्छ रेलवे स्टेशन



साफ-सुथरा अबोहर जंक्शन


स्वच्छता के प्रति जागरूकता अभियान चलाते हुए स्काउट एवं गाइड



'स्वच्छता ही सेवा' 2024 के दौरान नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा अहमदाबाद व गांधीनगर कैपिटल स्टेशन का निरीक्षण



दिनांक 16 सितम्बर, 2024 को रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने अहमदाबाद तथा गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने अहमदाबाद स्टेशन के पुनर्विकास कार्यों तथा गुजरात में चल रही अन्य रेल परियोजनाओं की समीक्षा बैठक की, जिसमें पश्चिम रेलवे तथा आरवीएनएल के उच्चअधिकारी उपस्थित थे।

उन्होंने गांधीनगर कैपिटल स्टेशन पर मद्देनजर संरक्षा के इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम तथा पॉइंट-क्रॉसिंग का निरीक्षण किया। साथ ही गैंगमेन एवं कीमेन रेलकर्मियों के साथ मुलाकात कर उनसे संरक्षा संबंधी अहम पहलुओं पर जानकारी ली।

श्री कुमार ने साबरमती यार्ड में वैगन मेंटेनेस डिपो भी देखा और रनिंग रूम साबरमती में रनिंग स्टाफ से मुलाकात कर रेलवे द्वारा उन्हें दी जा रही सुविधाओं के बारे में जाना। उन्होंने मणिनगर रेलवे क्रॉसिंग का रात्रि कालीन निरीक्षण किया तथा क्रॉसिंग पर कार्यरत गेटमेन को संरक्षा के बारे में सही जानकारी देने पर सराहना करते हुए पुरस्कृत भी किया।

प्रवास के दौरान उन्होंने पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के साबरमती स्थित ऑपरेशन कमांड सेंटर को भी देखा तथा श्री मनीष अवस्थी मुख्य महाप्रबंधक DFCCIL एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संवाद किया।

श्री कुमार ने अहमदाबाद स्टेशन पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों का साइट पर जाकर जायजा लिया। उन्होंने निर्माण के दौरान क्वालिटी से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करने एवं कार्य को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए।■

रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 152वीं बैठक सम्पन्न



रेल भवन में दिनांक 12 सितंबर, 2024 को रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 152वीं बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सतीश कुमार ने की। बैठक में रेल मंत्रालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का जायजा लिया गया। बैठक को संबोधित करते हुए श्री सतीश कुमार ने कहा कि रेलवे के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा का प्रयोग-प्रसार लगातार बढ़ रहा है। रेल मंत्रालय में राजभाषा हिंदी में अच्छा कार्य हो रहा है। भारतीय रेल में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए रेल मंत्रालय को गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2023 के लिए 'कीर्ति पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

श्री सतीश कुमार ने बताया कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए रेलवे बोर्ड कार्यालय में अगस्त, 2024 में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परिसाई की जयंतियां मनाई गईं थी। इसके अलावा, 22 अगस्त को 'कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में हिंदी का अनुप्रयोग' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। उन्होंने बताया कि 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए 14 से 27 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसमें हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला, संगोष्ठी एवं कविताओं पर आधारित अंताक्षरी जैसे कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा 'रेल राजभाषा' पत्रिका का विमोचन भी किया गया। बैठक में रेलवे बोर्ड के सदस्यों एवं विभिन्न उपक्रमों के प्रमुखों तथा अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।■

इंस्टीट्यूशंस ऑफ परमानेंट वे इंजीनियर्स की संगोष्ठी सम्पन्न

इंस्टीट्यूशंस ऑफ परमानेंट वे इंजीनियर्स (आईपीडब्ल्यूई) 2024 के दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 30 तथा 31 अगस्त, 2024 को गुजरात के गांधीनगर में किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आईपीडब्ल्यूई के संरक्षक एवं रेलवे बोर्ड के सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर श्री अनिल कुमार खंडेलवाल थे।

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से दिए गए अपने शुभकामना सन्देश में इस सेमिनार की सफलता की कामना करते हुए बताया कि भारतीय रेल के इंजीनियर्स दुनिया के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियर्स में से हैं और जब भी देश में जटिलतम प्रोजेक्ट को करना होता है तो रेलवे की बात आती है। रेलवे गरीब व मध्यम वर्ग के साथ जन-जन की सवारी है। ऐसे में हम कैसे नई टेक्नोलॉजी व नई फैसिलिटी लाए और इसमें ट्रैक से संबंधित जो इनोवेशन करने हैं, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सेमिनार में आईपीडब्ल्यूई के अध्यक्ष एवं रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त सदस्य (सिविल इंजीनियरिंग) श्री बृजेश गुप्ता, IRICEN पुणे के महानिदेशक



श्री एस. के. झा, एवं रेलवे बोर्ड में प्रमुख कार्यकारी निदेशक (ब्रिज) श्री रवींद्र गोयल, उत्तर रेलवे के प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री बी. पी. सिंह, अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री सुधीर कुमार शर्मा तथा देश भर के विभिन्न रेलवे के वरिष्ठ रेलवे इंजीनियरों सहित इस संगठन के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।■

भारतीय रेल और वेबटेक संयुक्त उद्यम का मढ़ौरा संयंत्र अफ्रीका को इवोल्यूशन सीरीज़ के लोकोमोटिव का करेगा निर्यात



भारतीय रेल और वेबटेक का एक संयुक्त उद्यम, वेबटेक लोकोमोटिव प्राइवेट लिमिटेड, अफ्रीका को लोकोमोटिव (इंजन) का निर्यात करने के लिए अपने संयंत्र की क्षमता का विस्तार कर रहा है। पहली बार, यह संयंत्र एक वैश्विक ग्राहक को निर्यात के लिए लोकोमोटिव का निर्माण करेगा।

यह संयंत्र वैश्विक ग्राहकों को इवोल्यूशन सीरीज ES43ACmi लोकोमोटिव की आपूर्ति करेगा। ES43ACmi एक लोकोमोटिव है, जिसमें 4,500 एचपी इवोल्यूशन सीरीज इंजन है, जो उच्च तापमान वाले वातावरण में ईंधन से जुड़ी सर्वश्रेष्ठ दक्षता और प्रदर्शन प्रदान करता है। मढ़ौरा संयंत्र वर्ष 2025 में इन लोकोमोटिवों का निर्यात शुरू करेगा।

यह परियोजना रणनीतिक महत्त्व की है क्योंकि यह भारत को एक वैश्विक लोकोमोटिव निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करती है और माननीय प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' दृष्टिकोण के तहत 'मेक इन इंडिया' और 'मेक फॉर द वर्ल्ड' पहलों के अनुरूप है। इससे मढ़ौरा संयंत्र को वैश्विक स्तर पर स्टैंडर्ड-गेज लोकोमोटिव का निर्यात करने में भी मदद मिलेगी, साथ ही स्थानीय आपूर्तिकर्ता की पहुँच बढ़ेगी और दीर्घकालिक रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा।

रेल मंत्रालय और वेबटेक के बीच सार्वजनिक-निजी भागीदारी की सफलता ने मढ़ौरा संयंत्र को एक विश्वस्तरीय वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित किया है, जो पूरे भारत से व्यापक स्थानीय आपूर्तिकर्ता आधार का उपयोग कर रहा है। अब तक, लगभग 650 लोकोमोटिव का निर्माण किया गया है और भारतीय रेल के लोकोमोटिव बेड़े में शामिल किया गया है। रेल मंत्रालय और वेबटेक संयंत्र की क्षमता एवं प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए सहयोग जारी रखेंगे, इसे स्थायी, दीर्घकालिक निर्यात उत्पादन कार्य के लिए तैयार करेंगे।

बिहार के मढ़ौरा में 70 एकड़ में फैला मढ़ौरा संयंत्र 2018 में स्थापित किया गया था ताकि भारतीय रेल के लिए 1,000 अत्याधुनिक लोकोमोटिव का स्वदेशी निर्माण किया जा सके। यह संयंत्र लगभग 600 लोगों को रोजगार देता है और भारतीय रेल को सालाना 100 लोकोमोटिव दे रहा है। इसने राज्य में औद्योगिक गतिविधियों को भी काफी बढ़ावा दिया है।■

महानिदेशक आरपीएफ द्वारा हॉट स्प्रिंग्स मेमोरियल, लद्दाख में पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि



रेलवे सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री मनोज यादव ने 28 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ दिनांक 3 सितंबर, 2024 को लद्दाख में हॉट स्प्रिंग मेमोरियल पर पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। यह यात्रा आईटीबीपी, आईटीबीएफ और भारतीय सेना के वीर अधिकारियों और जवानों के प्रति एकजुटता दिखाने के लिए थी, जो अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चौकसी बरत रहे हैं।

श्री यादव ने विभिन्न राज्य पुलिस और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) का प्रतिनिधित्व करने वाले पुलिस अधिकारियों के 28 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस प्रतिनिधिमंडल में तेलंगाना पुलिस के डीआईजी श्री एन प्रकाश रेड्डी डिप्टी लीडर के रूप में शामिल थे। पुलिस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में डीसीपी, ईओडब्ल्यू श्री राजा बंठिया ने दिल्ली पुलिस का प्रतिनिधित्व किया।

इस वर्ष की यह यात्रा एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई, क्योंकि श्री मनोज यादव प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले रेलवे सुरक्षा बल के पहले महानिदेशक बने। यह स्मारक भारतीय पुलिस बलों के लिए एक पवित्र स्थल रहा है, जहाँ दिनांक 21 अक्टूबर, 1959 को राष्ट्र की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति देने वाले दस सीआरपीएफ अधिकारियों, कर्मियों के बलिदान की याद में प्रतिवर्ष श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। 1960 में स्मरण के एक संकेत के रूप में शुरू हुआ यह समारोह देश भर के सेवारत और सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों के लिए एक अत्यधिक सम्मानित परंपरा बनी हुई है। यह स्थल पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास समुद्र तल से 15,400 फीट की ऊंचाई पर ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम इलाके में स्थित है।

पुलिस प्रतिनिधिमंडल को 86 वर्षीय वयोवृद्ध और एक जीवित किंवदंती और गश्ती दल के सदस्य श्री सोनम दोरजे से मिलने का सम्मान मिला। श्री दोरजे ने दिनांक 21 अक्टूबर, 1959 को चीनी सैनिकों के खिलाफ बहादुरी से खड़े होकर युद्ध किया जहाँ उन्हें पकड़ लिया गया था। उनकी जीवटता और साहस इतिहास का एक प्रेरक अध्याय बना हुआ है।

महानिदेशक आरपीएफ ने इस यात्रा को रेलवे सुरक्षा बल के उन 1011 बहादुर कर्मियों को समर्पित किया, जिन्होंने 1958 में बल की स्थापना के बाद से कर्तव्य की राह पर अपने प्राणों की आहुति दी है। उन्होंने 1959 के बहादुरों के दिखाए गए कर्तव्य, वीरता और बलिदान की भावना के प्रति आरपीएफ की प्रतिबद्धता को दोहराया, जिनकी यादें पुलिस इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए अंकित रहेंगी।■

भारतीय रेल
पत्रिका

अब
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

महानिदेशक, आरपीएफ ने किया पश्चिम रेलवे मुख्यालय का दौरा

रेलवे सुरक्षा बल (आर.पी.एफ.) के महानिदेशक श्री मनोज यादव ने दिनांक 15 एवं 16 जुलाई, 2024 को चर्चगेट, मुंबई स्थित पश्चिम रेलवे के मुख्यालय का महत्त्वपूर्ण दौरा किया। श्री यादव ने पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र तथा विभागाध्यक्षों से बैठक की।

श्री यादव ने दिनांक 15 जुलाई, 2024 को पश्चिम रेलवे पर नए आरपीएफ बैरकों और आरपीएफ कार्यालय का ई-उद्घाटन किया। दिनांक 16 जुलाई, 2024 को श्री यादव ने मुंबई क्षेत्र के रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ 'सुरक्षा सम्मेलन' आयोजित किया। इस संगोष्ठी का आयोजन श्री प्रवीण



चंद्र सिन्हा, आईजी सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, पश्चिम रेलवे और श्री एस.एन. चौधरी, आईजी सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, मध्य रेल की उपस्थिति में किया गया।■

महानिदेशक, रेलवे स्वास्थ्य सेवाएं का दक्षिण पूर्व रेलवे का दौरा



रेलवे स्वास्थ्य सेवा, रेलवे बोर्ड के महानिदेशक ने डॉ. मान सिंह ने दिनांक 12 अगस्त, 2024 को दक्षिण पूर्व रेलवे केंद्रीय अस्पताल, गार्डनरीच का दौरा किया और दक्षिण पूर्व रेलवे के केंद्रीय और मंडल अस्पतालों के प्रदर्शन की समीक्षा की। केंद्रीय अस्पताल में महानिदेशक के दौरा के समय श्री अनिल कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, डॉ. एम. रवींद्रन, प्रधान कार्यकारी निदेशक (स्वास्थ्य), रेलवे बोर्ड, डॉ. अंजना मल्होत्रा, प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक, प्रमुख विभागों के प्रमुख और अन्य वरिष्ठ डॉक्टर उपस्थित थे।

श्री सिंह ने सेंट्रल हॉस्पिटल गार्डनरीच में एक नवजात गहन देखभाल इकाई (एनआईसीयू) का उद्घाटन किया, जो बीमार या समय से पहले जन्म लेने वाले शिशुओं को चौबीसों घंटे सर्वोत्तम देखभाल प्रदान करेगी।■

एम.ई.टी./एच.टी.एस. प्रदर्शनी में आरडीएसओ, बरेका और चिरेका ने भाग लिया

अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन (आर.डी.एस.ओ.), बनारस रेल इंजन कारखाना तथा चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना ने 4 से 6 सितंबर, 2024 तक मुंबई में आयोजित 5वीं मटेरियल इंजीनियरिंग एण्ड टेकनोलोजी (एमईटी) और हीट ट्रीटमेंट सिम्पोजियम (एचटीएस) प्रदर्शनी में भाग लिया। रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त सदस्य, श्री एस. के. पंकज ने स्टॉलों का दौरा किया और वस्तुओं तथा सूचनाप्रद प्रदर्शन की सराहना की। आर.डी.एस.ओ. टीम का नेतृत्व श्री अनिल कुमार सिंह, कार्यकारी निदेशक/कैरिज, श्री प्रभात आर. शुक्ला, निदेशक/कैरिज की है।

श्री पंकज ने डबल्यू.ए.पी.-7 और डबल्यू.ए.जी.-9 के रनिंग मॉडल्स और बरेका द्वारा प्रदर्शित विभिन्न निर्यात लोकोमोटिव मॉडलों का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में बरेका द्वारा स्क्रैप सामग्री से निर्मित कलाकृतियों, मौजूदा परियोजनाओं, निर्यात लोकोमोटिव और इलेक्ट्रिक इंजनों से संबंधित इन्फोग्राफिक्स बरेका की क्षमताओं के साथ-साथ गैर-रेलवे ग्राहकों के लिए बनाए गए रेल इंजनो,



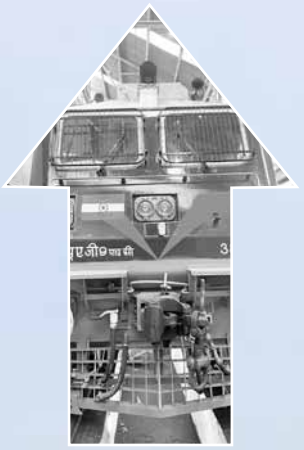
डिजिटल स्टैंडी में प्रदर्शित कॉर्पोरेट फिल्म, फोटोग्राफ और वीडियो को भी खूब सराहा गया।

प्रदर्शनी के दूसरे दिन अपर सदस्य (उत्पादन इकाई) श्री एस के पंकज ने चिरेका स्टॉल का निरीक्षण किया।चिरेका द्वारा प्रदर्शित विभिन्न लोकोमोटिव मॉडलों का अवलोकन किया तथा चिरेका के प्रदर्शनी की सराहना की।■

‘मेक इन इंडिया’ के दमदार दस साल

बढ़ते स्वदेशी उत्पादन का एक दशक

वर्ष 2014 से 2024 तक



9,168

रेल इंजन का उत्पादन



54,826

रेल डिब्बें का उत्पादन



17,68,137

रेल पहिये का उत्पादन





माल ढुलाई के क्षेत्र में भारतीय रेल ने वित्त वर्ष 2024-25 के पहले पांच महीनों में यानी दिनांक 1 अप्रैल से 31 अगस्त, 2024 तक रिकॉर्ड 653.22 मिलियन टन माल ढुलाई कर कीर्तिमान रचा है। पिछले यानी वित्त वर्ष 2023-24 में इसी अवधि के दौरान रेलवे द्वारा 634.68 मिलियन टन माल ढुलाई की गई थी। अगर कोल ढुलाई की बात की जाए तो इस वित्त वर्ष में 31 अगस्त तक 333.40 मिलियन टन कोल ढुलाई की गई है, जबकि पिछले वित्त वर्ष में इसी अवधि के दौरान 266.71 मिलियन टन कोल ढुलाई की गई थी।

इस वित्त वर्ष के पहले पांच महीनों में माल ढुलाई से भारतीय रेल ने कुल ₹71,854.08 करोड़ का राजस्व अर्जित किया है, जबकि पिछले वित्त वर्ष में इसी अवधि के दौरान रेलवे को ₹68,740.49 करोड़ की आय हुई थी।

अगर सिर्फ इस साल के अगस्त महीने की बात करें, तो रेलवे द्वारा कुल माल ढुलाई 126.97 मिलियन टन की गई है, जिससे अगस्त महीने में कुल माल ढुलाई से ₹13,354.31 करोड़ की आय अर्जित की गई है।

भारतीय रेल द्वारा वित्त वर्ष 2023-24 में कुल 1,591 मिलियन टन माल की ढुलाई की गई है। रेलवे सूत्रों के मुताबिक रेलवे के इतिहास में पहली बार इतनी अधिक मात्रा में माल ढुलाई की गई थी। रेलवे ने पिछले वित्त वर्ष में माल ढुलाई से ₹1,68,276 करोड़ का राजस्व अर्जित किया था।

इसके अलावा, कोल ढुलाई के मामले में भी रेलवे ने पिछले वित्त वर्ष में कीर्तिमान स्थापित किया था। भारतीय रेल ने वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान 787.58 मिलियन टन कोल ढुलाई की और एक साल में कोयले की ढुलाई का अब तक का यह सबसे बड़ा आंकड़ा है। कोल ढुलाई से रेलवे को पिछले वित्त वर्ष में ₹86,838 करोड़ की आय हुई है। पिछले वित्त वर्ष में रेलवे द्वारा की गई कुल माल ढुलाई में यह कोल ढुलाई भी शामिल है।

भारतीय रेल की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि रेलवे ने वर्ष 2014 से 2024 तक दस वर्षों की अवधि में 12,661 मिलियन टन माल लदान किया है, जबकि वर्ष 2004 से 2014 के बीच केवल 8,473 मिलियन टन माल लदान ही हो पाया था।

इस प्रकार से देखा जाए तो भारतीय रेल माल ढुलाई का आज सबसे विश्वसनीय साधन बन चुकी है। कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार की नीतियों और रेलवे विभाग की रणनीतियों की बदौलत भारतीय रेल वर्तमान में माल ढुलाई का सबसे प्रमुख माध्यम बन चुकी है। गौरतलब है कि भारतीय रेल द्वारा वर्ष 2030 तक 3000 मिलिटन टन प्रतिवर्ष माल ढुलाई का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

बीते वर्षों में जिस प्रकार से रेलवे नेटवर्क का विस्तार किया गया है और रेल लाइनों का विद्युतीकरण किया गया है, उससे न सिर्फ माल ट्रेनों की गति में बढ़ोतरी हुई है, बल्कि इससे कम समय में अधिक माल की ढुलाई भी संभव हुई है। इस वजह से उद्योगों और व्यवसायों के बीच रेलवे से माल ढुलाई करना काफी लोकप्रिय हो चुका है।■





मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना : रेल पटरियों की फ्लैश बट वेल्डिंग कार्य गुजरात में शुरू



बुलेट ट्रेन परियोजना के गुजरात हिस्से में ट्रैक निर्माण कार्य की प्रक्रिया चल रही है। सूरत और आणंद के पास ट्रैक निर्माण बेस (टीसीबी) स्थापित किये गए हैं। वायडक्ट पर 200 मीटर लंबे पैनल बनाने के लिए रेल की फ्लैश बट वेल्डिंग शुरू हो गई है।

परियोजना के लिए सूरत और वडोदरा में 35,000 मीट्रिक टन से अधिक रेल और ट्रैक निर्माण मशीनरी के चार सेट प्राप्त हुए हैं।

मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना में जापानी शिंकानसेन ट्रैक प्रणाली पर आधारित बैलास्टलेस ट्रैक की जे–स्लैब ट्रैक प्रणाली होगी। यह पहली बार है, जब भारत में जे–स्लैब बैलास्टलेस ट्रैक प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है।

ट्रैक निर्माण की पूरी प्रक्रिया जापानी विनिर्देशों के अनुसार विशेष रूप से डिज़ाइन और निर्मित अत्याधुनिक मशीनों के साथ मशीनीकृत है। मशीनों में रेल फीडर कार, ट्रैक स्लैब बिछाने वाली कार, कैम बिछाने वाली कार और फ्लैश बट वेल्डिंग मशीन शामिल हैं, जिनका उपयोग ट्रैक निर्माण कार्यों के लिए किया जाएगा।

ट्रैक बिछाने से संबंधित कार्यों के निष्पादन की कार्यप्रणाली को समझने के लिए, विभिन्न मॉड्यूलों पर भारतीय इंजीनियरों, वर्क लीडर्स और तकनीशियनों को संबंधित क्षेत्रों के जापानी विशेषज्ञों द्वारा व्यापक प्रशिक्षण और प्रमाणन प्रदान किया जा रहा है।

ट्रैक संबंधी कार्यों के लिए उपयोग की जा रही मशीनों पर अतिरिक्त जानकारी :

फ्लैश बट वेल्डिंग मशीन (एफबीडब्ल्यूएम)

25 मीटर लंबी 60 किलोग्राम जेआईएस रेल को फ्लैश बट वेल्डिंग मशीन (एफबीडब्ल्यूएम) का उपयोग करके वायाडक्ट के ऊपर टीसीबी (ट्रैक निर्माण आधार) के पास 200 मीटर लंबे पैनल बनाने के लिए वेल्ड किया जाता है। अब तक कुल 3 एफबीडब्ल्यूएम खरीदे जा चुके हैं। जेएआरटीएस द्वारा रेल वेल्ड फिनिशिंग और रेल वेल्ड परीक्षण का प्रशिक्षण पूरा हो चुका है।

ट्रैक स्लैब बिछाने वाली कार (टीएसएलसी)

प्रीकास्ट ट्रैक स्लैब को वायडक्ट पर उठाया जाता है, विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए वैगनों पर लोड करके ट्रैक बिछाने के स्थान पर ले जाया जाता है। TSLC का उपयोग करके, जो एक बार में 5 स्लैब संभाल सकता है, ट्रैक स्लैब को RC ट्रैक बेड पर स्थिति में रखा जाता है। आज तक स्लैब बिछाने के काम के लिए 4 TSLC की व्यवस्था की गई है।

रेल फीडर कार (आरएफसी)

200 मीटर लंबे पैनलों को रेल फीडर कार और विशेष वैगनों का उपयोग करके RC ट्रैक बेड पर डाला और बिछाया जाता है। RFC रेल की पटरी (जोड़ी) को RC बेड के ऊपर धकेलेगा और RC ट्रैक बेड पर शुरू में अस्थायी ट्रैक बिछाया जाएगा। अब तक कुल 4 RFC खरीदे जा चुके हैं।

सीमेंट एस्फाल्ट मोर्टार इंजेक्शन कार (सीएएम कार)

आरसी बेड पर उचित स्थान पर ट्रैक स्लैब लगाने के बाद, सीएएम कार समानांतर ट्रैक पर चलती है। यह सीएएम कार सीएएम मिश्रण की सामग्री (डिज़ाइन अनुपात में) को मिलाती है और इस सीएएम मिश्रण को स्लैब के नीचे इंजेक्ट किया जाता है (विशेष रूप से तैयार सीएएम बैग में भरा जाता है) ताकि ट्रैक की आवश्यक लाइन और स्तर प्राप्त हो सके। अब तक 3 सीएएम कारें खरीदी जा चुकी हैं।■



सौर ऊर्जा का उपयोग करने के लिए पश्चिम रेलवे की पहल



पश्चिम रेलवे 2030 तक 'नेट जीरो कार्बन एमिटर' प्राप्त करने के भारतीय रेल के लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध है। पर्यावरण संरक्षण की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए, पश्चिम रेलवे हरित और नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में बड़े कदम उठा रही है। पश्चिम रेलवे अपनी बिजली आवश्यकताओं के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग कर रही है और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। अगस्त 2024 तक पश्चिम रेलवे के सभी 6 मंडलों में 229 स्थानों (136 स्टेशनों और 93 सेवा/कार्यालय भवनों/शेड/कारखानों) पर 13.08 MWp के सौर पैनल लगाए जा चुके हैं। इनमें मुंबई सेंट्रल मंडल पर 50 स्थान, वडोदरा मंडल पर 35 स्थान, रतलाम मंडल पर 60 स्थान, अहमदाबाद मंडल पर 16 स्थान, राजकोट मंडल पर 34 स्थान और भावनगर मंडल पर 34 स्थान शामिल हैं। इससे राजस्व की भी काफी बचत हुई है। यह लगभग 5.25 लाख पेड़ों की कार्बन अवशोषण क्षमता के बराबर है।

पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में पश्चिम रेलवे के 6 मंडलों पर सौर पैनलों ने 12.36 एमयू (मिलियन यूनिट) बिजली पैदा की है, जो 9,888 टन से अधिक कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के बराबर है और इसके परिणामस्वरूप कुल ₹6.43 करोड़ की बचत हुई है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 (अगस्त तक) के दौरान, 5.82 एमयू (मिलियन यूनिट) बिजली का सौर ऊर्जा उत्पादन हुआ, जो 4,655 टन से अधिक कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के बराबर है और इसके परिणामस्वरूप कुल ₹3.33 करोड़ की बचत हुई है।

इसके अलावा, पश्चिम रेलवे ने हरित ऊर्जा संसाधनों के हिस्से के रूप में सौर जल हीटर, सौर स्ट्रीट लाइट, एलसी गेटों पर सौर पैनल उपलब्ध कराए हैं। इसके अलावा, पश्चिम रेलवे कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के राष्ट्र के मिशन को प्राप्त करने के लिए अधिकतम सीमा तक सभी भवनों में सौर संयंत्र स्थापित करने की योजना बना रही है।■

पश्चिम रेलवे ने 320 स्टेशनों को इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम से किया सुसज्जित

पश्चिम रेलवे ने 320 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम शुरू किया है जो ट्रेन की आवाजाही पर सटीक नियंत्रण सुनिश्चित करता है और मानवीय त्रुटि की संभावना को समाप्त करता है।

पश्चिम रेलवे क्रमिक रूप से सभी विद्युत सिग्नलिंग प्रतिष्ठानों को नए कंप्यूटर आधारित इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम से बदल रही है। अब तक 513 इंटरलॉक्ड स्टेशनों में से 320 स्टेशनों को यूनिवर्सल फेल सेफ ब्लॉक इंस्ट्रूमेंट के साथ कंप्यूटर आधारित इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली प्रदान की गई है। शेष स्टेशन भी निकट भविष्य में एडवांस इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) प्रणाली से लैस होंगे। EI सिग्नल, पॉइंट और लेवल-क्रॉसिंग गेटों को नियंत्रित करने के लिए कंप्यूटर-आधारित सिस्टम और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करता है। पारंपरिक विद्युत रिले इंटरलॉकिंग सिस्टम के विपरीत जहाँ असंख्य तारों और रिले का उपयोग किया जाता है, EI इंटरलॉकिंग लॉजिक का प्रबंधन करने के लिए सॉफ्टवेयर और इलेक्ट्रॉनिक घटकों का उपयोग करता है। यह यार्ड में सिग्नलिंग गियर से प्राप्त इनपुट को पढ़ता है और ऑपरेशनल कंसोल (VDU) से प्राप्त आदेशों को फेल-सेफ तरीके से संसाधित करता है।



इस तकनीक से कई लाभ हुए हैं, जिसका सुरक्षा पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है और साथ ही ट्रेनों की गति बढ़ाने में भी मदद मिली है। यह प्रणाली परस्पर विरोधी मार्गों, गलत सिग्नल या मानवीय चूक के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करती है। इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग को कवच तकनीक के साथ-साथ सेंट्रलाइज्ड ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम (CTC) के साथ भी जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, यह कुशल कामकाज में भी सक्षम है जिससे परिचालन का समय कम हो गया है।■

क्षेत्रीय रेल एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने जगजीवन राम अस्पताल में अत्याधुनिक डीएसए कैथ लैब का किया उद्घाटन



पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्रा ने दिनांक 15 अगस्त, 2024 को पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल (JRH) में अत्याधुनिक डिजिटल सबट्रैक्शन एंजियोग्राफी (DSA) कैथ लैब का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक (PCMD) डॉ. अनुराधा कोंडा, प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक (PCMM) श्री महेश चंद्र, मुंबई सेंट्रल के मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज वर्मा, जगजीवन राम अस्पताल की चिकित्सा निदेशक डॉ. ममता शर्मा और वरिष्ठ रेल अधिकारी भी उपस्थित थे।

जगजीवन राम अस्पताल का कार्डियोलॉजी विभाग 2012 से उन्नत स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रहा है और इसने लगभग 16,000 कार्डियक और गैर-कार्डियक प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिससे इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल हुई हैं।



पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री मिश्र ने नेशनल एक्रीडिटेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स (NABH) एक्रिडिटेशन प्रक्रिया के दौरान उत्कृष्ट कार्य के लिए जगजीवन राम अस्पताल के 70 कर्मचारियों को शील्ड और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। जगजीवन राम अस्पताल ने प्रतिष्ठित एनएबीएच मान्यता प्राप्त करने वाला भारतीय रेल का पहला अस्पताल होने का गौरव प्राप्त किया है।■

पू. सी. रेलवे ने ट्रेनों में अत्याधुनिक जल स्तर निगरानी प्रणाली शुरू की



दिनांक 16 अगस्त, 2024 को कामाख्या रेलवे स्टेशन पर ब्रह्मपुत्र मेल एक्सप्रेस में पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव द्वारा ट्रेनों में एक अत्याधुनिक जल स्तर निगरानी प्रणाली का उद्घाटन किया गया। यह अभिनव प्रणाली लंबी दूरी की ट्रेनों पर जल प्रबंधन में एक बड़ा कदम है, जिसे यात्रियों के लिए निरंतर और विश्वसनीय पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।■

गृह मंत्रालय द्वारा बरेका के 8 कर्मचारी नागरिक सुरक्षा संगठन में उत्कृष्ट कार्यों के लिए पुरस्कृत



दिनांक 28 अगस्त, 2024 को गृह मंत्रालय द्वारा बनारस रेल इंजन कारखाना में कार्यरत एवं नागरिक सुरक्षा संगठन से जुड़े 8 सदस्यों सर्वश्री संतोष कुमार, एस. गुरुराजन, एस.के. श्रीवास्तव, सुधीर कुमार दुबे, दिनेश धर दुबे, सुरेश कुमार, प्रदीप कुमार तिवारी एवं संजय कुमार रावत को नागरिक सुरक्षा संगठन में बेहतरीन बचाव, अग्निशमन एवं सामाजिक कार्यों में समय-समय पर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने हेतु, महानिदेशक, नागरिक सुरक्षा पुरस्कार-2023 से रेल मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।■

ऑटोमेटिक ट्रेन एक्जामिनेशन सिस्टम : पू. सी. रेलवे द्वारा संरक्षा बढ़ोतरी की ओर एक और कदम



पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने न्यू जलपाईगुड़ी में अपने रोलिंग इन और रोलिंग आउट एक्जामिनेशन प्वाइंट पर पहली बार एक प्रोटोटाइप ऑटोमेटिक ट्रेन एक्जामिनेशन सिस्टम (एटीईएस) स्थापित किया है। एटीईएस एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित तकनीक है, जिसमें रोलिंग स्टॉक की छवियों और वीडियो जैसे विजुअल डेटा को कैप्चरिंग, प्रसंस्करण और विश्लेषण करना शामिल है।

एटीईएस यूनिट 4 कैमरों और 4 सेंसरों से लैस है, जो रेलवे ट्रैक के दोनों तरफ लगाए गए हैं। जैसे ही ट्रेन पटरियों के इस हिस्से से गुजरती है, सभी कैमरे और सेंसर सक्रिय हो जाते हैं और वे ट्रेन की प्रत्येक गतिविधियों पर निगरानी रखते हैं। इस प्रकार, सेंसर द्वारा ट्रेन के एक्सल बॉक्स बियरिंग के साथ-साथ पहिये का तापमान दर्ज किया जाता है। जैसे ही तापमान अपनी अधिकतम सीमा से अधिक हो जाता है, सिस्टम द्वारा अलर्ट संदेश उत्पन्न होते हैं। किसी भी त्रुटि का शीघ्र पता लगाने से समय पर रखरखाव एवं मरम्मत, ट्रेन संरक्षा में सुधार और किसी भी अप्रिय घटनाओं के जोखिम को कम करने की अनुमति मिलती है। एटीईएस वैगनों की कोच संख्या की पहचान भी कर सकता है, जिसका उपयोग ट्रेन समय-सारणी के प्रबंधन और सुधार के लिए किया जा सकता है। कोच संख्या पहचान को एक्सल नंबर की जानकारी के साथ समन्वयित किया जा सकता है, जो अधिक विस्तृत डेटा प्रदान करता है। एटीईएस स्वचालित रूप से ट्रेन के दरवाजों का निरीक्षण कर यह पता लगा सकता है कि वे खुले या बंद हैं या फिर उसे कोई क्षति तो नहीं पहुँची है। वास्तविक समय के आधार पर दरवाजों की स्थिति की निगरानी कर सिस्टम ट्रेन ऑपरेटरों एवं अनुरक्षण कर्मियों को संभावित संरक्षा खतरों और अनुरक्षण की आवश्यकता के बारे में सचेत एवं संरक्षा सुनिश्चित कर सकता है और सेवा व्यवधान को रोक सकता है। वर्तमान में एटीईएस पर्यवेक्षण चरण में है और इसकी कार्य प्रणाली में निरंतर सुधार किया जाएगा। यह रोलिंग स्टॉक हेल्थ मॉनिटर उच्च विश्वसनीयता और लागत दक्षता के साथ ट्रेन परिचालन के संरक्षा में सुधार करने में लाभकारी होगा। एक बार पूर्ण रूप से चालू हो जाने पर, यह प्रणाली ट्रेन के संभावित खतरों को काफी हद तक कम कर देगी।■



संरक्षा के सजग प्रहरी को महाप्रबंधक ने सम्मानित किया



दिनांक 2 अगस्त, 2024 को रायपुर मंडल में कार्यरत संरक्षा कोटि के 2 कर्मचारियो को उनके उत्कृष्ट एवं सराहनीय संरक्षा सबंधी कार्य निष्पादन के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की महाप्रबंधक सुश्री नीनु इटियेरा के द्वारा सम्मानित किया गया। रायपुर रेल मंडल के ट्रैक मेंटेनर ग्रेड-II, तिल्दा श्री आदित्य कुमार दास ने दिनांक 27 जून, 2024 को समपार संख्या 395 (कि.मी.- 786/31-33) में गेटकीपर की ड्यूटी के दौरान अप लाइन में जा रही एक लॉन्ग हॉल ट्रेन में हॉट एक्सल की घटना को देखा और उन्होने त्वरित कार्यवाही करते हुए इसकी सूचना वहाँ कार्यरत स्टेशन मास्टर, तिल्दा को दी। और ट्रेन को तिल्दा स्टेशन पर आवश्यक सुधार कार्य करने के बाद ट्रेन को सुरक्षित रूप से रवाना किया गया।

इसी प्रकार श्री दीनबंधु, ट्रैक मेंटेनर ग्रेड-IV, बालोद ने दिनांक 21 जून, 2024 को समपार संख्या डी डी-39 (कि.मी.-910/7-8) में गेटकीपर की ड्यूटी के दौरान लाटाबोर से गुंडरदेही जा रही ट्रेन संख्या DBC-243 में हॉट एक्सल की घटना को देखा था, उन्होने त्वरित कार्यवाही करते हुए इसकी सूचना वहाँ कार्यरत स्टेशन मास्टर, लाटाबोर को देकर एक बड़ी दुर्घटना होने से बचाया। इस प्रकार श्री दास ओर दीनबंधु की सजगता एवं सतर्कता से ट्रेन परिचालन में संरक्षा सुनिश्चित हुई।■

सभी टिकट काउंटरों पर मिलेगी ऑनलाइन भुगतान हेतु क्यूआर कोड की सुविधा

रेल यात्रियों को आसानी से यात्रा टिकट उपलब्ध कराना रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। इस दिशा में रेलवे द्वारा डिजिटल तकनीकों के समावेश के साथ नित नये-नये उपाय किए जा रहे हैं, जिनमें आरक्षित टिकटों की बूकिंग के लिए मोबाइल टिकटिंग प्रणाली एवं अनारक्षित टिकटों की खरीदी के लिए यूटीएस ऑन मोबाइल एप को अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है। रेल यात्रियों को आसानी से यात्रा टिकट उपलब्ध कराने के लिए दी जा रही इन सुविधाओं की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में आरक्षित और अनारक्षित टिकट काउंटरों में क्यूआर कोड डिवाइस के माध्यम से ऑनलाइन डिजिटल भुगतान सुविधा की पहल की गई है।

इसके तहत आरक्षित एवं अनारक्षित टिकट काउंटरों से यात्रा टिकट खरीदने वाले यात्रियों को कम समय में आसानी से यात्रा टिकट उपलब्ध कराने एवं चिल्हर की समस्या से निजात दिलाने तथा डिजिटल भुगतान की सुविधा को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 500 क्यूआर कोड डिवाइस उपलब्ध कराये गए है। इस प्रकार ये क्यूआर कोड डिवाइस बिलासपुर रेल मंडल के अंतर्गत 205 टिकट काउंटरों, रायपुर रेल मंडल के अंतर्गत 95 टिकट काउंटरों तथा नागपुर रेल मंडल के अंतर्गत 200 टिकट काउंटरों में लगाए जाएंगे। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के इन सभी आरक्षित और अनारक्षित टिकट काउंटरों में सितंबर, 2024 तक ये सभी क्यूआर कोड डिवाइस लगा दिये जाएंगे और यात्रियों



को इस सुविधा का लाभ मिलने लगेगा। हालांकि वर्तमान में भी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के कुछ स्टेशनों पर अनारक्षित टिकट काउंटरों में क्यूआर कोड की सुविधा डीडीआईएस (Dual Display Information System) में दिया गया है। क्यूआर कोड, यूपीआई, एटीवीएम व यूटीएस ऑन मोबाइल एप जैसी सभी सुविधाएं रेल यात्रियों को बिना लंबी लाइन लगे त्वरित यात्रा टिकट दिलाने के साथ ही साथ आसान डिजिटल भुगतान सुविधा सहित चेंज, खुल्ले पैसे आदि की दिक्कतों से भी राहत दिलाने के लिए शुरू की गई है। सभी यात्रियों से आग्रह है कि इस सुविधा का अधिकाधिक लाभ उठायें और अपनी यात्रा को सुगम व आसान बनायें।■

भारतीय
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

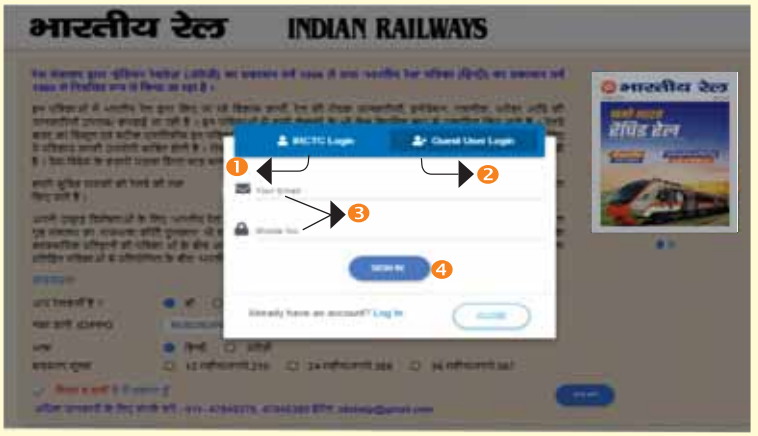
आप सीधे
www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn
पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग–इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

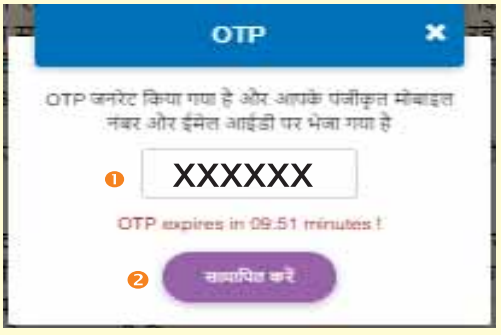


❷ लॉग–इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग–इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई–मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई–मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट–वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

रेल
प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

STEP 2

1. यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।
2. यदि 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।
3. 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेल' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।
4. इलेक्ट्रॉनिक मैग्जीन के लिए, ई–मैग्जीन पर क्लिक करें और हार्ड पत्रिका के लिए, फिजिकल बुक पर क्लिक करें
5. एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



6. नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

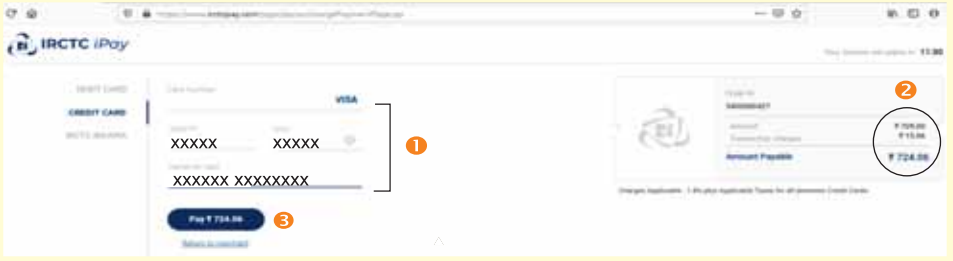
STEP 4



1. अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें

2. सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7



1. पेमेंट मोड की डीटेल भरें
2. पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
3. संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।

➲ बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

मिजोरम में भैरबी और होरटोकी के बीच नवनिर्मित रेलवे लाइन पर ट्रेन परिचालन को सीआरएस द्वारा किया गया अधिकृत



पूर्व रेल संरक्षा आयुक्त (सीआरएस), श्री सुमित सिंघल ने 22 अगस्त, 2024 को भैरबी और होरटोकी के बीच 16.725 कि.मी. बिछाई गई नई बीजी लाइन पर माल और यात्रीवाही ट्रेनों के परिचालन को अधिकृत किया। यह सेक्शन वर्तमान में चल रही 51.38 कि.मी. लंबी भैरबी-साईरंग नई रेल लाइन परियोजना का हिस्सा है। सफल निरीक्षण और स्पीड ट्रायल के बाद सीआरएस ने बिछाई गई नई रेलवे लाइन पर अधिकतम 75 कि.मी. प्रति घंटे की गति से ट्रेनों के परिचालन को मंजूरी दी है। बिछाई गई यह नई लाइन इस मार्ग से और अधिक माल एवं यात्री परिवहन में सहायक होगी।

भैरबी और होरटोकी के बीच नवनिर्मित बीजी लाइन सेक्शन में 20 बड़े पुल और 27 छोटे पुल हैं और इसमें 03 रोड ओवर ब्रिज और एक रोड अंडर ब्रिज भी शामिल हैं। इस नए सेक्शन में 13 सुरंग, कवर्ड मार्ग हैं। औसत वार्षिक वर्षा 2112.823 मि.मी. के साथ यह सेक्शन भूकंपीय क्षेत्र-V में आता है। मुख्य लाइन में अधिकतम 100 कि.मी. प्रति घंटे और लूप लाइनों में 30 कि.मी. प्रति घंटे की गति से ट्रेन संचालन हेतु इस सेक्शन का निर्माण किया गया है। इस सेक्शन में कुल 27.03% कर्वड ट्रैक है। ब्रिज संख्या 40 और 42 को बलास्ट रहित ट्रैक प्रदान किया गया है और पूरे सेक्शन में समपार फाटक नहीं है। सेक्शन को एमएसीएल सिग्नल सिस्टम के साथ इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रदान किया गया है। स्टेशनों के बीच संचार के लिए 25 वाट वीएचएफ के साथ ओएफसी सिस्टम होगा। होरटोकी रेलवे स्टेशन पर नया फुट ओवर ब्रिज, द्वितीय श्रेणी का प्रतीक्षालय, कवर्ड प्लेटफॉर्म्स, महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग शौचालय उपलब्ध कराए गए हैं।

भैरबी-साईरंग रेलवे परियोजना में दुर्गम क्षेत्रों में कई सुरंगों और पुलों का निर्माण कार्य शामिल हैं। इस परियोजना में सुरंगों की कुल लंबाई 12853 मीटर है। परियोजना में कुल 55 बड़े पुल और 89 छोटे पुल होंगे। साईरंग स्टेशन के पहुँच पर पुल संख्या 196 के स्तंभ पी-4 का निर्माण कार्य भी पूरा हो चुका है, जो परियोजना का सबसे ऊंचा स्तंभ है। इसकी ऊंचाई 104 मीटर है, जो कुतुब मीनार से 42 मीटर ऊंचा है। इस परियोजना में चार स्टेशन होंगे- होरटोकी, कौनपुई, मुआलखांग और साईरंग।

परियोजना पूरी होने पर, 51.38 कि.मी. लंबी भैरबी-साईरंग नई रेल परियोजना मिजोरम के लोगों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगी, क्षेत्र में लघु उद्योगों को विकसित करने में मदद करेगी और राज्य के पर्यटन को बढ़ावा प्रदान करेगी। इस परियोजना से स्थानीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस पहाड़ी राज्य में यात्रियों और विभिन्न सामग्रियों एवं वस्तुओं के परिवहन पर होने वाले खर्च में काफी कमी आयगी। मिजोरम की राजधानी और असम के आस-पास के स्थानों के बीच यात्रा का समय काफी कम हो जाएगा। इस क्षेत्र के लोगों को देश भर में लंबी दूरी की पहुँच और आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति मिलेगी।■

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 4 स्टेशनों में जनऔषधि केंद्र शुरू



रेलवे स्टेशनों पर आने वाले यात्रियों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ाने के प्रयास में, भारतीय रेल ने स्टेशनों के सर्कुलेटिंग क्षेत्रों और कॉन्कोर्स में प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र (पीएमबीजेके) स्थापित करने के लिए एक नीतिगत ढाँचे की संकल्पना की है, जो लाइसेंसधारियों द्वारा संचालित किया जाएगा। प्रथम पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 4 स्टेशनों की पहचान की गई है, जिसमें नैला, पेन्ड्रा रोड, नागभीड़ और नैनपुर स्टेशनों में जनऔषधि केंद्र की सुविधा शुरू की गयी है। इसी प्रकार दूसरे पायलट फेस के अंतर्गत दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 3 स्टेशनों बिलासपुर, अनूपपुर और नेताजी सुभाष चंद्र बोस (इतवारी) स्टेशनों पर कार्य प्रगति में है।■

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में 89वीं अखिल भारतीय रेल एथलेटिक चैंपियनशिप - 2024 का सफल आयोजन



विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान करते आरेडिका के महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्रा

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में दिनांक 9 से 11 अगस्त, 2024 तक 89वीं अखिल भारतीय रेल एथलेटिक चैंपियनशिप–2024 का आयोजन किया गया। कुल 48 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं, जिसमें प्रमुख हैं डिस्कस थ्रो, जैवेलिन थ्रो, हैमर थ्रो, ट्रिपल जम्प, दौड़, लम्बी कूद, ऊँची कूद, वाक, शॉटपुट, एवं पोलवॉल्ट, आदि। इस चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट का पुरस्कार पूर्व रेलवे की लिली दास को मिला वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुष एथलीट के विजेता मध्य रेल के तेजस शिर्से रहे। टीम चैंपियनशिप महिला की विजेता ईस्टर्न रेलवे एवं उप विजेता दक्षिण रेलवे की टीम रही। टीम चैंपियनशिप पुरुष की विजेता दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं उप विजेता मध्य रेल की टीम रही।

बरेका के कर्मचारी श्री रोहित यादव ने 76.20 मीटर भाला प्रक्षेप कर रजत पदक जीता, जबकि श्री अजय कुमार बिंद ने 1,500 मीटर दौड़ को 3:46:65 समय में पूरा कर कांस्य पदक हासिल किया।

आरेडिका के महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्रा ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किए। आरेडिका की मुनीता प्रजापति ने 20 कि.मी. महिला वाक में स्वर्ण पदक, सोमनाथ ने 800 मीटर में स्वर्ण पदक, 35 कि.मी. वाक में पायल ने स्वर्ण पदक एवं नन्ही ने 400 मीटर हर्डल दौड़ में रजत पदक जीता। आरेडिका ने 4x400 मीटर मिश्रित रिले दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।



दक्षिण पश्चिम रेलवे की टीम

दक्षिण पश्चिम रेलवे ने इस चैंपियनशिप का खिताब जीता, दक्षिण रेलवे उपविजेता रही और पश्चिम रेलवे दूसरी उपविजेता रही। समग्र चैंपियनशिप के अलावा, दपरे ने व्यक्तिगत श्रेणियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। दपरे ने पुरुष टीम चैंपियनशिप भी जीती, जबकि महिला टीम ने द्वितीय रनर–अप ट्रॉफी अर्जित की। दपरे ने कुल 20 पदक हासिल किए हैं, जिसमें 2 स्वर्ण पदक, 6 रजत पदक और 12 कांस्य पदक शामिल हैं।



इस चैंपियनशिप में उत्तर मध्य रेलवे की टीम ने कुल 06 पदक अपने नाम किए। इस प्रतियोगिता में अजीत कुमार, ने 5,000 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान ग्रहण किया। रमनदीप कौर ने 35 कि.मी. पैदल चाल में द्वितीय स्थान ग्रहण किया। धीरेन्दर यादव ने पोलवाट में 4.50 मीटर की छलांग लगाकर तृतीय स्थान ग्रहण किया। भूपेन्दर सिंह ने ऊँची कूद में तृतीय स्थान ग्रहण किया। ऐजाज अहमद ने हैमर थ्रो में हैमर को 54.25 मीटर फेक कर तृतीय स्थान ग्रहण किया।■

70वीं अखिल भारतीय अंतर रेलवे टेबल टेनिस चैंपियनशिप संपन्न



पूर्वोत्तर सीमा रेलवे खेलकूद संघ द्वारा आयोजित 70वीं अखिल भारतीय अंतर रेलवे टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2024-25 (पुरुष और महिला) दिनांक 16 अगस्त, 2024 को सफलतापूर्वक संपन्न हुई। समापन समारोह में उपस्थित पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने एनएफआरएसए के अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विजेताओं को ट्रॉफी और पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। 12 अगस्त को शुरू हुई इस चैंपियनशिप में 13 पुरुष टीम और 6 महिला टीमों ने भाग लिया, जिसमें देश भर से भारतीय रेल के विभिन्न जोनों का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 180 खिलाड़ी, रेफरी और कोच शामिल थे। इस आयोजन में पुरुष और महिला टीम चैंपियनशिप के साथ-साथ पुरुष और महिला एकल चैंपियनशिप सहित कई श्रेणियों में प्रतियोगिताएं हुईं। सभी प्रतिभागी जोनों में से दक्षिण पूर्व रेलवे पुरुष और महिला दोनों टीम चैंपियनशिप में विजेता बनी। महिला एकल वर्ग में, पश्चिम रेलवे की अनुषा कुटुंबले ने पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की टेकमी सरकार को हराकर चैंपियनशिप का खिताब जीता। पुरुष एकल वर्ग में, पूर्व रेलवे के रोनित भांजा दक्षिण पूर्व रेलवे के जीत चंद्र को हराकर चैंपियन बने।■

अखिल भारतीय अंतर रेल पॉवर लिफ्टिंग चैंपियनशिप का आयोजन

20वीं पुरुष एवं 14वीं महिला अखिल भारतीय अंतर रेल पॉवर लिफ्टिंग चैंपियनशिप 2024 का आयोजन दिनांक 5 से 9 जुलाई, 2024 तक महालक्ष्मी स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, मुंबई में किया गया था। इस प्रतियोगिता में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे खेल संघ की पॉवर लिफ्टिंग टीम ने 46 अंक अर्जित कर रनर-अप का खिताब अपने नाम किया। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, महाप्रबंधक सुश्री नीनु इटियेरा ने टीम के खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें बधाई दी।■



63वीं नेशनल ओपन एथलेटिक चैंपियनशिप





दिनांक 30 अगस्त से 2 सितंबर, 2024 तक बेंगलूरु, कर्नाटक में आयोजित 63वीं नेशनल ओपन एथलेटिक चैंपियनशिप में बनारस रेल इंजन कारखाना के कर्मचारी श्री रोहित यादव ने 79.31 मीटर भाला प्रक्षेप कर कांस्य पदक जीता। रोहित यादव को बरेका महाप्रबंधक श्री एस.के. श्रीवास्तव, बरेका खेलकूद संघ महासचिव श्री सुनील कुमार, उप महाप्रबंधक श्री अनुज कटियार, वरिष्ठ क्रीड़ा अधिकारी श्री बहादुर प्रसाद, जन संपर्क अधिकारी श्री राजेश कुमार ने हार्दिक बधाई दीं।■

71वीं अखिल भारतीय इंटर रेलवे बैडमिंटन चैंपियनशिप



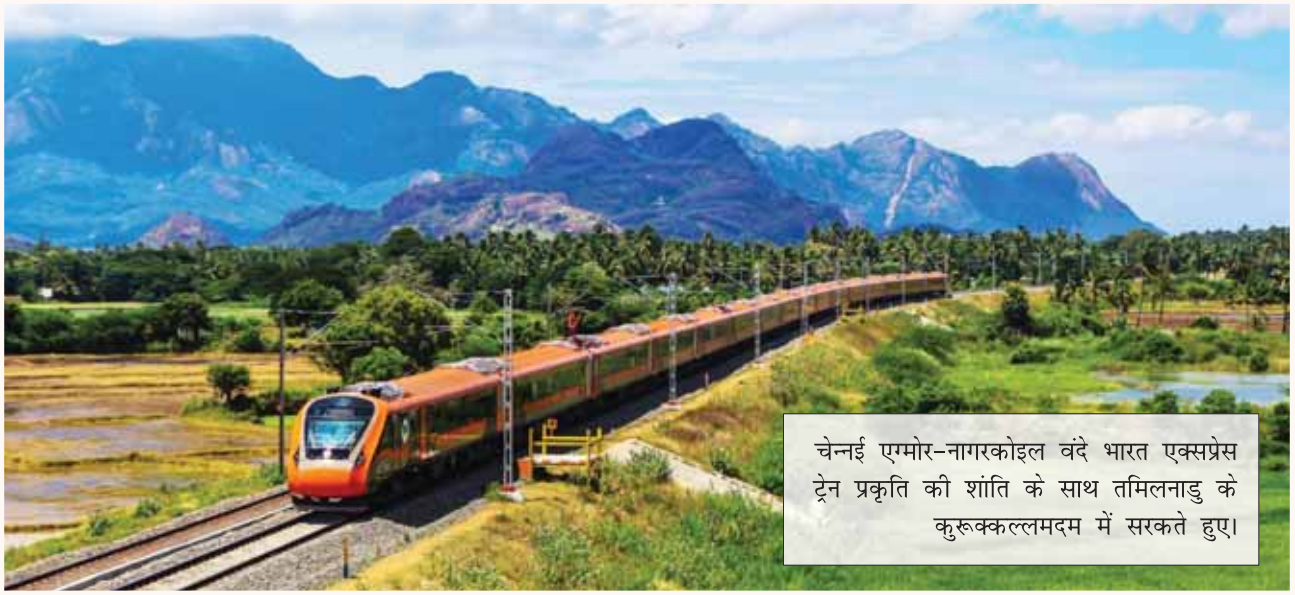
श्री योगेश मोहन, डीआरएम, बेंगलुरु डिविजन और बेंगलुरु मंडल स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष ने 71वीं अखिल भारतीय इंटर रेलवे बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दक्षिण पश्चिम रेलवे ने बैडमिंटन टीम के सदस्यों को बधाई दी। एसडब्ल्यूआर बैडमिंटन टीम में बेंगलुरु मंडल के शंकर, पृथ्वी, डेनियल, उपेंद्र, श्री गिरीश, गणेश, सिद्धार्थ और नितिन शामिल थे, जिन्होंने टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता। पुरुष युगल वर्ग में शंकर प्रसाद और साई प्रतीक विजेता के रूप में उभरे, जबकि पृथ्वी रॉय और गणेश विट्ठलजी ने कांस्य पदक जीता।■

तस्वीर दीर्घा



कुलेम, गोवा की ओर यात्रा करते हुए एक ट्रेन राजसी दूधसागर झरने के चमकदार धाराओं को पार करते हुए।

तस्वीर साभार : रेल विजार्ड

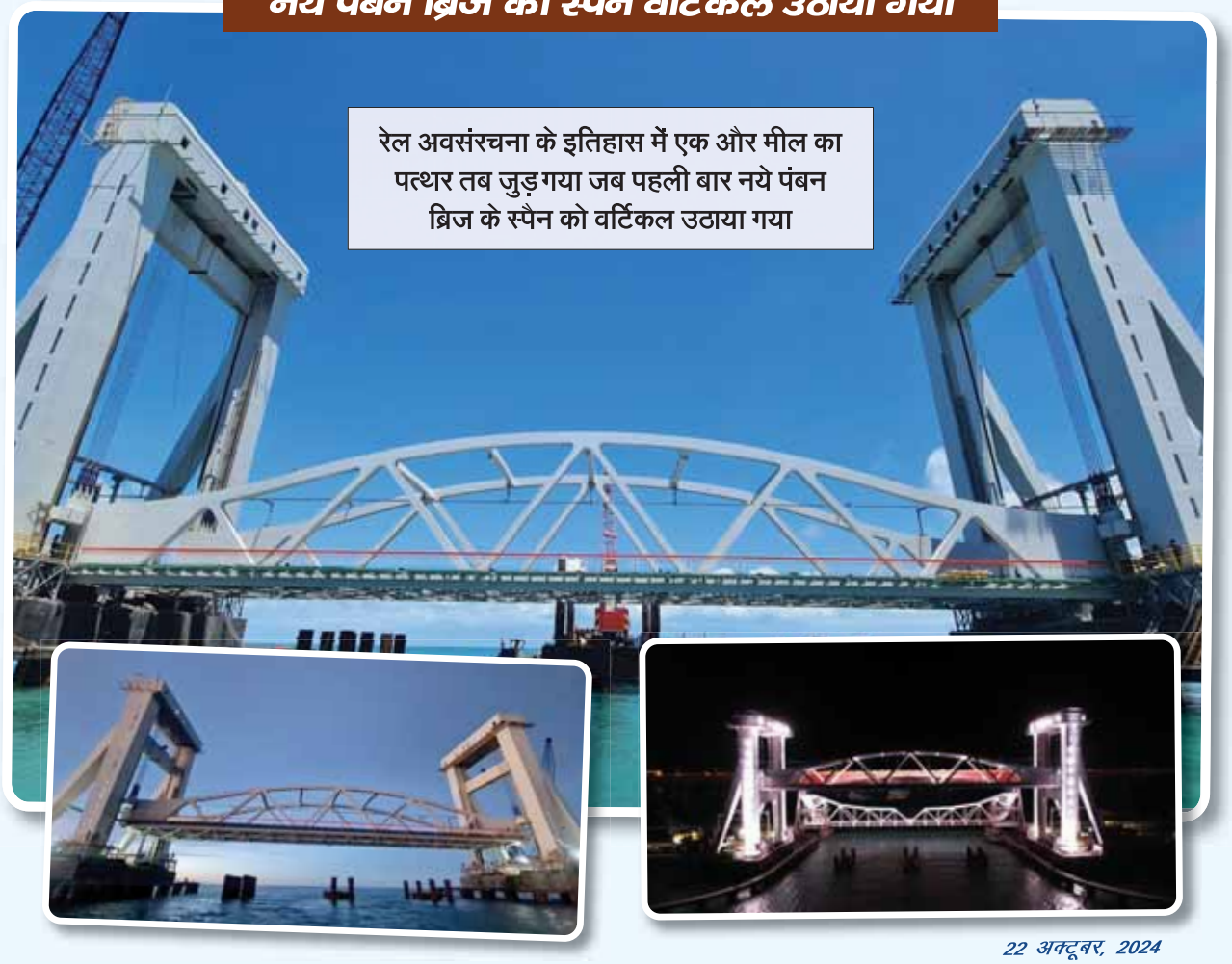


चेन्नई एग्मोर-नागरकोइल वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन प्रकृति की शांति के साथ तमिलनाडु के कुरूक्कल्लमदम में सरकते हुए।

प्रगति रिपोर्ट

नये पंबन ब्रिज का स्पेन वर्टिकल उठाया गया

रेल अवसंरचना के इतिहास में एक और मील का पत्थर तब जुड़ गया जब पहली बार नये पंबन ब्रिज के स्पैन को वर्टिकल उठाया गया



22 अक्टूबर, 2024

अहमदाबाद बुलेट ट्रेन स्टेशन, गुजरात



अप्रैल 2023

ऐसे शुरू हुआ



अगस्त 2024

ऐसे चल रहा है

कार्य पूर्ण

- ढ़ांचा निर्माण कार्य
- परिसर एवं रेल स्लैब
- स्टेशन का कार्य पूर्णता की ओर



260 मीटर लंबा प्रीस्ट्रेस्ड कंक्रीट पुल अब गुजरात के नवसारी में एनएच–48 पर फैला हुआ है, जो सूरत और बिलिमोरा बुलेट ट्रेन स्टेशनों के बीच स्थित है

6 सितम्बर, 2024



गुजरात के नवसारी जिले में कावेरी नदी पुल सफलतापूर्वक पूरा हो गया है। 120 मीटर तक फैला यह महत्त्वपूर्ण पुल मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के हिस्से के रूप में वापी और बिलिमोरा बुलेट ट्रेन स्टेशनों को जोड़ता है

9 सितम्बर, 2024



गुजरात के वडोदरा में कास्टिंग यार्ड में एक 1000वां फुल–स्पैन गर्डर लगाया गया।

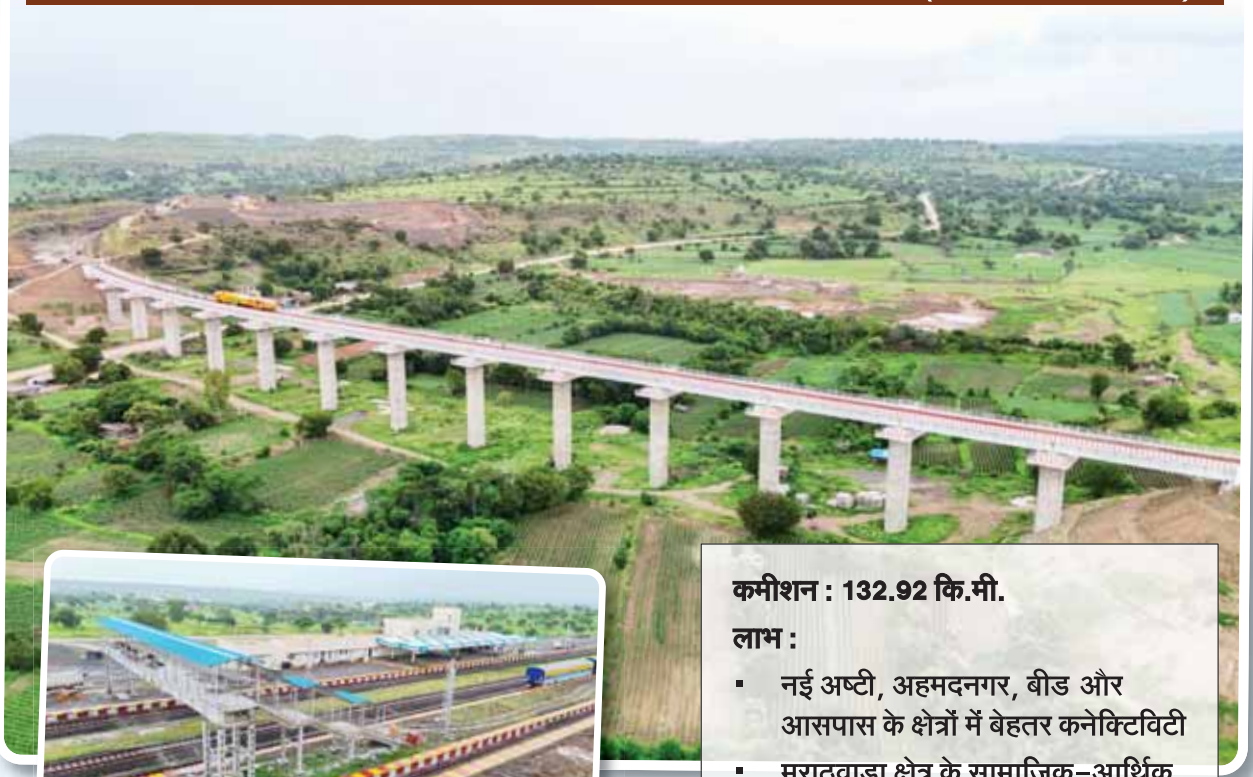
22 सितम्बर, 2024



गुजरात में मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन वायाडक्ट पर 1,75000 से अधिक थे ध्वनि अवरोधक स्थापित किया गया है। प्रत्येक 1 कि.मी. की दूरी पर 2,000 ध्वनि अवरोधक लगाए गए। जिनमें से 87.5 कि.मी. पर ध्वनि अवरोधक पहले ही स्थापित किए जा चुके हैं।

25 सितम्बर, 2024

अहमदनगर–बीड–परली नई रेल लाइन परियोजना (261.25 कि.मी.)



कमीशन : 132.92 कि.मी.

लाभ :

- नई अष्टी, अहमदनगर, बीड और आसपास के क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी
- मराठवाड़ा क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देना

5 सितम्बर, 2024

न्यू बोंगाईगाग्रव–अगथोरी वाया रंगिया दोहरीकरण परियोजना (142.97 किमी)



लम्बाई : 108.68 कि.मी.

लाभ :

- बारपेटा, नलबाड़ी, रंगिया से गुवाहाटी तक की यात्रा आसान
- बोंगाईगाँव, चिरांग, बारपेटा, नलबाड़ी, बक्सा और कामरूप जिलों के स्थानीय शिल्प कौशल को बढ़ावा देना

12 सितम्बर, 2024

अनूपपुर–कटनी तीसरी रेल लाइन परियोजना (165.5 कि.मी.)



101 कि.मी. रेल लाइन चालू

पूरा होने पर :

- छत्तीसगढ़ से कटनी होते हुए कोयला परिवहन को बढ़ावा
- छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के बीच यातायात प्रवाह को आसान बनाना
- बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के लिए पर्यटन को बढ़ावा

7 सितम्बर, 2024

भैरबी–हॉर्टोकी रेल खंड (16.725 कि.मी.)



भैरबी–सैरंग रेल लाइन परियोजना का भाग 51.38 कि.मी.

लाभ :

- कनेक्टिविटी बढ़ेगी
- मिजोरम में पर्यटन को बढ़ावा
- लघु उद्योगों को प्रोत्साहन

11 सितम्बर, 2024

सूरत-वडोदरा खंड में तापी नदी पर स्टील पुल



पश्चिमी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर के सूरत-वडोदरा खंड में तापी नदी पर स्टील पुल भारतीय रेल की कनेक्टिविटी और प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

28 अगस्त, 2024

न्यू पालनपुर-न्यू मकरपुरा खंड कनेक्टिविटी और माल ढुलाई को बढ़ावा देता है

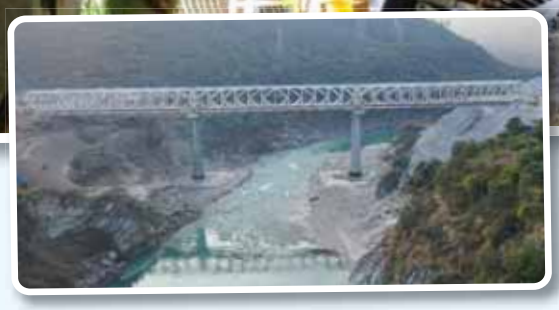


समर्पित गलियारों में कुशल माल ढुलाई को चलाते हुए, पश्चिमी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर के न्यू पालनपुर-न्यू मकरपुरा खंड पर नर्मदा नहर पर 145.5 मीटर डबल लाइन पुल कनेक्टिविटी और माल परिवहन को बढ़ावा देता है।

13 सितम्बर, 2024

ऋषिकेश–कर्णप्रयाग नई बीजी रेल लाइन परियोजना (125.20 कि.मी.)





कार्य प्रगति पर है :

- 11 स्टेशनों का निर्माण
- सुरंग का काम : 176 कि.मी./213 कि.मी.

लाभ :

- चार धाम से कनेक्टिविटी को समृद्ध करेगा
- 5 जिलों में रेल कनेक्टिविटी को बढ़ावा

13 सितम्बर, 2024

आप सबका भारतीय रेल के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

ई-मेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री/लेख की जानकारी ई-मेल द्वारा दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकसित हो रहे रेलवे स्टेशन

मोदी नगर रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश



अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत उत्तर प्रदेश के मोदी नगर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का कार्य तेजी से किया जा रहा है। स्टेशन परिसर का कायाकल्प करने के साथ ही यहाँ दिव्यांग एवं अन्य यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं विकसित की जा रही हैं

24 अगस्त, 2024

बाड़मेर रेलवे स्टेशन, राजस्थान



अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत राजस्थान के बाड़मेर रेलवे स्टेशन का आधुनिक सुविधाओं के साथ तेजी से कायाकल्प किया जा रहा है। दिव्यांग एवं अन्य यात्रियों की सुविधा के लिए शौचालय ब्लॉक, नए वेटिंग रूम, वेटिंग हॉल और रिटायरिंग रूम सहित अन्य सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।

4 सितम्बर, 2024

सहरसा रेलवे स्टेशन, बिहार



बिहार के सहरसा रेलवे स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत तेज गति से पुनर्विकास किया जा रहा है। इस दौरान स्टेशन पर वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगजनों एवं आम यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं विकसित की जा रही हैं

6 सितम्बर, 2024

झुनझुनु रेलवे स्टेशन, राजस्थान



यात्री सुविधाएं बढ़ाने की तैयारी का कार्य प्रगति पर है :

- रेलवे परिसरों का पुनर्विकास
- दिव्यांगजनों के लिए अलग पार्किंग की जगह
- नए वेटिंग और वीआईपी रूम
- अलग प्रवेश और निकास द्वार
- 12 मीटर चौड़ा एफओबी

14 सितम्बर, 2024

प्रयाग जंक्शन रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश



अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के प्रयाग जंक्शन रेलवे स्टेशन का कायाकल्प तेजी के साथ किया जा रहा है। इस दौरान स्टेशन बिल्डिंग को भव्य रूप प्रदान किया जा रहा है और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप आधुनिक यात्री सुविधाएं विकसित की जा रही हैं

21 सितम्बर, 2024

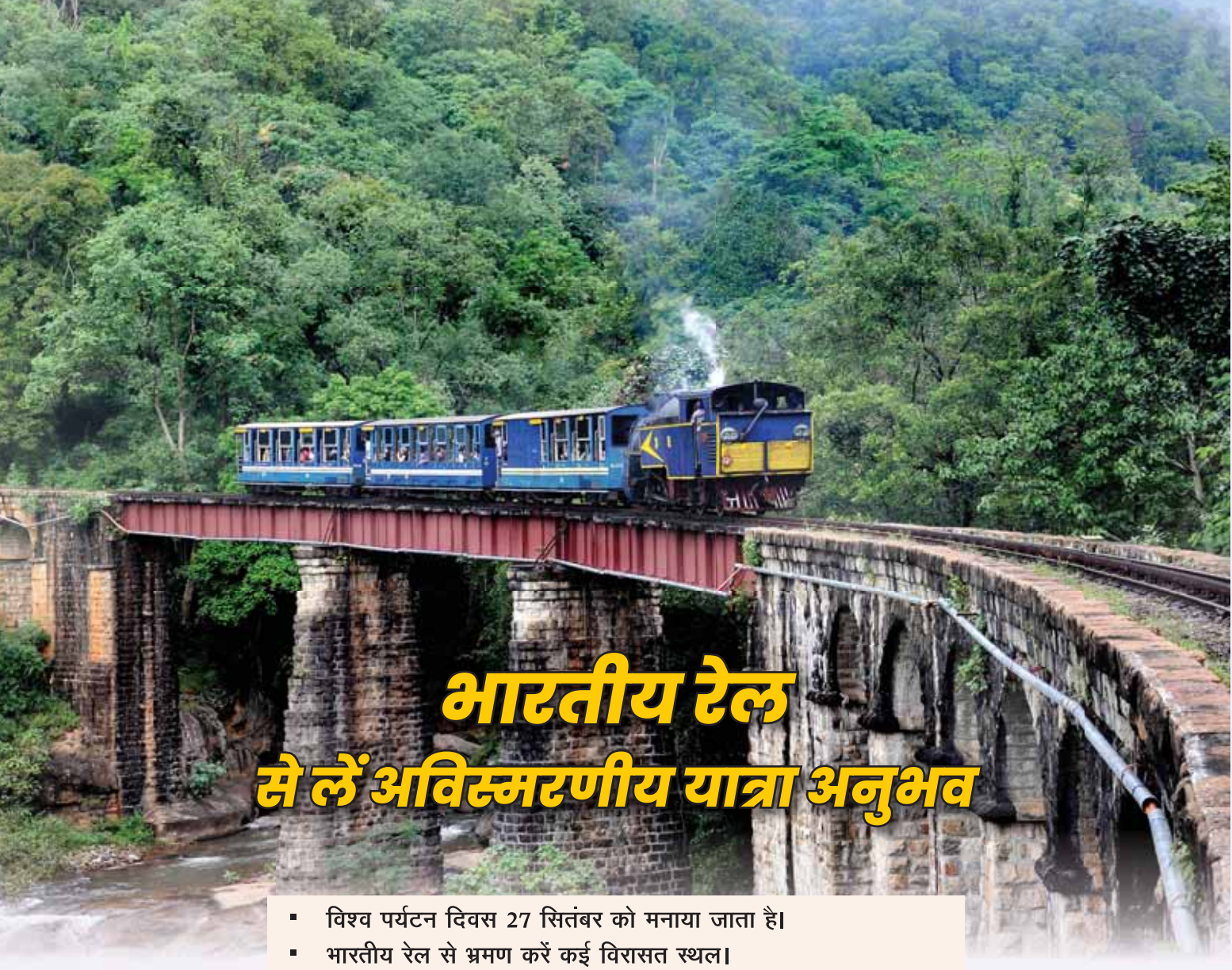
चेरलापल्ली सैटेलाइट टर्मिनल स्टेशन, तेलंगाना



यात्रियों के लिए समग्र यात्रा अनुभव को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए तैयार, तेलंगाना के चारलापल्ली सैटेलाइट टर्मिनल स्टेशन पर विकास कार्य पूरा हो गया है। स्टेशन में आधुनिक और दिव्यांगजनों के अनुकूल सुविधाएं होंगी।



23 सितम्बर, 2024



भारतीय रेल
से लें अविस्मरणीय यात्रा अनुभव

- विश्व पर्यटन दिवस 27 सितंबर को मनाया जाता है।
- भारतीय रेल से भ्रमण करें कई विरासत स्थल।
- इस अवसर का लाभ उठाएँ एवं भारत को और भी बेहतर तरीके से देखें!

27 सितंबर को जब पूरी दुनिया ने विश्व पर्यटन दिवस मनाया, तो भारत की समृद्ध विरासत और नयनाभिराम स्थलों को देखने के लिए इससे बेहतर समय और भला क्या हो सकता है! कई लुभावने नजारों से गुजरते हुए, भारतीय रेल कई विरासत वाली ट्रेनों का संचालन करती है। यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त रेलगाड़ियों और रेलवे स्टेशनों से लेकर रेल यात्राओं में दर्शनीय स्थलों तक, भारतीय रेल अपने व्यापक नेटवर्क के साथ कई तरह की पर्यटन यात्राएँ भी प्रदान करती है। भारतीय रेल देश में यात्रा उद्योग को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह यात्रियों को देश की विविध सुंदरता और सांस्कृतिक संपदा का अनुभव करने का एक अनूठा तरीका प्रदान करती है। रेल यात्राएँ न केवल प्रसिद्ध आकर्षणों को जोड़ती हैं, बल्कि कम खोजे गए स्थानों को भी हमारे समक्ष लाती हैं।

भारतीय रेल के कई संग्रहालय देश भर में फैले इस व्यापक नेटवर्क के इतिहास और विरासत को दर्शाते हैं। रेलवे को चलाने में अहम भूमिका निभाने वाले पुराने इंजनों से लेकर पुरानी लेकिन बेहतरीन फोटो गैलरी तक, रेलवे संग्रहालय निश्चित रूप से आपको समय की यात्रा पर ले जाते हैं। उल्लेखनीय संग्रहालयों में घुम रेलवे स्टेशन, कुर्सेओंग में डीएचआर आर्काइव संग्रहालय और पश्चिम बंगाल में सुकना रेलवे स्टेशन पर फोटो गैलरी शामिल हैं, जिनमें दुर्लभ ऐतिहासिक कलाकृतियाँ और अभिलेखागार हैं, जो यात्रियों को भारत की समृद्ध रेल विरासत से साक्षात्कार कराते हैं।

दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीएचआर)

1999 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित, दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, या 'टॉय ट्रेन', हिमालय की तलहटी के माध्यम से एक सुंदर यात्रा प्रदान करती है, जो न्यू जलपाईगुड़ी को दार्जिलिंग से जोड़ती है। इस रुट पर यात्री चाय के बागानों, धुंध भरे पहाड़ों और गहरी घाटियों के लुभावने दृश्यों का आनंद लेते हैं।


दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे


कालका-शिमला रेलवे

नीलगिरि माउंटेन रेलवे (एनएमआर)

वर्ष 2005 में यूनेस्को से मान्यता प्राप्त, नीलगिरि माउंटेन रेलवे एक अनूठी रैक और पिनियन प्रणाली का उपयोग करके मेट्टुपलायम से ऊटी तक चलती है। 46 किमी की दूरी तय करते हुए, यह मार्ग हरे-भरे परिदृश्यों, सुरंगों और कुन्नूर जैसे सुरम्य हिल स्टेशनों से होकर गुजरता है, जहाँ से नीलगिरि पहाड़ियों के शानदार दृश्य दिखाई देते हैं।


नीलगिरि माउंटेन रेलवे

कालका-शिमला रेलवे (केएसआर)

2008 में यूनेस्को की सूची में शामिल, कालका-शिमला रेलवे अपनी इंजीनियरिंग चमत्कारों के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जिसमें खड़ी ढलान, 103 सुरंगें और 800 पुल शामिल हैं। यह शिवालिक पहाड़ियों के माध्यम से एक आकर्षक यात्रा प्रदान करता है, जिसमें जंगलों, घाटियों और पहाड़ों के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं।

माथेरान लाइट रेलवे (एमएलआर)

यह एक विरासत नैरो-गेज रेलवे है। नेरल-माथेरान लाइन यात्रियों को पश्चिमी घाटों से होते हुए माथेरान के हिल स्टेशन तक ले जाती है। 21 कि.मी. का यह मार्ग, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता


माथेरान लाइट रेलवे


कालका-शिमला ट्रेन


छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई

के लिए जाना जाता है, घने जंगलों और तीखे मोड़ों से होकर गुजरता है, जो शहरी जीवन से दूर एक सुखद एहसास प्रदान करता है।

भारतीय रेल द्वारा शुरू किए गए विस्टाडोम कोच यात्रियों को चौड़ी खिड़कियों, कांच की छतों और घूमने वाली सीटों के साथ एक मनोरम यात्रा का अनुभव प्रदान करते हैं। ये कोच यात्रियों को हरे-भरे जंगलों से लेकर लुढ़कती पहाड़ियों तक भारत के परिदृश्यों की प्राकृतिक सुंदरता में डूबने का अवसर देते हैं। मुंबई-गोवा और अराकू घाटी जैसे मार्गों पर लोकप्रिय, विस्टाडोम कोचों ने रेल पर्यटन को काफी हद तक बढ़ाया है। इस तरह के अनूठे यात्रा अनुभव प्रदान करके, भारतीय रेल पर्यटन को बढ़ावा दे रही है, जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों पर्यटक भारत के प्राकृतिक अजूबों को देखने के लिए आकर्षित हो रहे हैं।


विस्टाडोम कोच

भारतीय रेल द्वारा शुरू की गई भारत गौरव ट्रेनें, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए डिजाइन की गई विशेष थीम-आधारित ट्रेनें हैं। ये ट्रेनें वाराणसी, अयोध्या और रामेश्वरम जैसे महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थलों के लिए क्यूरेटेड यात्राएँ प्रदान करती हैं, जिसमें ऑनबोर्ड सुविधाएँ और भारत की परंपराओं को दर्शाने वाले गहरे अनुभव शामिल हैं। प्रतिष्ठित स्थलों की निर्बाध यात्रा को बढ़ावा देकर, भारत गौरव ट्रेनें आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा दे रही हैं, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को भारत की गहन आध्यात्मिक विरासत का पता लगाने के लिए आकर्षित कर रही हैं, साथ ही धार्मिक यात्राओं के लिए कनेक्टिविटी और सुविधा को बढ़ा रही हैं।

2004 में उत्कीर्ण छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई (CSMT) की इमारत 19वीं सदी के उत्तरार्ध की रेलवे वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसकी विशेषता विक्टोरिया गोथिक पुनरुद्धार और पारंपरिक भारतीय विशेषताओं के साथ-साथ इसकी उन्नत संरचनात्मक और तकनीकी विशेषताएँ हैं।

अन्य माउंटेन रेलवे जो सुंदर दृश्य प्रदान करते हैं, वे हैं पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन, माथेरान लाइट रेलवे और कांगड़ा वैली रेलवे। भारतीय रेल की ट्रेन में यात्रा करते समय, महाराष्ट्र-गोवा मार्ग पर दूधसागर जलप्रपात, थाल घाट, भोर घाट और पाल घाट के खूबसूरत नजारों को देखना न भूलें।

विश्व पर्यटन दिवस के उपलक्ष्य में, भारत की विरासत वाली ट्रेनों की यात्रा प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि का एक अनूठा मिश्रण पेश करती है। भारतीय रेल न केवल आश्चर्यजनक परिदृश्यों को प्रदर्शित करती है, बल्कि देश के रेलवे इतिहास को भी संरक्षित करती है। भारतीय रेल देश के विविध परिदृश्यों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से यादगार यात्राएँ प्रदान करके यात्रा उद्योग को बढ़ावा दे रही है।■

साइबर सुरक्षा - भारतीय रेल में ट्रैक्शन एससीएडीए सिस्टम का कार्यान्वयन

अरुण कुमार
पूर्व प्रधान का. नि./कर्षण सं. आरडीएसओ, लखनऊ

जितेंद्र कुमार
निदेशक/कर्षण सं.-III आरडीएसओ, लखनऊ

रमेश कुमार पाल
सहा. अभि. अभियन्ता/कर्षण सं.-III आरडीएसओ, लखनऊ

विकाश चौधरी
जूनियर इंजीनियर/कर्षण सं. आरडीएसओ, लखनऊ

सारांश : रेल प्रणालियों को उभरते खतरों से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। जैसे-जैसे वैश्विक स्तर पर साइबर हमलों का चलन बढ़ रहा है, रेलवे नेटवर्क को सार्वजनिक सुरक्षा, परिचालन संबंधी व्यवधान और डेटा लीकेज के लिए महत्त्वपूर्ण जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय रेल, देश के परिवहन बुनियादी ढाँचे का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होने के नाते, सुचारू और कुशल संचालन के लिए पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (एससीएडीए) प्रणाली पर बहुत अधिक निर्भर करती है। हाल ही में, भारतीय रेल की एससीएडीए प्रणाली को राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, भारत सरकार द्वारा महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना के रूप में नामित किया गया था। इस महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की सुरक्षा के लिए, मजबूत साइबर सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं। इनमें नेटवर्क आइसोलेशन, डीएमजेड (डिमिलिटराइज्ड जोन) को लागू करना, यूनिडायरेक्शनल गेटवे, फायरवॉल, इंट्रूजन प्रिवेंशन सिस्टम (आईपीएस), इंट्रूजन डिक्टेशन सिस्टम (आईडीएस), एन्क्रिप्टेड कम्यूनिकेशन, मजबूत अल्फान्यूमेरिक पासवर्ड, परिसंपत्ति प्रबंधन और भेद्यता आकलन का उपयोग करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाकर विसंगतियों और कमजोरियों का पता लगाने के लिए नेटवर्क ट्रैफिक की सक्रिय स्कैनिंग को बढ़ाया जा सकता है। कुल मिलाकर, इस बदलते परिदृश्य में सतर्क रहना और उभरते साइबर सुरक्षा खतरों के बारे में लगातार सीखना महत्त्वपूर्ण है।

प्रचय : साइबर सुरक्षा वर्तमान परिदृश्य में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है और पूरी दुनिया वर्चुअल हो रही है। डीप इंस्टिंक्ट के एक शोध अध्ययन के अनुसार, 2022 में रैंसमवेयर में 435% वृद्धि हुई है, जो कि 2021 की तुलना में बहुत अधिक है। यह संख्या बताती है कि भविष्य में इसके और बढ़ने की संभावना है। इससे पता चलता है कि साइबर सुरक्षा कितनी महत्त्वपूर्ण है। हाल ही में एससीएडीए (सुपरवाइजरी कंट्रोल एंड डाटा एक्विजिशन) को क्रिटिकल इन्फॉर्मेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर (सीआईआई) घोषित किया गया है। आईटी अधिनियम 2000 के अनुसार, सीआईआई वे 'कंप्यूटर संसाधन' हैं, जिनकी अक्षमता या विनाश का राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य या सुरक्षा पर खराब प्रभाव पड़ेगा। इसलिए, एससीएडीए सिस्टम में साइबर सुरक्षा आज पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है।

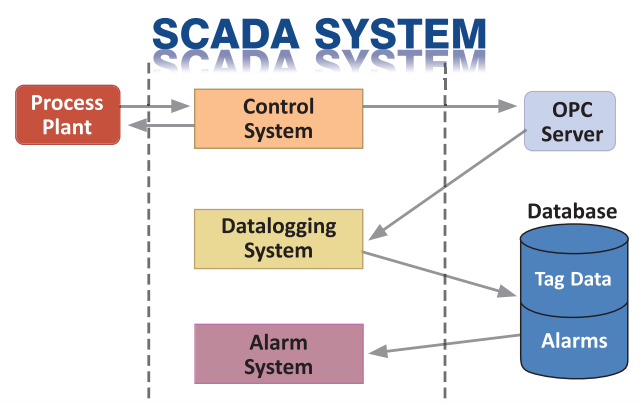
2. एससीएडीए : एक संक्षिप्त अवलोकन

एससीएडीए, जो पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण के लिए है, उपकरणों की निगरानी और नियंत्रण के लिए वास्तविक समय डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए एक कंप्यूटर-आधारित प्रणाली है, जो महत्त्वपूर्ण और समय-संवेदनशील सामग्री या घटनाओं से संबंधित कार्य करती है। एससीएडीए सिस्टम में हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर घटक शामिल हैं। हार्डवेयर डेटा को फील्ड कंट्रोलर सिस्टम में इकट्ठा करता है और फीड करता है, जो डेटा को अन्य प्रणालियों को अग्रेषित करता है, जो इसे समय पर ह्यूमन-मशीन इंटरफेस (एचएमआई) में संसाधित और प्रस्तुत करते हैं। एससीएडीए सिस्टम रिपोर्टिंग प्रक्रिया की स्थिति और समस्याओं के लिए सभी घटनाओं को रिकॉर्ड और लॉग भी करता है। जब स्थितियां खतरनाक हो जाती हैं, तो एससीएडीए एप्लिकेशन अलार्म बजा कर चेतावनी देते हैं। रेलवे में, रिमोट टर्मिनल यूनिट (आरटीयू) द्वारा सर्किट ब्रेकर ऑन/ऑफ स्टेटस, रिले, अलार्म आदि जैसे फील्ड उपकरणों से डेटा प्राप्त किया जाता है।

आरटीयू एक माइक्रोप्रोसेसर का उपयोग करने वाला एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जो भौतिक दुनिया में वस्तुओं को स्वचालन प्रणाली से जोड़ता है। यह टेलीमेट्री डेटा को सिस्टम में संचारित करके और/या स्वचालन प्रणाली से प्राप्त नियंत्रण संदेशों के आधार पर कनेक्टेड ऑब्जेक्ट्स की भौतिक स्थिति को बदलकर पूरा किया जाता है। आरटीयू से डेटा आरएस 485 केबल या ओएफसी केबल जैसे उचित संचार चैनलों के माध्यम से रिमोट कंट्रोल सेंटर (आरसीसी) में मौजूद एससीएडीए को भेजा जाता है। फील्ड उपकरणों का नियंत्रण एससीएडीए द्वारा आरटीयू के माध्यम से फील्ड उपकरणों को भेजे गए कमाँड के माध्यम से किया जाता है।

फील्ड उपकरणों और आरटीयू के बीच संचार के लिए संचार प्रोटोकॉल IEC-60870-5-103, IEC-61850 या एमओडीबीयूएस पर

है और आरटीयू और एससीएडीए के बीच संचार IEC-60870-5-104 प्रोटोकॉल पर है।



विशिष्ट एससीएडीए प्रणाली

3. साइबर सुरक्षा क्या है ?

साइबर सुरक्षा साइबर स्पेस में खतरों से इंटरनेट से जुड़े सिस्टम की रक्षा करने के लिए संदर्भित करती है, उनमें से कुछ व्यवसाय महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें किसी संगठन के सॉफ्टवेयर, डेटा और हार्डवेयर की सुरक्षा करना शामिल है और यह साइबर अपराधियों को उपकरणों या उनके नेटवर्क तक पहुँच प्राप्त करने से रोकने में मदद करता है। यह हमारे नेटवर्क और उपकरणों को अनधिकृत पहुँच से बचाने की कला है। यहाँ अनधिकृत पहुँच एक छोटे या बड़े साइबर हमले या साइबर-खतरे को संदर्भित करती है।



3.1 साइबर खतरों के विभिन्न रूप

विभिन्न प्रकार के साइबर अटैक हैं जिनका हम शिकार हो सकते हैं, जिनमें से सबसे आम प्रकार के साइबर अटैक निम्नलिखित हैं :

क) फिशिंग : यह धोखाधड़ी संचार भेजने का अभ्यास है जो एक प्रतिष्ठित स्रोत से आता है। यह आमतौर पर ईमेल के माध्यम से किया जाता है। इसका लक्ष्य क्रेडिट कार्ड और लॉगिन जानकारी जैसे संवेदनशील डेटा चोरी करना या पीड़ित की मशीन पर मैलवेयर स्थापित करना है।

ख) मैन इन द मिडिल अटैक : इस प्रकार के अटैक में साइबर अपराधी कई लोगों के बीच बातचीत या डेटा ट्रांसमिशन को इंटरसेप्ट करता है। एक असुरक्षित वाई-फाई नेटवर्क का उपयोग करके डेटा इंटरसेप्ट करना एक साइबर अटैक का उदाहरण है जिसे पीड़ित अपने कंप्यूटर से नेटवर्क पर भेजता है।

ग) मैलवेयर अटैक : मैलवेयर अटैक किसी भी प्रकार के मैलिसियस सॉफ्टवेयर हैं जिन्हें किसी भी अंतिम-उपयोगकर्ता के ज्ञान के बिना कंप्यूटर, सर्वर, क्लाइंट या कंप्यूटर नेटवर्क और अवसंरचना को नुकसान या क्षति पहुँचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका उपयोग ज्यादातर व्यक्तिगत, वित्तीय या व्यावसायिक जानकारी चोरी करने के लिए किया जाता है।

घ) रैंसमवेयर : रैंसमवेयर मशीनों को संक्रमित करता है, फाइलों को एन्क्रिप्ट करता है और पीड़ित द्वारा भुगतान किए जाने तक रैंसम के लिए आवश्यक डिक्रिप्शन की को होल्ड करता है। उद्यमों और सरकारी संस्थाओं को लक्षित करने वाले रैंसमवेयर अटैक बढ़ रहे हैं, हाल ही में एम्स पब्लिक हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट पर अटैक किए गए हैं, जिसमें महत्त्वपूर्ण फाइलों को एन्क्रिप्ट किया गया है और डिक्रिप्ट की के लिए क्रिप्टोकरेंसी में एक अज्ञात राशि की माँग की गई है। उदाहरण : वन्ना क्राई, पेट्या और लोकी आदि।

ड़) डीडीओएस अटैक : डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस अटैक में मल्टीपल कनेक्शन ऑनलाइन डिवाइस, सामूहिक रूप से बॉटनेट शामिल हैं, जिनका उपयोग किसी लक्षित वेबसाइट को नकली ट्रैफिक से अभिभूत करने के लिए किया जाता है।

च) पासवर्ड अटैक : ये अटैक दुर्भावनापूर्ण तरीकों के हैं जिनसे हैकर्स किसी खाते तक पहुँच प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। पासवर्ड अटैक के उदाहरण ब्रूट-फोर्स अटैक, क्रेडेंशियल स्टफिंग और पासवर्ड स्प्रेइंग हैं।

4. एससीएडीए के लिए साइबर सुरक्षा क्यों महत्त्वपूर्ण है?

साइबर सुरक्षा का महत्त्व सूचना, डेटा और उपकरणों को सुरक्षित रखने की आवश्यकता पर निर्भर करता है। आज की दुनिया में, लोग कंप्यूटर, सर्वर और अन्य जुड़े उपकरणों पर बड़ी मात्रा में डेटा संग्रहीत करते हैं। इसमें से अधिकांश संवेदनशील हैं और अगर कोई साइबर अपराधी इसे एक्सेस करता है तो यह काफी नुकसानदायक हो सकता है। वे संवेदनशील जानकारी साझा कर सकते हैं, धन चोरी करने के लिए पासवर्ड का उपयोग कर सकते हैं, या डेटा भी बदल सकते हैं ताकि इससे उन्हें लाभ हो। साइबर खतरों से उचित सुरक्षा के बिना एससीएडीए के मामले में, यह रेलवे की दैनिक सेवाओं को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा पर खराब प्रभाव पड़ सकता है।

किसी भी बिंदु पर, एससीएडीए, जो गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता का प्रतीक है, किसी भी संगठन में लागू किया जा रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जानकारी सुरक्षित है। एथिकल हैकर्स, सीआईएसओ और कई अन्य साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों जैसे पेशेवरों की बहुत माँग है जो साइबर सुरक्षा को लागू कर सकते हैं और किसी संगठन के डेटा की सुरक्षा कर सकते हैं।

साइबर अटैक के पीछे कई उद्देश्य हो सकते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

क) वित्तीय लाभ : हैकर्स द्वारा व्यक्तियों के बैंक विवरण जैसे कार्ड नंबर, खाता लॉगिन विवरण, पासवर्ड आदि एकत्र करने के लिए कई फिशिंग अटैक किए जाते हैं। इसके बाद उनका उपयोग उनके द्वारा अपने खाते में धन हस्तांतरित करने के लिए किया जाता है। वे पैसे के लिए पूरे संगठन पर रैंसमवेयर जैसे अटैक का भी उपयोग करते हैं।

ख) पहचान और लोकप्रियता : सामान्य तौर पर, हर इंसान खुशी महसूस करता है जब हर कोई उन्हें पहचानता है। इस तरह की हरकत सोशल मीडिया अकाउंट्स को हैक करके और उनके फॉलोअर्स या लाइक्स को बढ़ाकर की जाती है।

ग) डेटा एक्सफिल्ट्रेशन और इंजेक्शन : इसमें किसी संगठन से संवेदनशील डेटा चोरी करना और उसके साथ छेड़-छाड़ करना शामिल है। वे उन डेटा को बेच सकते हैं या बिना पता लगाए सिस्टम में गलत डेटा जमा कर सकते हैं, जिससे संगठन को परेशानी हो सकती है।

एक और बहुत ही सामान्य प्रकार का अटैक हार्डवेयर अटैक है। ये ऐसे अटैक हैं जो हार्डवेयर पर लॉन्च किए जाते हैं जो इसकी भेद्यता को उजागर करते हैं। इसे 2 प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है : इनवेसिव और नॉन-इनवेसिव।

इनवेसिव हार्डवेयर अटैक वे होते हैं जहाँ हार्डवेयर बोर्ड में इलेक्ट्रॉनिक चिप्स के भौतिक गुणों को अपरिवर्तनीय रूप से संशोधित किया जाता है। सबसे प्रसिद्ध इनवेसिव अटैक में से एक को माइक्रो प्रोबिंग कहा जाता है। इस अटैक में, सूक्ष्म सुइयों को चिप्स की आंतरिक तारों से जोड़ा जाता है। इस अटैक का उद्देश्य या तो आंतरिक रहस्यों को पढ़ना हो सकता है जो चिप छोड़ने का इरादा नहीं रखते हैं, या इसका उपयोग फाल्ट अटैक के लिए किया जा सकता है। जबकि माइक्रोप्रोबिंग के लिए आवश्यक उपकरण महंगे हो सकते हैं, सेकेंड हैंड मार्केट सभी अटैक के उपकरण व्यक्तियों के लिए भी उपलब्ध कराता है।

इससे कम लागत वाले संरक्षण तंत्र पर शोध करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इनवेसिव अटैक के लिए, चिप की ऊपरी पैकेजिंग को हटाना महत्त्वपूर्ण है। यह मैनुअल डिकैप्सुलेशन की प्रक्रिया द्वारा किया जाता है जो आमतौर पर पैकेज में एक छेद को मिलिंग करने और उस पर नाइट्रिक एसिड डालने के साथ शुरू होता है ताकि यह केवल चिप डाई के ऊपर वांछित क्षेत्र को प्रभावित करे।

नॉन इनवेसिव हार्डवेयर अटैक ऐसे भी हार्डवेयर हमले हैं जो सिस्टम पीसीबी हार्डवेयर पर होते हैं जो सीधे किसी भी चिप पैकेज को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। इस तरह के अटैक की प्रक्रिया निम्नलिखित है :

- हमलावर सिस्टम के भौतिक आवरण को खोलता है।
- हमलावर या तो डिवाइस के तारों को टैप कर सकता है, या विश्लेषण के लिए इसे परीक्षण सर्किट में प्लग कर सकता है।
- इन्हें लगाने के बाद के बाद छेड़छाड़ का कोई सबूत नहीं छोड़ा जाता है।
- एक बार पता चलने पर इन हमलों को आसानी से दोहराया जा सकता है और इसमें बहुत अधिक लागत शामिल नहीं है।

ज्यादातर मामलों में, एफडीयू पर होने वाले अटैक नॉन इनवेसिव अटैक होते हैं।

इन साइबर खतरों से बचाने के लिए, एक व्यक्ति को कुछ बुनियादी प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए:

- कभी भी अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे बैंक विवरण, वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी), एटीएम पिन आदि किसी के साथ साझा न करें।
- इंटरनेट पर सर्फिंग करते समय संदिग्ध वेबसाइट न खोलें।
- गुमनाम लोगों द्वारा किसी भी सोशल मीडिया पर प्राप्त किसी भी लिंक पर क्लिक न करें।

5. एससीएडीए में साइबर सुरक्षा का कार्यान्वयन

साइबर सुरक्षा सीधे साइबर भौतिक प्रणाली से जुड़ी होती है, जिसमें 2 प्रकार होते हैं- आईटी और ओटी। आईटी या इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर की प्रणालियां हैं जो विद्युत, चुंबकीय या विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का उपयोग करके सूचना को प्राप्त, संसाधित, आदान-प्रदान, संग्रहीत और प्रस्तुत कर सकती हैं। ओटी या ऑपरेशन टेक्नोलॉजी भौतिक उपकरणों की प्रत्यक्ष निगरानी और नियंत्रण के माध्यम से जानकारी एकत्र करती है और भौतिक दुनिया में परिवर्तन का कारण बनती है। एससीएडीए ऑपरेशनल टेक्नोलॉजी का एक उदाहरण है।

एससीएडीए में साइबर सुरक्षा को लागू करने के कुछ तरीके हैं:

क) स्पष्ट सीमाओं को परिभाषित करना और डिमिलिटराइज्ड जोन (डीएमजेड) को कॉन्फिगर करना : एक डिमिलिटराइज्ड जोन नेटवर्क, या डीएमजेड, एक सबनेट है जो बाहरी हमले से सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत बनाता है। यह एक भौतिक या तार्किक उप नेटवर्क है, जिसमें किसी संगठन की बाहरी-सामना करने वाली सेवाओं को एक अविश्वसनीय नेटवर्क आमतौर पर इंटरनेट जैसे बड़े नेटवर्क में शामिल किया जाता है और उजागर किया जाता है।

ख) फायरवॉल जैसे नेटवर्क सुरक्षा नियंत्रण उपकरणों का उपयोग करना : फायरवॉल एक नेटवर्क सुरक्षा प्रणाली है जो पूर्वनिर्धारित सुरक्षा नियमों के आधार पर इनकमिंग और आउटगोइंग नेटवर्क ट्रैफिक की निगरानी और नियंत्रण करती है। फायरवॉल आमतौर पर एक विश्वसनीय आंतरिक नेटवर्क और अविश्वसनीय बाहरी नेटवर्क, जैसे इंटरनेट के बीच एक अवरोध स्थापित करता है।

ग) आईपीएस/आईडीएस को कॉन्फिगर करना : इंट्रूजन प्रिवेंशन सिस्टम (आईपीएस) एक नेटवर्क सुरक्षा उपकरण है (जो

एक हार्डवेयर डिवाइस या सॉफ्टवेयर हो सकता है) जो दुर्भावनापूर्ण गतिविधि के लिए एक नेटवर्क की लगातार निगरानी करता है और इसे रोकने के लिए रिपोर्टिंग करने, ब्लॉक करने या छोड़ने जैसी कार्रवाई करता है।

घ) यूनिडायरेक्शनल सिक्योरिटी गेटवे का उपयोग करना : यूनिडायरेक्शनल सिक्योरिटी गेटवे हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का एक संयोजन है। हार्डवेयर डेटा को एक नेटवर्क से दूसरे नेटवर्क में प्रवाहित करने की अनुमति देता है, लेकिन भौतिक रूप से किसी भी जानकारी को स्रोत नेटवर्क में वापस भेजने में असमर्थ है। एससीएडीए के मामले में, चूंकि ऊर्जा प्रबंधन सर्वर (ईएमएस) वेब सर्वर से जुड़ा है, इसलिए, यूनिडायरेक्शनल गेटवे ईएमएस और एससीएडीए नेटवर्क के बीच होगा ताकि एससीएडीए नेटवर्क से डेटा के प्रवाह को केवल ईएमएस की ओर अनुमति दी जा सके।

ड़) IEC-62443 और IEC-62351 के आधार पर संचार प्रोटोकॉल का उपयोग करना : मानकों की IEC-62443 शृंखला इलेक्ट्रॉनिक रूप से सुरक्षित औद्योगिक स्वचालन और नियंत्रण प्रणाली (आईएसीएस) को लागू करने और बनाए रखने के लिए आवश्यकताओं और प्रक्रियाओं को परिभाषित करती है। ये मानक सुरक्षा के लिए सर्वोत्तम अभ्यास निर्धारित करते हैं और सुरक्षा प्रदर्शन के स्तर का आकलन करने का एक तरीका प्रदान करते हैं।

IEC-62351 शृंखला परिचालन वातावरण में सुरक्षा प्रौद्योगिकियों को लागू करने के लिए साइबर सुरक्षा आवश्यकताओं को भी परिभाषित करती है, जिसमें नेटवर्क और सिस्टम प्रबंधन (जैसे एसएनएमपी के साथ), भूमिका-आधारित अभिगम नियंत्रण (आरबीएसी), क्रिप्टोग्राफिक कुंजी प्रबंधन और सुरक्षा इवेंट लॉगिंग के लिए ऑब्जेक्ट शामिल हैं।

च) सुरक्षा परीक्षण करना : एससीएडीए सिस्टम में साइबर सुरक्षा परीक्षण को समय पर करने से सिस्टम में मौजूद कमियों को दूर करने में मदद मिलेगी।

छ) अल्फान्यूमेरिक : संयोजनों के साथ पासवर्ड का आवधिक परिवर्तन, अधिकृत अनुप्रयोगों की श्वेत सूची, एन्क्रिप्शन विधियां और उचित बायोमेट्रिक पहचान का उपयोग करना।

निष्कर्ष

एससीएडीए सिस्टम की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और जटिल विषय है। एक उचित रूप से सुरक्षित प्रणाली को विभिन्न प्रकार के साइबर खतरों और कमियों से बचाएगी और प्रणाली को अधिक निर्भर और कुशल बनाएगी।

संदर्भ

- अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन (आरडीएसओ), भारतीय रेल विशिष्टि सं.टीआई/एसपीसी/आरसीसी/एससीएडीए/0133.
- **IEC-62443 मानक :** पूरे जीवनचक्र में औद्योगिक स्वचालन और नियंत्रण प्रणाली (आईएसीएस) को सुरक्षित करने के लिए।
- **IEC-62351 मानक :** ऊर्जा प्रबंधन प्रणालियों में सुरक्षा और ऊर्जा से संबंधित डेटा के आदान-प्रदान के लिए
- **PD CLC/ TS-50701:2021 :** रेलवे अनुप्रयोगों के लिए बीआईएस मानक-साइबर सुरक्षा
- **IEC-60870-5-103 ट्रांसमिशन प्रोटोकॉल :** सुरक्षा उपकरणों का जानकारीपूर्ण इंटरफेस के लिए कंपेनियन स्टैंडर्ड।
- **IEC-61850 मानक :** विद्युत सबस्टेशन पर इंटेलीजेंट इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए संचार प्रोटोकॉल।



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल, कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

भारतीय रेल में डिजिटल पहचान की आवश्यकता

मनोज कुमार
मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक, यात्री सेवा, पूर्व रेलवे



भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, जी-20 डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप ने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई)/इंडिया स्टैक को एक प्रमुख प्राथमिकता के रूप में पहचाना है। सामाजिक, आर्थिक, डिजिटल और सतत विकास लक्ष्यों पर डीपीआई के परिवर्तनकारी प्रभाव ने इसे डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और विभिन्न सरकारी मंत्रालयों, विभागों, निजी संस्थाओं, विभिन्न उपयोगकर्ताओं और नागरिकों सहित अपने अंशधारकों को लाभान्वित करने में एक महत्त्वपूर्ण तत्व के रूप में स्थापित किया है।

हाल ही में जी-20 शिखर सम्मेलन के बाद, वैश्विक नेता कूटनीति, शासन और विकास में डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर की महत्त्वपूर्ण भूमिका को तेजी से पहचान रहे हैं। जवाब में, भारत सरकार डिजिटल पब्लिक गुड्स, विशेष रूप से नागरिक-केंद्रित सेवाओं के लिए तैनाती में तेजी लाने के लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर-एज-ए-सर्विस मॉडल को अपनाने की सक्रिय रूप से वकालत कर रही है।

इस दृष्टिकोण के अनुरूप रेल मंत्रालय, रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र (क्रिस) के माध्यम से एक मजबूत एंटरप्राइज आर्किटेक्चर मानक स्थापित करने और वन-आईसीटी फ्रेमवर्क को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। इस पहल का एक महत्त्वपूर्ण घटक भारतीय रेल के लिए डिजिटल पहचान का विकास है।

कुछ दशक पहले, जब भारतीय रेल पारिस्थितिकी तंत्र में यात्रियों की विशिष्ट पहचान करने की कोई व्यावसायिक आवश्यकता नहीं थी, तो तत्काल और विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारतीय रेल के वाणिज्यिक विभाग द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं के आधार पर विशिष्ट आईटी एप्लिकेशन विकसित किए गए थे। समय के साथ, इस दृष्टिकोण ने विभिन्न एप्लिकेशन सेवाओं में एक ही यात्री के लिए अलग-अलग पहचान का उपयोग किया। पीएनआर, टिकट नंबर, मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, आधार नंबर या उनके संयोजन जैसे पहचानकर्ताओं का उपयोग पीआरएस, यूटीएस, पीएमएस, रिटायरिंग रूम और रेल मदद अनुप्रयोगों में यादृच्छिक रूप से किया गया, जिससे आईटी सिस्टम में असंगत पहचान डेटा उत्पन्न हो गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय रेल के यात्री-केंद्रित आईटी अनुप्रयोगों के विकास में बाधाएं उत्पन्न हो गईं, जो राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स और यात्रा पारिस्थितिकी प्रणालियों में प्रभावी रूप से भाग लेने से रोकती हैं। राष्ट्रीय परिवहन पारिस्थितिकी तंत्र के संदर्भ में, भारतीय रेल के लिए निर्बाध, सुरक्षित और एकीकृत सार्वजनिक सेवा वितरण को सक्षम करने के लिए एकीकृत और मानकीकृत डिजिटल पहचान की आवश्यकता है। उपयोगकर्ता पहचान से परे, एक अच्छी तरह से परिभाषित डिजिटल पहचान इंटरऑपरेबिलिटी को सुविधाजनक बनाती है, जिससे उपयोगकर्ता अपने डेटा पर नियंत्रण कर सकते हैं और सेवा वितरण में सुधार कर सकते हैं।

जैसे-जैसे परिवहन क्षेत्र में विभिन्न सरकारी प्लेटफॉर्म डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, कई आईडी बनाने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है, जिनमें से हर एक का अपना आईडी कार्ड, आईडी प्रबंधन प्रणाली और विशिष्टता बनाए रखने के प्रयास होते हैं। आम नागरिकों, विशेषकर भारतीय रेल यात्रियों के लिए, आईडी की यह बढ़ती संख्या निर्बाध डेटा आदान-प्रदान को जटिल बना देती है। रेलवे उपयोगकर्ताओं की शिक्षा, जागरूकता और क्षमताओं में विविधता को देखते हुए, इस जटिलता और संभावित बहिष्करण की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे इस पहल को सशक्त बनाने के उद्देश्य कमजोर हो सकते हैं।

डाटा-समृद्ध दुनिया में, यह महत्त्वपूर्ण है कि लोग, संस्थाएं, स्थान, संसाधन और संपत्तियों के बारे में विभिन्न डेटा इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्रियों में ओपन एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) के माध्यम से उपलब्ध हों। इससे अन्य आईटी प्रणालियों को सत्यापित और प्रमाणित डेटा का उपयोग और मान्य करना संभव होगा। ऐसी रजिस्ट्रियों का उपयोग करके ओपन एपीआई के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक सत्यापन भारतीय रेल जैसी संस्थाओं के लिए प्रक्रियाओं को काफी सुव्यवस्थित कर सकता है। यह कागज- आधारित सत्यापन की आवश्यकता को समाप्त करता है, विश्वास बढ़ाता है और परिचालन लागत को कम करता है। इस संदर्भ में, एक 'इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्री' एक विश्वसनीय प्रणाली को संदर्भित करता है जो सहमति वाले विषयों (लोगों, संस्थाओं) को नामाँकन करने, सत्यापन के आवश्यक स्तरों के साथ अपने रिकॉर्ड का प्रबंधन करने और अपने प्रमाणीकरण और केवाईसी सेवाओं का उपयोग करके तीसरे पक्ष की सेवाओं तक पहुँचने की अनुमति देता है।

डाटा-समृद्ध दुनिया में, यह आवश्यक है कि लोग, संस्थाएं, स्थान, संसाधन और संपत्तियों के बारे में विभिन्न डेटा इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्रियों में ओपन एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) के माध्यम से उपलब्ध हों। इससे अन्य आईटी प्रणालियों को सत्यापित और प्रमाणित डेटा का उपयोग और मान्य करना संभव होगा। इलेक्ट्रॉनिक सत्यापन, जैसे भारतीय रेल के लिए ओपन एपीआई के माध्यम से, कागज-आधारित सत्यापन की आवश्यकता को समाप्त कर, प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर सकता है, विश्वास को बढ़ा सकता है, और परिचालन लागत को कम कर सकता है।

भारतीय रेल के लिए एक सुव्यवस्थित इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्री एक केंद्रीकृत डेटाबेस के रूप में कार्य करेगी जो यात्रियों, कर्मचारियों और अन्य अंशधारकों के लिए सभी प्रासंगिक पहचान जानकारी को केंद्रीकृत करेगी। यह रजिस्ट्री फेडरेटेड डिजिटल पहचान प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण घटक होगी, जो पूरे रेलवे नेटवर्क में निर्बाध डेटा एक्सेस और प्रबंधन को सक्षम करेगी।

फेडरेटेड डिजिटल आइडेंटिटी एक ऐसा शब्द है जो सुनने में जटिल लग सकता है, लेकिन इसका मूल उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को उनकी पहचान पर अधिक नियंत्रण देना है, साथ ही उनकी गोपनीयता और सुरक्षा को भी सुनिश्चित करना है। पारंपरिक केंद्रीकृत प्रणालियों के विपरीत, जहाँ एकल इकाई उपयोगकर्ता की पहचान के सभी पहलुओं का प्रबंधन करती है, फेडरेटेड सिस्टम इस जिम्मेदारी को कई विश्वसनीय संस्थाओं में वितरित करते हैं। इसका मतलब यह है कि किसी भी एक संगठन के पास किसी व्यक्ति की पहचान पर पूरा नियंत्रण नहीं होता, जिससे डेटा उल्लंघन और दुरुपयोग का जोखिम कम हो जाता है।

फेडरेटेड सिस्टम में, उपयोगकर्ता एक ही डिजिटल पहचान का उपयोग करके कई सेवाओं तक पहुँच सकते हैं, बिना हर बार पुनः प्रमाणित किए। यह निर्बाध पहुँच, समझौतों और मानकों के माध्यम से संभव हुई है जो यह सुनिश्चित करते हैं कि विभिन्न प्रणालियां एक-दूसरे की पहचान सत्यापन प्रक्रियाओं को पहचान और भरोसा कर सकें। उदाहरण के लिए, यदि आपने कभी भी अपने Google या Facebook खाते का उपयोग करके किसी वेबसाइट में लॉग इन किया है, तो आपने कार्रवाई में फेडरेटेड पहचान का एक रूप अनुभव किया है।

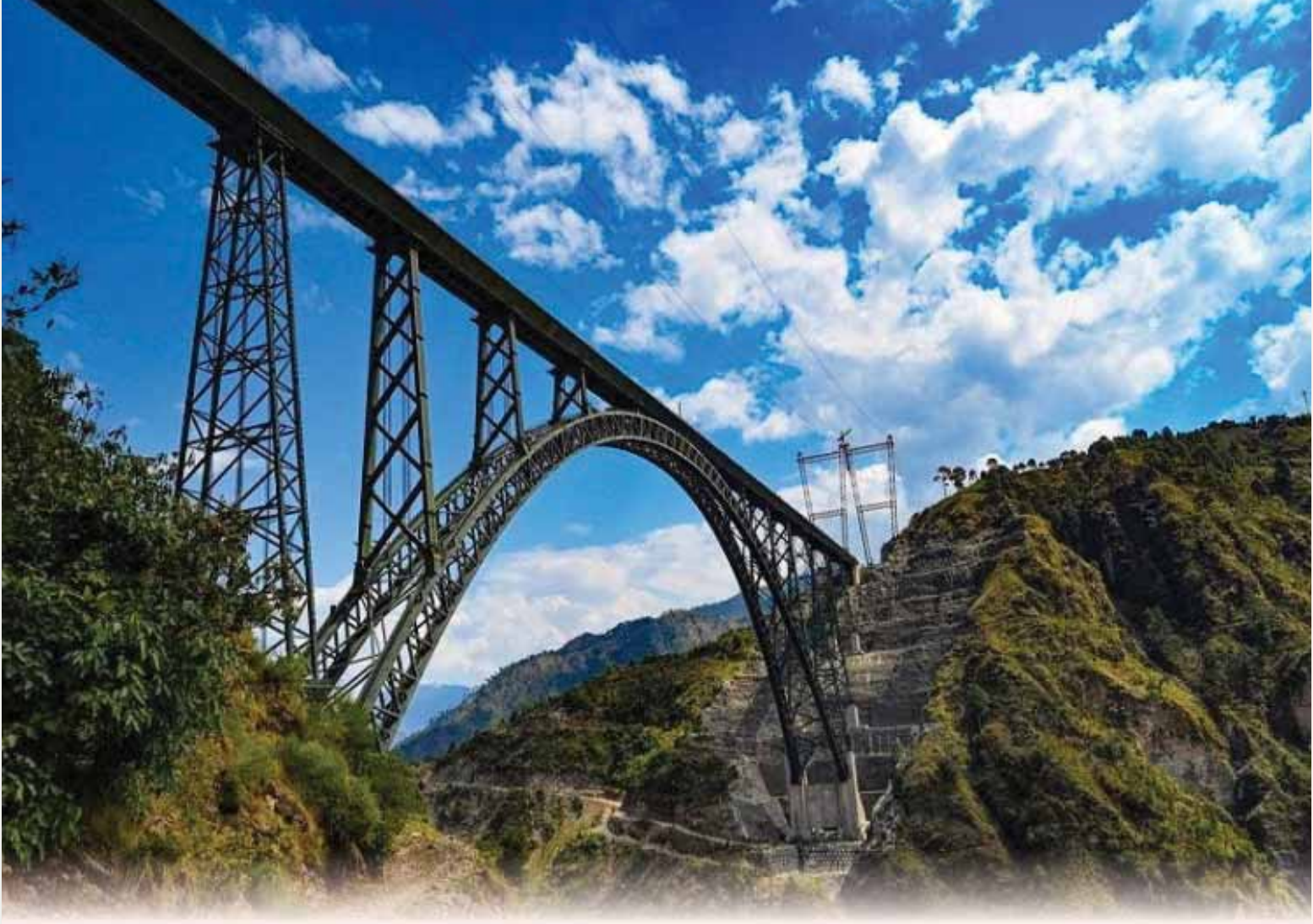


ऐसी रजिस्ट्रियों के उदाहरणों में आधार शामिल है, जो 'भारत के सामान्य निवासियों' की एक रजिस्ट्री है; पैन प्रणाली, जो 'प्रत्यक्ष करदाताओं (व्यक्तियों या संस्थाओं) की रजिस्ट्री है'; और पीडीएस डेटाबेस, जो 'खाद्य सब्सिडी प्राप्त करने वाले व्यक्तियों और परिवारों की रजिस्ट्री है।'

भारतीय रेल के लिए, फेडरेटेड डिजिटल पहचान प्रणाली को अपनाना न केवल अत्यधिक कुशल और आंतरिक संचालन को सुव्यवस्थित करने वाला होना चाहिए, बल्कि इसे व्यापक राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ भी संरेखित करना चाहिए, जो एक मजबूत इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में हैं। इस ढाँचे का हिस्सा बनकर, भारतीय रेल व्यापक डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (इंडिया स्टैक) के निर्माण के बड़े डिजिटल परिवर्तन उद्देश्य में सक्रिय रूप से योगदान कर सकती है, जो साझा संसाधनों, मानकीकृत प्रक्रियाओं और उन्नत सुरक्षा उपायों से लाभान्वित होगा।

भारतीय रेल जैसे जटिल पारिस्थितिकी तंत्र में, विभिन्न विभागों और बाहरी अंशधारकों के बीच सहयोग आवश्यक है। एक मजबूत इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्री सुनिश्चित करेगी कि सभी प्रासंगिक डेटा आसानी से सुलभ और इंटरऑपरेबल हों, जिससे संचालन में दक्षता और समन्वय में सुधार होगा।

ऐसी साझेदारियों से उन्नत मोबाइल ऐप, इन-ट्रेन मनोरंजन और बेहतर टिकटिंग प्लेटफॉर्म जैसे नवाचार उत्पन्न हो सकते हैं, जो यात्रियों को अधिक सुविधा प्रदान करेंगे और सेवा की गुणवत्ता में सुधार करेंगे। यह सहयोग न केवल आधुनिक प्रौद्योगिकियों और नई राजस्व धाराओं को भारतीय रेल में लाएगा, बल्कि यह वित्तीय स्थिरता में भी योगदान देगा। सेवा दक्षता, डेटा मुद्रीकरण और डिजिटलीकरण के माध्यम से बेहतर प्रशासन के द्वारा, भारतीय रेल विश्वसनीय और पारदर्शी संचालन सुनिश्चित करते हुए दक्षता, जवाबदेही और लचीलापन में सुधार कर सकती है, जिससे यात्री विश्वास और वित्तीय व्यवहार्यता को बढ़ावा मिलता है।■



कश्मीर घाटी रेलवे की रोचक जानकारी

विमलेश चंद्र

कश्मीर घाटी रेलवे देश में स्वतन्त्रता के बाद बनी पहली सबसे जटिल रेलवे लाइन है। यह अब जल्द ही सम्पूर्ण भारतीय रेल से जुड़ने जा रही है। कार्यों की प्रगति के अनुसार यह रेलवे वर्ष 2024 के अंत तक पूरी तरह से खुल जाएगी। इस पूरे सेक्शन के खुलते ही बारामुला से कन्याकुमारी तक एक रेलगाड़ी से यात्रा करना संभव हो जाएगा। इससे एक तरफ पूरे कश्मीर को विकास का एक बहुत बड़ा नया आयाम मिलेगा तो दूसरी तरफ देश के लोग कश्मीर घाटी की रेलगाड़ी द्वारा यात्रा कर सकेंगे और कश्मीर घाटी में पर्यटकों के आने से कश्मीर घाटी का तेज आर्थिक विकास होगा। कश्मीर घाटी में स्वतंत्रता के पहले रेलवे का इतिहास तब से शुरू होता है, जब वर्ष 1890 में ब्रिटिश शासकों ने जम्मू से सियालकोट तक 43 कि.मी. लंबी रेल लाइन बनाई थी। यह रेल लाइन भारत की तत्कालीन ब्रिटिश रेल कंपनी, नार्थ वेस्टर्न स्टेट रेलवे ने बनवाई थी। यह रेल लाइन अक्टूबर 1888 से बननी शुरू हुई थी और इसे दिनांक 13 मार्च, 1890 को यात्री रेलगाड़ी के लिए खोल दिया गया था। उस समय इसका कुछ हिस्सा ब्रिटिश पंजाब में था और कुछ हिस्सा तत्कालीन महाराजा प्रताप सिंह के जम्मू और कश्मीर राज्य में था। महाराजा प्रताप सिंह के राज्य में यह पहली रेलवे थी। बाद में यह रेल लाइन वर्ष 1947 में भारत के विभाजन के समय पाकिस्तान में चली गई और पाकिस्तान रेलवे का हिस्सा हो गई। इस रेल लाइन पर दिनांक 18 सितंबर, 1947 तक रेलगाड़ी चलती रही।

कश्मीर घाटी में रेलवे- वर्ष 1898 में कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह जी ने सर्वप्रथम कश्मीर घाटी के श्रीनगर को जम्मू से नैरोगेज रेल लाइन से जोड़ने के लिए प्रयास किया था, किंतु पर्वतीय रेलगाड़ी की कठिनाई और कुछ अन्य कारणों से एवं ब्रिटिश सरकार के राजनीतिक कारणों से यह प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हो सका। कश्मीर घाटी में ब्रिटिश सेना की आवाजाही के फायदे के रूप में तत्कालीन ब्रिटिश शासकों ने रेलवे लाइन बनने के लिए अनेक प्रयास किया। उस समय के ब्रिटिश रेल अधिकारियों द्वारा अनेकों बार सर्वे करने के बाद अंतत: पंजाब से कश्मीर घाटी को

जोड़ने के लिए सर्वे में कुल 4 रेल रूट खोजा गया, जिसमें पहला रेलवे रूट-जम्मू से बनिहाल रेलवे रूट था। दूसरा रेलवे रूट-झेलम घाटी से होते हुये पुंछ शहर तक का था। तीसरा रेलवे रूट-रावलपिंडी से पंजार रेलवे रूट जो झेलम घाटी से होते हुये था। चौथा रेलवे रूट-आबोटाबाद रेलवे रूट था जो अपर झेलम घाटी के हजारा से होते हुये कलाको सराय तक जाती। वर्ष 1902 में ब्रिटिश सरकार ने झेलम नदी के किनारे-किनारे श्रीनगर से रावलपिंडी तक रेल लाइन बनाने का प्रस्ताव रखा, किंतु यह प्रस्ताव भी आगे न बढ़ सका क्योंकि यह जम्मू और श्रीनगर के लोगों के लिए ज्यादा उपयोगी नहीं था। फिर वर्ष 1905 में ब्रिटिश सरकार ने दुबारा रावलपिंडी और श्रीनगर के बीच रेल लाइन बनाने का प्रस्ताव रखा। इसे कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह ने अनुमति दे दिया। यह रेल लाइन जम्मू से श्रीनगर तक वाया रियासी होते हुए और मुगल सड़क के किनारे-किनारे होते हुए जाती। यह 2 फुट (610 मिलीमीटर) और 2.5 फुट (763 मिलीमीटर चौड़ी) गेज वाली नैरोगेज रेल लाइन में से कोई एक गेज वाली रेलवे होती। यह मुगल सड़क से होते हुए 3355 मीटर की ऊंचाई तक पीर पंजाल पर्वतीय क्षेत्र से जाती तथा इसमें पर्वतीय भाप इंजन या बिजली वाला इंजन लगता किंतु यह प्रस्ताव भी आगे नहीं बढ़ सका।

जम्मू-उधमपुर रेलवे लाइन का इतिहास- वर्ष 1947 में भारत का विभाजन होने के कारण जम्मू का आंशिक विभाजन हो गया था, जिसके कारण जम्मू रेलवे का भी बंटवारा हो गया था। स्वाभाविक रूप से जम्मू को बाकी देश से जोड़ना बहुत जरूरी हो गया था। जिसके फलस्वरुप एक नयी रेलवे लाइन पठानकोट से जम्मू के लिए बनाई गई। जिसे पीरपंजाल से होते हुए श्रीनगर तक बढ़ाना था किंतु अनेक कारणों से यह परियोजना भी आगे नहीं बढ़ सकी। जम्मू को देश के बाकी हिस्से से जोड़ने के लिए वर्ष 1952 में जालंधर को पठानकोट से जोड़ा गया। फिर पठानकोट-माधोपुर खंड को वर्ष 1955 में, माधोपुर-कठुआ को वर्ष 1965 में और फिर कठुआ को जम्मू से अंततः दिनांक 2 अक्टूबर, 1972 को जोड़ दिया गया और इस तरह एक नई रेल लाइन, पठानकोट से जम्मू के लिए बन कर तैयार हो गई थी, जो जम्मू को देश के अन्य भागों से रेल लाइन से जोड़ती है। अंततः दिनांक 2 दिसंबर, 1972 को इसे यात्री ट्रेन के लिए खोल दिया गया। इस पर चलने वाली पहली रेलगाड़ी तत्कालीन श्री नगर एक्सप्रेस थी।

वर्ष 1973-74 में उधमपुर से श्रीनगर के बीच बड़ी लाइन बनाने का सर्वेक्षण हुआ किंतु यह परियोजना भी आगे नहीं बढ़ सकी। फिर इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जम्मू से उधमपुर तक की रेल लाइन परियोजना का दिनांक 14 अप्रैल, 1983 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने शिलान्यास किया और यह रेल लाइन वर्ष 1995 में बननी शुरू हुयी और 22 वर्ष बाद दिनांक 13 अप्रैल, 2005 को जम्मू से उधमपुर के बीच 53 कि.मी. लंबी रेल लाइन तैयार हुई और इसे राष्ट्र को समर्पित किया गया। अभी सितम्बर 2023 में उधमपुर रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर शहीद कैप्टन तुषार महाजन रेलवे स्टेशन कर दिया गया। जम्मू-श्रीनगर-बारामूला रेलमार्ग के आरंभ हो जाने से जम्मू तवी रेलवे स्टेशन का महत्त्व अपने आप बहुत बढ़ जाएगा क्योंकि कश्मीर घाटी को जाने वाली सभी रेलगाड़ियां इस स्टेशन से होकर ही जाएंगी। जैसा कि हम जानते हैं कि कश्मीर घाटी की वास्तविक शुरुआत जम्मूतवी से होती है। चूंकि जम्मू से उधमपुर तक की रेल लाइन पहले ही बन चुकी थी इसलिए उधमपुर से बारामुला तक की नई रेल लाइन परियोजना में जम्मू से उधमपुर तक की रेल लाइन को नहीं जोड़ा गया था। अब बारामूला तक की परियोजना पूर्ण होने की तैयारी में है। इसलिए अब सभी जानकारी को जम्मूतवी रेलवे स्टेशन को बेस मान कर अपडेट किया गया है।

कश्मीर घाटी रेलवे में रेलगाड़ी शुरू होने का विवरण- जम्मू से उधमपुर के बीच 53 कि.मी. लंबी रेल लाइन वर्ष 1995 में बननी शुरू हुई और 22 वर्ष बाद अप्रैल 2005 में बन कर तैयार हुई और दिनांक 13 अप्रैल, 2005 को इसे राष्ट्र को समर्पित किया गया। उधमपुर-कटरा के 25 कि.मी. लंबे रेल खंड को दिनांक 4 जुलाई, 2014 को खोला गया और रेलगाड़ी शुरू कर दी गई। अनंतनाग-श्रीनगर-माझोम रेल खंड के 66 कि.मी. खंड को दिनांक 11 अक्टूबर, 2008 को खोल दिया गया और इस सेक्शन में रेलगाड़ी की शुरुआत हुई। माझोम-बारामूला रेल खंड के 35 कि.मी. रेल खंड को दिनांक 14 फरवरी, 2009 को खोला गया और रेलगाड़ी चलनी शुरू हुई। पीर पंजाल सुरंग की तरफ अनंतनाग-काजीगुंड रेलखंड के 18 कि.मी. खंड को दिनांक 28 अक्टूबर, 2009 को खोला गया और रेलगाड़ी चलनी शुरू हुई। बनिहाल-काजीगुंड रेल खंड के 18 कि.मी. खंड को दिनांक 26 जून, 2013 को खोला गया तथा इसी के साथ ही सबसे लंबी रेल सुरंग, पीर पंजाल को भी खोल दिया गया और रेलगाड़ी चलनी शुरू हुई।

बनिहाल-खड़ी-सुम्बड़-संगलदान सेक्शन वाले 48 कि.मी. खंड को दिनांक 20 फरवरी, 2024 को खोला गया है और इसी के साथ देश की सबसे लंबी रेल सुरंग T-50 भी खोल दी गई। इसी के साथ इस सेक्शन में रेलगाड़ी चलनी शुरू हुई। संगलदान और रियासी स्टेशन के बीच की रेल लाइन को कश्मीर में हो रहे चुनाव के बाद मतलब अक्टूबर 2024 में यात्री रेलगाड़ी संचालन के लिए खोल दिया जाएगा। इस खंड में ही चिनाब रेल पुल स्थित है। इस खंड में स्थित रेल स्टेशन के नाम संगलदान, सवालकोट, दुग्गा, बक्कल और रियासी हैं। इस सेक्शन का सभी कार्य पूरा हो चुका है और अब उद्घाटन के इंतजार में है। इसके बाद रियासी से कटरा तक का एक सेक्शन खुलना बाकी रह जाएगा और यह भी दिसंबर 2024 के अंत में खुल जाने की संभावना है और इसी के साथ ही अंजी खेड़ रेल पुल भी खुल जाएगा। इस सेक्शन में कटरा के पास एक सुरंग का निर्माण कार्य चल रहा है। सुरंग में पानी का लीकेज और कमजोर चट्टान होने के कारण सुरंग की खुदाई पर यह रेत या मिट्टी की तरह गिरने लगता है, जिसके कारण इसके निर्माण में देरी हो रही है। इसके खुलने के साथ ही कश्मीर घाटी रेलवे, पूरे भारतीय रेल से जुड़ जाएगी।

रेलवे स्टेशनों का रिकार्ड- कश्मीर घाटी के कुल 23 रेलवे स्टेशन की समुद्र तल से ऊंचाई (MSL लेवेल) 1,000 मीटर से अधिक है। इस हिसाब से अगर देखा जाए तो बड़ी लाइन मतलब BG के यह 23 स्टेशन देश के बड़ी रेल लाइन के सबसे ऊँचे स्टेशन हुए और उसके बाद कश्मीर घाटी रेलवे को छोड़कर, देश के बाकी रेलवे का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन चिकमंगलुरु का 24 वां स्थान और शिमलीगुड़ा स्टाइऑन का 25वाँ स्थान हुआ। चूंकि निकट भविष्य में ज्यादा ऊंचाई की अभी कोई रेलवे लाइन नहीं बन रही है तो यह सभी रिकार्ड आने वाले एक दशक तक टूटने वाले नहीं हैं। यहाँ तक कि अभी नई बन रही रेल लाइन के रांगपो स्टेशन और हिमाचल बिलासपुर रेलवे स्टेशन भी ये रिकार्ड नहीं तोड़ पाएंगे। दुनिया में ब्राड गेज सबसे ज्यादा भारतीय रेल में प्रचलित और संचालित है। कश्मीर घाटी रेलवे के खुलते ही भारतीय रेल दिन प्रतिदिन अनेक नई ऊंचाइयों को प्राप्त करते हुए नए-नए रिकॉर्ड बनाती जा रही है। इसी कड़ी में अभी कुछ वर्ष पहले एक और नया नाम जुड़ गया था, वह था 'हिलर शाह आबाद' रेलवे स्टेशन। जो अब भारतीय रेल का बड़ी लाइन का सबसे अधिक ऊँचाई वाला रेलवे स्टेशन बन गया है, जिसकी ऊंचाई 1,753.922 मीटर है। कश्मीर घाटी रेलवे में 1700 मीटर से ऊंचे 3 स्टेशन, 1,600 मीटर से ऊंचे 2 स्टेशन और 1,500 मीटर से ऊंचे 15 स्टेशन हैं। जबकि 1,400, 1,200, 1,000 मीटर से ऊंचे एक-एक स्टेशन हैं।

रेल पुलों का रिकार्ड- कश्मीर घाटी रेलवे का कटरा-बनिहाल खंड, सबसे जटिल रेलवे खंड है तो बड़े और जटिल रेल पुल भी इसी खंड में हैं। इस खंड में कुल 51 रेल पुल हैं। दुनिया में सबसे ऊँचा आर्च रेल पुल, चिनाब रेल पुल रियासी जिले में बक्कल और दुग्गा स्टेशन के बीच स्थित है। यह पुल चिनाब नदी पर 359 मीटर (1,178 फीट) की ऊंचाई पर बना हुआ है। इसके नाम पर कई विश्व रिकार्ड हैं। यह दुनिया का सबसे ऊंचा आर्च रेल पुल है। सभी प्रकार के रेल पुलों में यह यह दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा रेल पुल है। चिनाब रेल पुल की लंबाई 1,315 मीटर है। चिनाब रेल पुल, दुनिया का तीसरा सबसे लंबा रेल पुल है। यह दुनिया का सबसे चौड़ा रेल पुल भी है, क्योंकि भारतीय रेल के ब्राड गेज की चौड़ाई दुनिया में रेगुलर चलने वाली ट्रेन में सबसे चौड़ी गेज है। इस पुल के मुख्य मेहराब के निर्माण कार्य की शुरुआत नवंबर 2017 में की गयी थी। अप्रैल 2021 में चिनाब रेल पुल का आर्च पूरा हो गया और पूरा रेल पुल अगस्त 2022 में पूरा हो गया था और दिनांक 15 अगस्त, 2022 को इसका उद्घाटन कर दिया गया था। चिनाब रेल पुल एक स्टील और कंक्रीट का आर्च पुल है। इसके डेक की ऊंचाई, नदी तल से ऊपर 359 मीटर है। नदी की सतह से यह 322 मीटर ऊपर है। यह सिंगल रेल लाइन वाला रेल पुल है। भारतीय रेल का केबिल आधारित पहला रेल पुल, अंजी खड्ड रेल पुल है। अंजी खड्ड रेल पुल अब बनकर तैयार हो गया है। इस पुल का निर्माण 11 महीने में पूरा कर लिया गया था। इस पुल में लगे केबल की कुल लंबाई को जोड़ने पर इसकी लंबाई 653 कि.मी. हो जाती है। इस पुल की लंबाई 725 मीटर है, जिसमें 473 मीटर का ब्रिज केबल के सहारे है। यह पुल नदी के तल से 331 मीटर ऊपर है। यह पुल इसलिए बेहद महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय रेल का केबिल आधारित पहला रेल पुल है और इसके बन जाने से कश्मीर घाटी को बाकी देश से जोड़ना अब बहुत आसान हो गया है। अंजी खड्ड पुल उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना के सबसे महत्त्वपूर्ण भागों में शामिल हैं। यह एक तरफ सुरंग टी-2 (कटरा छोर) और दूसरी तरफ सुरंग टी-3 (रियासी छोर) को जोड़ता है। यह चिनाब की सहायक नदी अंजी के ऊपर बनाया गया है। इस लिए इसका नाम अंजी खड्ड रेल पुल है। केबिल आधारित रेल पुलों में यह दुनिया का सबसे ऊंचा रेल पुल है।



रेल लाइन का रिकार्ड- कश्मीर घाटी रेलवे में जब सब कुछ अनेकों विशेषताओं और रिकॉर्ड से भरा हुआ है तो स्वाभाविक रूप से यहाँ बनाई गई रेल लाइन की भी अनेकों विशेषताएं और तकनीकी पहलू हैं। स्वाभाविक रूप से यह रेल लाइन कश्मीर घाटी रेलवे को और मजबूत करती है और रेलगाड़ियों को निर्धारित गति से चलने के लिए मजबूत बनाती है। विशेषकर रेल सुरंग में और रेल पुल पर भी रेल लाइन को और ज्यादा मजबूत बनाने की आवश्यकता होती है और उस आवश्यकता को यहाँ पर पूरा किया गया है। रेल लाइन को इस तरह बनाया गया है कि रूलिंग ग्रेडियंट कम से कम रहे, जिससे कि रेलगाड़ी को चढ़ाई में दिक्कत न होने पाए। रेलगाड़ी के पीछे बैकिंग पॉवर या इंजन लगाने की जरूरत ना रहे। रेल लाइन में कंटीन्यूअस वेल्डेड रेल लाइन को कंक्रीट स्लीपर पर लगाया गया है। ट्रैक को रेलगाड़ी की अधिकतम गति 100 कि.मी. प्रति घंटे तक के लिए फिट बनाया गया है। भविष्य में डबल रेल लाइन बन सके इस हिसाब से रेल पुल पर जगह रखते हुए ट्रैक बिछाया गया है। कश्मीर घाटी में दोनों तरह की रेल लाइन बनाई गई है। पहली परंपरागत या प्रचलित रेल लाइन, जो कि पूरे देश में बनाई गई है। मतलब वह रेल लाइन जहाँ मजबूत मिट्टी के ऊपर पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े रखे जाते हैं। जिसे बैलास्ट कहते हैं और फिर उसके ऊपर सीमेंट कंक्रीट के बने स्लीपर रखे जाते हैं। फिर स्लीपर के ऊपर रेल लाइन बिछाई जाती है। फिर रेल लाइन को कई फिटिंग के द्वारा स्लीपर से जोड़ दिया जाता है। यह हमारी परंपरागत रेल

लाइन है लेकिन दूसरी वाली रेल लाइन, बैलास्ट लेस ट्रैक वाली रेल लाइन है, जिसमें बैलास्ट की जगह पर सीमेंट कंक्रीट वाली पक्की सतह या बेड बनाई जाती है और उस पक्की सतह पर स्लीपर रखा जाता है और फिर उस स्लीपर पर रेल लाइन बिछाई जाती है। इस तरह की रेल लाइन को कटरा से बनिहाल तक के सेक्शन में बनाया गया है। यह कुल 30 कि.मी. लंबा ट्रैक है। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। कुछ सुरंगों में भी बैलास्ट लेस ट्रैक बनाया गया है। कुछ रेल पुल में कंटिन्यूअस कंपोजिट स्टील गर्डर का उपयोग किया गया है। वास्तव में बैलास्ट लेस ट्रैक, वह ट्रैक होता है जो परंपरागत रेलवे ट्रैक से अलग होता है और इसके ट्रैक को सीमेंट या एस्फाल्ट वाले फ्लोर पर बिछाया जाता है। इसलिए इसे एस्फाल्ट ट्रैक भी कहते हैं।



रेल सुरंगों का रिकार्ड- कश्मीर घाटी रेलवे में लंबी-लंबी रेल सुरंगों का अनोखा रिकार्ड बन गया है। कश्मीर घाटी रेलवे में सुरंग की लंबाई की जानकारी बहुत रोचक है। ऊधमपुर से कटरा के बीच कुल 10 रेल सुरंग हैं जबकि कटरा से बनिहाल के बीच कुल 25 सुरंग हैं। साथ ही साथ कई स्किप या सर्विस टनल भी बनाई गई हैं, जिसका उपयोग आपातकालीन स्थिति में या रेल लाइन अनुरक्षण स्टाफ को आने-जाने के लिए बनाया गया है। अभी कुछ माह पहले तक सभी सुरंगों का नंबर उनके कि.मी. में स्थित होने के अनुसार रखा गया था लेकिन अब सुरंग का लोकेशन निश्चित हो गया है तो सभी की संख्या संशोधित कर दी गई है। केवल पीरपंजाल को अभी भी उसके लोकेशन के आधार पर रहने दिया गया है। पीरपंजाल सुरंग, 80वें कि.मी. के लोकेशन पर है। इसलिए उसका नाम अभी भी सुरंग संख्या-80 है। चूंकि कश्मीर घाटी रेलवे की शुरुआत ऊधमपुर से होती है तो ऊधमपुर से पहले 20 सुरंग पहले से ही हैं तो ऊधमपुर से सुरंगों की संख्या की गिनती 21 से शुरू होती है। कश्मीर घाटी रेलवे में 5 कि.मी. से ज्यादा लंबी कुल 9 सुरंग हैं। इनकी लंबाई इस प्रकार है। सुरंग संख्या-34 की लंबाई-5,098.752 मीटर, सुरंग संख्या-36 की लंबाई-5,941.440 मीटर, सुरंग संख्या-43 की लंबाई-6,291.683 मीटर, सुरंग संख्या-52 की लंबाई-8,610.207 मीटर, सुरंग संख्या-42 की लंबाई-9,274.000 मीटर, सुरंग संख्या-49 की लंबाई-10,178.322 मीटर, सुरंग संख्या-44 की लंबाई-11,130.398 मीटर, सुरंग संख्या-50 की लंबाई-12774.874 मीटर, सुरंग संख्या-80 की लंबाई-11,215.000 मीटर है।

देश की सबसे लंबी रेल सुरंग T-50 रेल सुरंग- T-50 रेल सुरंग, अब देश की सबसे लंबी रेल सुरंग बन गई है, इसने देश की सबसे लंबी रेल सुरंग पीर पंजाल के रिकार्ड को दिनांक 20 फरवरी, 2024 को तोड़ दिया है। T-50 सुरंग, कश्मीर घाटी रेलवे के बाकी बचे खंड कटरा-बनिहाल रेल खंड में बनी है। कटरा-बनिहाल रेल खंड, 111 कि.मी. लंबा है। T- मतलब टनल और 50 का मतलब सुरंग संख्या-50, वास्तव में कटरा से बनिहाल वाला रूट, कश्मीर रेलवे का सबसे जटिल या क्रिटिकल हिस्सा है। अनेक पहाड़ी, अनेक नदी या घाटी इस रूट को जटिल बनाते हैं। सुरंग T-50 की लंबाई 12.775 कि.मी. है और इसे फरवरी 2022 में एक सिरे से दूसरे सिरे तक पत्थर तोड़कर खोल दिया गया था। यह सुरंग सुम्बड और खड़ी स्टेशन के बीच बनी है। इसके नजदीक की सुरंग संख्या-49 की लंबाई 10.178 कि.मी. है। अभी दिनांक 19 फरवरी, 2024 तक देश में भारतीय रेल की सबसे लंबी रेल सुरंग पीर पंजाल रेलवे सुरंग थी लेकिन इसका यह रिकार्ड अभी दिनांक 20 फरवरी, 2024 को टूट गया है। अब यह दूसरे स्थान पर आ गयी है। देश में अधिकतर लंबी रेल सुरंगे जम्मू-ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल खंड में स्थित हैं। कश्मीर घाटी में बड़े सुरंग के साथ कुल 8 एस्केप सुरंग भी बनाई गई हैं। एस्केप सुरंग वह सुरंग होती है जो मुख्य रेल सुरंग के साथ बनी दूसरी सुरंग होती है लेकिन इसमें रेलवे लाइन नहीं बनाई गई होती है। इसे एस्केप सुरंग के अलावा सर्विस टनल या संरक्षा टनल या स्किप सुरंग भी कहते हैं। आपातकालीन परिस्थितियों में आने जाने और राहत कार्यों के लिए इस तरह के एस्केप टनल का निर्माण किया जाता है। कश्मीर घाटी रेलवे की सबसे लंबी एस्केप टनल, T-50 रेल सुरंग के साथ बनी हुई है। T-50 सुरंग की लंबाई 12.775 कि.मी. लंबी है जबकि इसके साथ बनी एस्केप सुरंग की लंबाई 12.895 कि.मी. लंबी है। पीर पंजाल रेल सुरंग के साथ एस्केप सुरंग नहीं बनाई गई है बल्कि पीर पंजाल रेल सुरंग के अंदर सीमेंट कंक्रीट वाला एक चौड़ा रास्ता या पाथ वे बनाया गया है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने में रेलवे स्टेशनों का रिकार्ड- कश्मीर घाटी का सभी क्षेत्र अलग-अलग तरह की प्रकृति की आपदाओं से भरा हुआ संभावित क्षेत्र है। मतलब यह एक कठिन जटिल और प्राकृतिक आपदाओं से भरी हुई रेलवे लाइन है। ऐसे में कश्मीर घाटी रेलवे का हर एक क्षेत्र का अपना अलग-अलग आपदा क्षेत्र है। इन सब से बचाव के लिए रेलवे ने बहुत सारी आधुनिक चीजों से सभी संरचनाओं को निर्मित किया है। इसलिए कहीं किसी दिक्कत या डर की कोई संभावना नहीं है लेकिन प्राकृतिक आपदाओं से जो क्षेत्र जिस प्रकार से जुड़े हुए हैं, आपदा में संरक्षा व्यवस्था के लिए बनिहाल स्टेशन पर एसपीएआरएमवी (SPARMV) उपलब्ध कराई गई है, जबकि कटरा में ART और

ARME उपलब्ध कराई गई है। बडगाम में ART उपलब्ध कराई गई है। जबकि जम्मूतवी, उधमपुर, कटरा और बडगाम में ARME-II उपलब्ध कराई गई है। टनल राहत ट्रेन या टनल रेस्क्यू ट्रेन एक ऐसी ट्रेन है जो सुरंग में किसी असामान्य घटना या आपातकालीन स्थिति के लिए उपयोग होती है। इसे बनिहाल और कटरा में स्थापित किया जा रहा है। इस सेक्शन का हिस्सा, भूकंप रेंज जोन-4 और 5 में आता है। भूस्खलन-ज्यादा, जंगली आग-ज्यादा, खतरनाक हवा-ज्यादा या मध्यम, वर्षा-बहुत ज्यादा या मध्यम, विभिन्न प्रकार के खतरा रेंज-बहुत ज्यादा वाली घटनाओं के रेंज में आते हैं।

कश्मीर घाटी में रेलगाड़ी चलने से वहाँ काफी प्रगति होगी और वहाँ के लोगों को खुशियों की सौगात मिलेगी-कश्मीर घाटी रेलवे में रेलवे की शुरुआत से पूरे कश्मीर को और साथ ही साथ देश के सभी हिस्सों को बहुत ज्यादा फायदा पहुँचने वाला है। देश से और विश्व से पर्यटकों का एक बहुत बड़ा समूह नियमित रूप से पर्यटन यात्रा के लिए कश्मीर जाने लगेगा, जिससे कश्मीर के लोगों को होटल खोलने, टूरिस्ट के लिए गाईड का काम करने, पर्यटकों को घुमाने के लिए टैक्सी चलाने का बेहतर रोजगार मिलेगा। पर्यटक लोग जाएंगे तो स्वाभाविक रूप से बहुत सारी खरीदारी करेंगे, जिससे कश्मीर के लोगों को फायदा होगा। पर्यटकों के बाद फिल्मों में रेलगाड़ियों की शूटिंग करने के लिए फिल्मों के निर्माता लोग कश्मीर में आएंगे और साथ ही साथ फिल्मों की शूटिंग का पुराना दौर कश्मीर घाटी में शुरू हो जाएगा। दूसरा सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि वहाँ के लोग जो भी फल फूल या सूखा फल पैदा करते हैं। उन सभी को रेलगाड़ी द्वारा बहुत आसानी से और सस्ते दाम पर पूरे देश के किसी भी कोने में भेजने में बहुत आसानी हो जाएगी। रेलगाड़ियाँ चलने से कश्मीर घाटी के युवकों की रेलवे में नौकरी लगने की संभावना बढ़ जाएगी। देश में सबसे बड़ा फायदा सैनिकों को होगा। अभी सैनिक सड़क मार्ग से कश्मीर घाटी के अंतिम सिरे तक जाते थे और उनके हथियार, टैंक, ट्रक इत्यादि सड़क मार्ग से जाते थे, जिसके कारण काफी ईंधन की खपत होती थी और समय भी काफी लगता था लेकिन अब रेलगाड़ी चलने से सैनिकों का यह सब सामान, मालगाड़ी से बहुत ही आसानी से कश्मीर के अंतिम सिरे तक मतलब बारामूला तक पहुँचाया जा सकता है। रेलवे को भी बहुत फायदा होगा। वह अपनी ट्रेन बारामूला तक सीधे चला सकेगी और काफी पर्यटक लोग आएंगे और जाएंगे, तो स्वाभाविक रूप से इससे रेलवे को भी काफी फायदा होगा। सब मिला कर हम कह सकते हैं कि कश्मीर में रेलवे की शुरुआत होने से पूरे देश और पूरे भारतीय समाज को बहुत बड़ा फायदा होने वाला है। कश्मीर घाटी में रेलवे लाइन बनना एक बहुत ही असंभव कार्य माना जा रहा था, क्योंकि यह बहुत ही जटिल और खतरनाक पहाड़ी और घाटी से होकर बनाई गई है। स्वाभाविक रूप से देश के लोगों का सैकड़ों वर्ष का पुराना सपना अब साकार होने वाला है।■

रेल पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा
विगत 68 वर्षों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

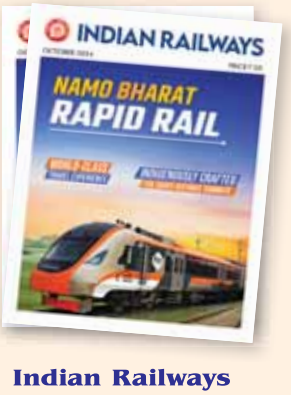
अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें



Indian Railways
(English)

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

दरें एवं शर्तें लागू

लोक जीवन और शिक्षा

प्रेमपाल शर्मा

बात फिर वहीं से शुरू करनी पड़ेगी यानी अपनी भाषा मातृभाषा में शिक्षा देने की बात, जिसकी वकालत दुनिया भर के शिक्षाविद, राजनेता स्टेट्समैन करते रहे हैं। अपने देश में महात्मा गांधी रवींद्रनाथ टैगोर ने भी बार-बार इस बात को कहा है। शिक्षा का अर्थ जीवन को समझना है और जीवन कहां होता है? जहाँ आप रहते हैं! उस लोक में उन लोगों में उनके रीति रिवाज काम धंधे, पूरे परिवेश में उनके जीवन के हर पहलू में तो यह सब संभव उन लोगों की अपनी भाषा से ही संभव है जिसे हम मातृभाषा कह सकते हैं। लोक जीवन यदि समा सकता है तो उसी भाषा में और इसीलिए जिस शिक्षा की हम बात करते हैं उस समाज को बेहतर समझने के लिए। उसको बेहतर बनाने के लिए और यह तभी संभव है जब इन दोनों में कोई फासला ना हो। वर्ष 2005 के एनसीएफ में जो डॉक्यूमेंट आया उसमें बार-बार यही बात रेखांकित की गई है कि स्कूल की दीवारों के अंदर और बाहर की दुनिया के परिवेश में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। कोई फासला नहीं होना चाहिए। यह कि.मी. और मीटर के पैमाने से नहीं, उनका इशारा है जो बाहर की दुनिया लोक है वह कहीं ना कहीं स्कूल के पाठ्यक्रम, पढ़ने की भाषा से जुदा नहीं होना चाहिए।

मान लीजिए अगर उत्तराखंड के कुमायूं क्षेत्र में कोई स्कूल है तो उस स्कूल में उन अध्यापकों की भाषा उन बच्चों की भाषा बोली, जिन गाँव से भी आते हैं जिस जीवन कृषि व्यापार व्यवसाय से भी जुड़े हुए हैं, जितनी नजदीक होगी, बच्चों के लिए स्कूल उतना ही आनंद की जगह बनता जाएगा और सिर्फ आनंद की जगह नहीं ऐसी शिक्षा उनकी रचनात्मकता को भी आगे बढ़ाएगी। वह हंसते-हंसते पढ़ेंगे! एक तनाव से नहीं गुजरेंगे जो अंग्रेजी या किसी दूसरे दबाव में उन्हें करना पड़ता है। और कई बार डिप्रेशन आत्महत्या की खबरें भी विदेशी भाषा में पढ़ने के दबाव में सुनने को मिलती हैं।

आप दुनिया के नक्शे पर नजर डालिए! जो देश, जो समाज विज्ञान साहित्य से लेकर कला और अपने रोजाना के जीवन में जितना बेहतर कर रहे हैं इसका कारण सिर्फ उनकी शिक्षा और समाज के साथ उनका परस्पर जुड़ाव कहा जाएगा।

मैं अपनी बात को अपने एक और हालिया निजी अनुभव को जोड़कर कहना चाहूँगा। इन शब्दों को लिखते वक्त में बेंगलूरु में हूँ। कुछ वर्षों से कुछ महीनों के लिए मुझे बेंगलूरु में रहना पड़ता है। मेरा नाती उर्फ ग्रैंडसन उर्फ पौत्र 5 साल का है। जैसा कि फैशन है या नई शहरी सभ्यता के दबाव हैं उसे 3 साल की उम्र से पड़ोस के पहले प्ले स्कूल में दाखिल किया गया और अब एक नियमित नेशनल पब्लिक स्कूल के अपर केजी में है। प्ले स्कूल में भी सभी छोटी-मोटी किताब जैसी कॉपियाँ और कॉपियाँ जैसी किताब अंग्रेजी में ही थीं और अभी भी लोअर में और अपर केजी में भी। शुरू से ही अंग्रेजी के मिजाज के अनुरूप कैपिटल अक्षरों की प्रैक्टिस कराई गई। फिर स्मॉल अक्षरों की फिर उनकी मिले-जुले रूप, वॉवेल्स, उनके प्रयोग, यह चल रहा है मोटा-मोटी दो-तीन साल से!

क्योंकि घर पर हम सब हिंदी में ही बात करते हैं इसलिए इस 5 वर्षीय बच्चे की पहली भाषा हिंदी बन गई है। घर पर हिंदी है स्कूल में अंग्रेजी। यानी घर और स्कूल के परिवेश में अंतर है। चलो, इसे छोड़ भी दिया जाए क्योंकि बेंगलूरु जैसे महानगर में जो एक कॉस्मापॉलिटन है। बहुत खुशी की बात है कि जिस सोसाइटी में हम रहते हैं उसमें हर प्रांत के लोग हैं। तमिल, मलयाली, आंध्र, महाराष्ट्र, से लेकर सभी हिंदी प्रदेशों के। घरों में काम करने वाली ज्यादातर बंगाल, उड़ीसा से, सिक्योरिटी वाले विशेष कर असम, उड़ीसा के, कारपेंटर अक्सर राजस्थान वाले आते हैं। यह सब भी उस परिवेश का हिस्सा हैं। उनसे जो बातचीत हुई उससे समझ में आया कि केवल हिंदी ही उन्हें इस शहर में रहने में समर्थ बनाती है। क्योंकि अंग्रेजी वे मजदूर सीख नहीं सकते और कन्नड़ सीखने की कोशिश के बावजूद भी उतनी नहीं समझ पाए। कुछ शब्दों को छोड़कर बड़ा अच्छा अनुभव लगा जब मेरे घर पर काम करने वाली एक मुसलमान महिला को बहुत अच्छी हिंदी बोलते हुए देखा और मैंने उससे पूछा आपकी भाषा क्या है? तो उसने कहा उर्दू। उसने कन्नड़ नहीं बताया! जबकि वह कर्नाटक के एक गाँव की रहने वाली है और वहीं की मूल निवासी है, जिसको हम हिंदी कहते हैं यहाँ के मेरे मुसलमान भाई उसे उर्दू कहते हैं। बहुत पते की बात मुझे लगी कि यदि कर्नाटक में हिंदी जिंदा है तो उन मुसलमानों की वजह से जिसकी सिर्फ लिपि उर्दू है बाकी सब कुछ उत्तर भारत जैसा है। भाषा के मामले में इसलिए एक निष्कर्ष मेरा यह है कि बेंगलूरु जैसे शहर में सबसे ज्यादा बोली समझे जाने वाली भाषा कन्नड़ है उसके बाद हिंदी हिंदुस्तानी, जिसमें सभी देश की भाषाओं के शब्द हैं। अंग्रेजी सिर्फ उन आईटी इंजीनियर और उनकी पत्नी तक सीमित है जो नए दौर में पढ़े हैं। उनके माता-पिता भी अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में ही बोलकर उठते-बैठते हैं।

खैर, मैं बच्चों को हिंदी सिखाने की बात पर आता हूँ। सुखद अनुभव हुए हैं बच्चों को जब अपने आसपास के शब्दों को अपनी दुनिया को लिखना होता है, तो उनमें एक अलग ऊर्जा महसूस होती है! वर्णमाला सीखने के बाद जैसे ही शब्दों को जोड़ने की शुरुआत हुई बच्चों का उत्साह बढ़ता गया। वे अपनी ओर से ही

उन सभी शब्दों को लिखने-बोलने की कोशिश करने लगे जिनका प्रयोग रोज उनके जीवन में होता है। अंग्रेजी का होमवर्क करते हुए ऐसा उत्साह उनके चेहरे पर कभी नहीं आया बल्कि रोते हुए से अंग्रेजी लिखते रहे हैं।

कितने ही शब्द हैं। बिस्तर, दरी, बर्तन, साबुन, नौकर, कामवाली, सब्जी सारे फलों के नाम। बोलचाल की बातें। जीवन की या कहें लोक जीवन से सभी के सभी शब्द और शैलियां। आधे शब्दों के प्रयोग सीखते वक्त उसने अपनी ओर से ही टट्टू मट्टू लट्टू पट्टू जाने कितने ही शब्द खुद बना डाले और तो और छोटी-मोटी लय वाली कविताएं भी क्योंकि हिंदी में कैपिटल और स्मॉल का चक्कर नहीं होता तो उसके अक्षर लिखने का कॉन्फिडेंस भी देखने लायक रहा है। जिन कैपिटल और स्माल लेटर्स को 2 साल में भी अच्छे ढंग से नहीं लिख पाया और कभी एक टीचर उनको कर्व से लिखने के लिए कहती है तो दूसरी टीचर कुछ और ढंग से। होमवर्क नाम की जो चीज मिलती है उसे वह बच्चा समझ ही नहीं सकता क्योंकि वह अंग्रेजी में लिखा होता है कि क्या करना है। हर काम में उसकी उंगलियाँ कांपती रहती हैं। और तभी बार-बार गांधी जी की याद आते हैं कि 'हम अपने जीवन के कितने कीमती वर्ष और बच्चों का बचपन विदेशी भाषा को सिखाने में बर्बाद कर देते हैं।'

यदि इसे अतिश्योक्ति नहीं माना जाए तो 3 महीने में लगभग आधा घंटा रोज सीखने से वह अक्षर जोड़कर पढ़ने लगा है और एक उत्साह के साथ। गणेश पूजा के समय उसने वे धार्मिक किताबें भी उलटनी-पलटनी शुरू कर दीं, जिसमें गणेश, रामलीला, रावण, राक्षस, सीता, हनुमान, बंदर, लंका जैसे शब्द आते थे। इसे जीवन का बहुत सुखद अनुभव कहूँगा।

लेकिन किसी दूसरे प्रांत में हिंदी सीखने में कुछ बुनियादी कमियों की तरफ भी इशारा करना चाहूँगा। जब से सरकारी स्कूल कम हुए हैं और पब्लिक स्कूल बढ़ते गए हैं तब से बच्चों के बड़े बड़े बस्ते की सब किताबें-कॉपी आदि उनके स्कूल से ही मिलती हैं। नतीजा नौजवान पीढ़ी की सबसे बड़ी संख्या बेंगलूरु में रहने और स्कूलों की संख्या भी देश में आनुपातिक रूप से सबसे ज्यादा होने के बावजूद उन स्कूलों के आसपास मुझे किताबों की कोई दुकान ढूंढ कर भी नहीं मिलती। उसका बहुत बड़ा कारण है कि जो कुछ किताबें स्कूल से मिलती हैं उन्हें ही उनके व्यस्त माता-पिता और स्कूल वालों ने पर्याप्त मान लिया है। इसलिए यदि कोई किताबों की दुकान खोलना भी चाहे विशेष कर स्कूली बच्चों की, तो उसका चलना लगभग असंभव है। इसलिए स्कूल के बच्चों की शुरुआत में हिंदी सीखने की वही प्राथमिक किताबें यहाँ उपलब्ध हैं जो उत्तर भारत में पाई जाती हैं। बाहर से देखने पर इसमें कभी कोई बुराई मुझे पहले नजर नहीं आई, जो अब इस अनुभव से गुजरने पर आई है।

मैं कुछ शब्दों से अपनी बात स्पष्ट करना चाहूँगा। एक अक्षर है! ठ से ठठेरा हम सब ने पढ़ा होगा था। टेरा यहाँ एक शब्द और भी है ठग। बच्चे का तुरंत प्रश्न होता है ठठेरा क्या होता है? ठग क्या होता है? ठठेरा शब्द के आगे एक चित्र में एक आदमी को कुछ बर्तन पर हथौड़ा मारते हुए दिखाया गया है और ठग की भी एक सिर पर साफा बांधे धोती पहने। एक अलग परिवेश में रहने वाले बच्चों के लिए कितना मुश्किल है उसकी कल्पना करना। ठठेरा शब्द तो हमारी हिंदी पीढ़ी भी भूल चुकी है। बताइए वह क्या करता है? क्या कोई ठठेरा आपने हाल-फिलहाल में देखा? गाँव में जरूर इस शब्द को कभी-कभी प्रचलन में देखा होगा कि यह ठठेरों का मोहल्ला है। जबकि हकीकत यह है कि वे भी अब उस काम को छोड़ चुके हैं। वैसे ही ठग 21वीं सदी के बच्चों की समझ में मुश्किल से आएगा। यहाँ क्रिमिनल, साइबर क्राइम, डाकू, चोर, लुटेरा तो कुछ-कुछ समझ में आएगा ठग नहीं। वैसे ही ट से टमटम? अब कहीं कोई नहीं टमटम! जैसे च से चरखे हिंदी की किताबों में जिंदा है भी इसलिए कि गांधी जी का नाम कभी-कभी सुनाई दे जाता है। आजादी की लड़ाई आदि में उनको चरखे के सामने बैठे हुए। वरना शहरी बच्चों को किसी चरख के दर्शन करना आसान नहीं है। ओ के आगे ओखली लिखा हुआ है। क्या अब ओखली गाँव में भी बची है? मुश्किल है ज्यादातर मिक्सी हैं। मल्टी स्टोरी बिल्डिंग में रहने वाले बच्चों को ओखली समझना वाकई मुश्किल काम है। ए से ऐरावत? का विकल्प इन पाठ्यक्रम बनाने वालों को ढूंढना पड़ेगा। अक्सर ऐ के आगे एक हाथी और उसके ऊपर एक लाल पीला आसन बिछा होता है जो इंद्र के ऐरावत का बोध तो कम देता है एक सजे हुए हाथी का ज्यादा देता है। बच्चों ने कहा भी कि इस हाथी ने कुछ कपड़े पहने हुए हैं।

बड़ा ऊ से ऊंट उन्हें चिड़ियाघर में दिख जाता है पर ऊन के गुच्छा पर बच्चा फिर अटक गया। यह क्या होता है? वे दिन गए जब उनकी माँ, बहन, चाची स्वेटर बुनते हुए चारों तरफ दिख जाती थीं। गाँव के बच्चों के लिए तो यह सहज होगा, लेकिन पूरे देश में हिंदी सीखने वालों के लिए विशेष कर शहरी बच्चों के लिए। द से दवात भी गले नहीं उतरती। दवात भी किसी शहरी के घर में नहीं है। अब तो गाँव में भी मुश्किल है क्योंकि बाल पॉइंट ने स्कूली बच्चों को भी दवात से मरहूम कर दिया है। ऐसे ही स से सर्कस म से मदारी। क्ष से क्षत्रिय भी लोक जीवन से लगभग गायब हो रहे हैं। क्षत्रिय तो मौजूदा भारत के संविधान में भी नहीं चलने वाला। क्षत्रिय के आगे एक तनी मुद्रा में सैनिक दिखाया जाता है। नहीं नहीं! यह नहीं चलेगा हमें बच्चों की हिंदी सीखने वाली इन सब किताबों में इन अक्षरों के आगे उनके जीवन आसपास की दुनिया से जुड़े हुए शब्दों को रखना पड़ेगा। यह उनकी कल्पनाशीलता उनकी समझ को बढ़ाने के लिए अनिवार्य है। फिर वह हिंदी से बोर नहीं होंगे। वे उतने ही उत्साह से हिंदी पढ़ेंगे! उनकी रचनात्मकता भी और खुलकर सामने आएगी।

किसान के बच्चे किसी व्यवसाय के बच्चे या दूसरे धंधों में लगे हुए बच्चों को जब अपने जीवन के शब्द शैली उनके प्रयोग देखने को मिलेंगे तो उनकी समझ में सौ गुना वृद्धि होती है। और शिक्षा का उद्देश्य एक समझ विकसित करना ही होता है। इसे लोक से से जोड़कर ही सार्थक किया जा सकता है।

हिंदी की इन पुस्तकों को बनाने वालों को अंग्रेजी की पुस्तकों से भी सीखने की जरूरत है। अच्छी बातें किसी से भी सीखी जा सकती हैं। हो सकता है 40 साल पहले अंग्रेजी में कुछ और लिखा जाता हो लेकिन अब अंग्रेजी की किताबों में पी से पिज्जा लिखा होता है। सी के आगे कई शब्द दिए होते हैं। कैमल, कैंडल, कैट। वैसे ही एच के सामने है hat, Hut हैंगर.. अंग्रेजी के हर अक्षर के आगे उन्होंने पांच शब्द दिए हुए हैं जिनमें से किसी के साथ तो वह अपने परिवेश के साथ तालमेल बैठा ही लेंगे। लेकिन हमारे यहाँ बड़ी छोटी इ से इमली और बड़ी ई से ईख जब से बोई गई है आज तक चली आ रही है। लगभग हर किताब में शाश्वत सत्य की तरह।

अंग्रेजी की किताबों में एक से एक सामग्री की विविधता सौंदर्य बोध चित्रांकन रंग कितने प्रभावी हैं कि बच्चे सहज ही आकर्षित होते जाते हैं। इसके बहुत सारे कारण हैं। जैसे अंग्रेजी में भविष्य ज्यादातर इस देश के सभी अमीरों को दिखता है। और ये हैं भी सभी शहरों में। और उनके स्कूलों में प्रभावी रूप से उपस्थित हैं। समझ सकते हैं कि देश की विविधता की एक-एक बड़ी तथाकथित इंटेलेक्चुअल जेनरेशन उन किताबों को बनाने और बेहतर करने में सक्रिय है। कम से कम किताबें तो वह अच्छी उपलब्ध करा ही रहे हैं। बच्चों की समझ में उस अनुपात में आना एक अलग विमर्श की बात है। इसके विपरीत है हिंदी की दुनिया। पुरु के अपने हाथियों से पीछे भागती हुई। अपने ही लोगों को कुचलते हुए अंग्रेजी के हाथी से। इसके उदाहरण आपको उत्तर भारत से लेकर दक्षिण तक सभी जगह मिल जाएंगे।

बेंगलूरु की जिस सोसाइटी की मैं बात कर रहा हूँ वहाँ हिंदी के प्रति सबसे कम प्यार आकर्षण है, तो बिहार, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के उन अमीर माँ-बाप और उनके बच्चों में। हिंदी के नाम से ही वे नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं मानो उनका गुलाम बनाने के लिए कहा जा रहा हो। जितने उत्साह से वे अंग्रेजी और उसके साथ फ्रेंच की तरफ बढ़ रहे हैं या दूसरी विदेशी भाषाओं की तरफ हिंदी के प्रति उतनी ही उनकी उदासीनता नजर आती है। उनके बच्चों में भी। उनको हिंदी की पत्रिकाएं किताब मुफ्त में भी दी जाएं, वे उसे भी लेना पसंद नहीं करते जैसे कोई भरे पेट का कुत्ता सूंघकर आगे बढ़ जाता है लगभग उनका व्यवहार ऐसा ही होता है। जबकि इसके विपरीत जो दक्षिण भारतीय हैं उनका व्यवहार हिंदी के प्रति ज्यादा उत्साही रहता है। पता नहीं यह कब बदलेगा क्योंकि नौकरियों में अंग्रेजी की प्राथमिकता ने पूरे शिक्षा समाज का मॉडल ही बदल दिया है।

उन अंग्रेजी की किताबों में लोक जीवन कहाँ से आएगा! जिनके लिखने वाले जो सिर्फ दो प्रतिशत होंगे और वह 98% देश की समस्या से दूर होते जा रहे हैं। वे इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और अंग्रेजी की उन किताबों, उनके स्थान, नक्शे से ज्यादा वाकिफ हैं बजाए हिंदी और उसके प्रदेश और उनके जीवन-से लगभग 100 वर्ष पहले रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी के पाठ्य पुस्तक, पाठ्यक्रम बड़ी मेहनत से तैयार किए थे। कर्नाटक में शिवराम कारथ जैसों ने भी वैसा ही काम किया। उससे भी ज्यादा। उनकी व्याकरण बनाई। पाठयक्रम शब्दों को बनाया और कन्नड़ अपने बूते पर उतनी ही समृद्ध भाषा बन चुकी है।

पिछले दिनों मौजूदा सरकार का भी कन्नड़ भाषा को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है जिसने कन्नड़ भाषा को पहली क्लास से ही पढ़ना अनिवार्य बना दिया है। इसका एक अच्छा पहलू यह है कि इस सोसाइटी में कन्नड़ सिखाने वाले बच्चों की ट्यूशन सबसे महंगे हो गए हैं। सरकार का अपनी भाषा के प्रति झुकाव कैसे पूरे माहौल को बदल देता है। इसे हिंदी विरोध नहीं माना जाए यह अपनी भाषाओं को बढ़ाने के लिए उसके लोक जीवन से जुड़ने के लिए बहुत अच्छा कदम माना जाएगा।।

बच्चों को हिंदी सिखाने के इस अनुभव के बहाने कुछ-कुछ समझ में आ रहा है कि देश की अगली पीढ़ी इस देश की समस्याओं को समझने में क्यों लगातार विफल होती जा रही है। ना उनको उसकी बोली, उसकी समस्याओं का अंदाजा, ना उन स्कूलों के शिक्षकों को। एक नकली दुनिया जड़ों से कटी हुई इस देश को नियंत्रित कर रही है। जब आप खुद ही नहीं समझेंगे तो दूसरे देश के बुद्धिजीवी अपनी समझ आपके ऊपर लाद देंगे और यह तो आत्मनिर्भर बने की तस्वीर नहीं है।

नए शिक्षा नीति 2020 में घोषित हुई है। 4 वर्ष से अधिक हो गए। प्राइमरी पाठ्यक्रम में अपनी भाषा में पढ़ने की बात भी बड़े जोर-शोर से की गई है, लेकिन अभी उसे जमीन पर उतरना बाकी है। समाज से उसके विज्ञान से जोड़ने की बात तो और भी दूर है। समाज का कर्तव्य है, जनता का भी, सरकार से इन मुद्दों पर जवाब माँगे। अपनी भाषा बोली को शामिल करने के लिए अपने क्षेत्र विशेष के नायक और उनकी समस्याओं को उस में पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए। बच्चों के लिए हिंदी की किताबें में विविधता भी लाने की जरूरत है सिर्फ यूरोप या अंग्रेजी की किताबें की नकल से काम नहीं चलने वाला। यदि उनका अनुवाद खराब होता है, तो वह और भी विकृत लगती है।

बच्चों को अपनी भाषा को पढ़ाने और उसके जीवन को समझने में आनंद तो आया ही 3 महीने में उसने उस अंग्रेजी से बेहतर लिखना पढ़ना सीख लिया है जिस पर अभी तक लाखों रुपये खर्च किए जा चुके हैं।

यह देश की ज्यादातर बच्चों और शिक्षा की हकीकत है। इतनी जल्दी अपनी भाषा में पढ़ना-लिखना सीखना, मेरी सफलता नहीं यह मनुष्य की प्राकृतिक समझ उसकी भाषा में पढ़ने की सफलता है और इस देश का विकास इसी रास्ते संभव है। अफसोस यही है की गांधी जी, लोहिया, दौलत सिंह कोठारी, प्रोफेसर यशपाल प्रोफेसर कृष्ण कुमार और सभी शिक्षा आयोग समितियाँ से लेकर नई शिक्षा नीति तक अपनी भाषा अपने परिवेश से जुड़ने की वकालत के बावजूद हम उसे जमीन पर लाने में असफल हुए हैं। लेकिन हमें इस यकीन के साथ आगे बढ़ना है कि हम सफल होंगे और इसी रास्ते देश की शिक्षा देश के विकास में अपनी भूमिका निभा सकती है।■

अपना ज्ञान टटोलें

1 **पहली नमो भारत रैपिड रेल किन दो शहरों को जोड़ती है ?**

(क) नागपुर-पुणे | (ख) वडोदरा-सूरत | (ग) भुज-अहमदाबाद | (घ) जबलपुर-भोपाल

2 **देश की पहली 20 कोच वाले वंदे भारत ट्रेन किस रूट पर चल रही है ?**

(क) आगरा कैंट-बनारस | (ख) वाराणसी-नई दिल्ली | (ग) कोल्हापुर-पुणे | (घ) नागपुर-सिकंदराबाद

3 **देश की पहली वंदे भारत मेट्रो ट्रेन को क्या नाम दिया गया है ?**

(क) नमो भारत रैपिड रेल | (ख) वंदे भारत मेट्रो | (ग) आत्मनिर्भर भारत मेट्रो | (घ) अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो

4 **दिनांक 2 सितम्बर, 2024 को कैबिनेट ने किस रेल लाइन को मंजूरी दी ?**

(क) भोपाल-उज्जैन | (ख) अहमदाबाद-मुंबई | (ग) पुणे-कोल्हापुर | (घ) मुंबई-इंदौर

5 **हाल ही में पश्चिम मध्य रेल के किस रेल खंड में कवच 4.0 स्थापित किया गया है।**

(क) घाटोली-नयागाँव रेलखंड | (ख) जबलपुर-कटनी | (ग) कोटा-सवाई माधोपुर खंड | (घ) मुरवारा-बीना रेलखंड

6 **येलहंका में स्थित रेल उत्पादन इकाई कौन-सी है ?**

(क) आर.डब्ल्यू.एफ. | (ख) आर.सी.एफ. | (ग) एम.सी.एफ. | (घ) आई.सी.एफ.

7 **रेलवे बोर्ड के प्रथम मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.इ.ओ.) का नाम बताएं ?**

(क) श्री सतीश कुमार | (ख) श्री अश्वनी लोहानी | (ग) श्री सुनित शर्मा | (घ) श्री विनोद कुमार यादव

8 **नेशनल रेल म्यूजियम किस शहर में स्थित है ?**

(क) प्रयागराज | (ख) लखनऊ | (ग) नई दिल्ली | (घ) कोलकाता

9 **कोई व्यक्ति कितने दिन पहले आरक्षित रेल टिकट बुक कर सकता है ?**

(क) 120 दिन | (ख) 60 दिन | (ग) 15 दिन | (घ) 45 दिन

10 **रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी पत्रिका 'इंडियन रेलवेज' किस वर्ष में प्रारंभ हुई थी ?**

(क) 2010 | (ख) 1956 | (ग) 2024 | (घ) 1853

2. (घ) 4. (ख) 6. (क) 8. (ग) 10. (घ)
1. (ग) 3. (क) 5. (ग) 7. (ख) 9. (क)

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिंदी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपने विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुँच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में)

नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी, आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें:

व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,

टेलीफोन : 011- 47845378, 23382531

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता
अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यू आर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ई-मैग्ज़ीन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-	10
एक प्रति (विशेषांक)		70	-	40
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263	130
	दो वर्ष	460	483	230
	तीन वर्ष	675	709	340
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210	100
	दो वर्ष	370	389	190
	तीन वर्ष	540	567	270
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313	---
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625	---

(सदस्यता शुल्क में वार्षिक विशेषांक भी शामिल है।)

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

पहचान पत्र संख्या (यदि रेल कर्मचारी है तो): ..... वैधता की तारीख .....

ऑफलाइन भुगतान का माध्यम

I) एम.ओ./आई.पी.ओ/डी.डी. व्यापार प्रबंधक के पक्ष में कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
II) नगद जमा कराने हेतू : कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेल) **bmpr310rb@gmail.com**

IRIS Certification
AAR M-1003
Daulat Ram ENGINEERING

PRIME MOVERS FOR RAIL, MINING & URBAN MOBILITY

- Traction Motors / Alternators
- Air Conditioners
- Cooling Fans / Blowers
- Dynamic Brake Resistors
- Pantographs
- E- Buses
- Auxiliary Generators



10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Distt. Raisen, Near Bhopal, 464993, India
+91 7480 350001 to 350030 +91 8889983336 info@daulatram.org www.daulatram.com

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY

50



PERFORMANCE ENGINEERING FOR RAIL & METRO BRAKE PIPING CONNECTIONS

Fluid Controls Private Limited has 50 years of experience in Engineering Connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS-ISO/TS 22163:2017), and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing, and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

- 50 YEARS OF HERITAGE
- IRIS & NABL CERTIFIED
- IN-HOUSE R&D
- OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
- APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS



+91-22-68238000 | railways@fluidcontrols.com | fluidcontrols.com

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2024-25-2026
आर.एन.आई रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
ISSN 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

Across Borders, Beyond Limits
Our CNC Wheel Lathes, a Symbol of Railway Excellence Worldwide


CNC Portal Wheel Lathe


CNC Underfloor Wheel Lathe


CNC Vertical Turning & Boring Lathe

Malaysia Sri Lanka Turkey Gabon India
France Thailand Ghana Senegal South Africa

hyt

HYT ENGINEERING COMPANY PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg, I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad, Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **ललित कुमार धनकड़** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स संदीप प्रेस, सी-105/2, नारायणा, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**